हर-हर महादेव

हमारा देश हमारा अभिमान

MPHIN36951
कुल पृष्ठ : 52, मूल्य : 50 रुपए
वर्ष 01, अंक 05 मासिक पत्रिका
नवंबर 2021

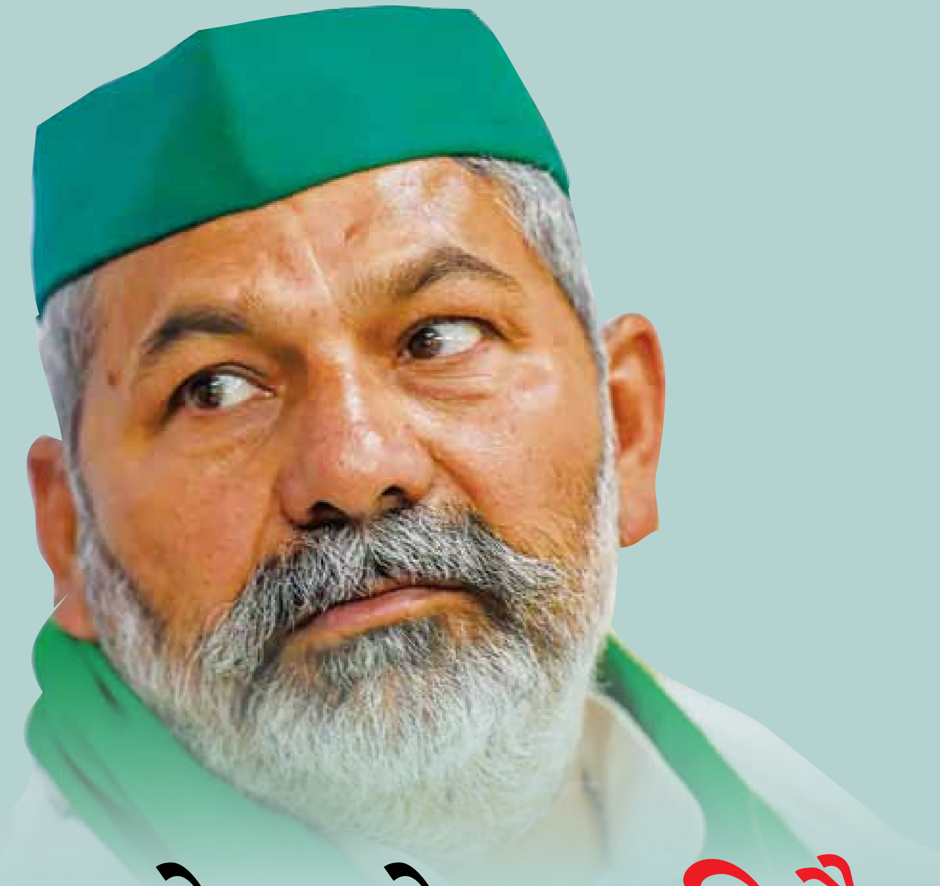

क्यों खामोश हो गए टिकैत?

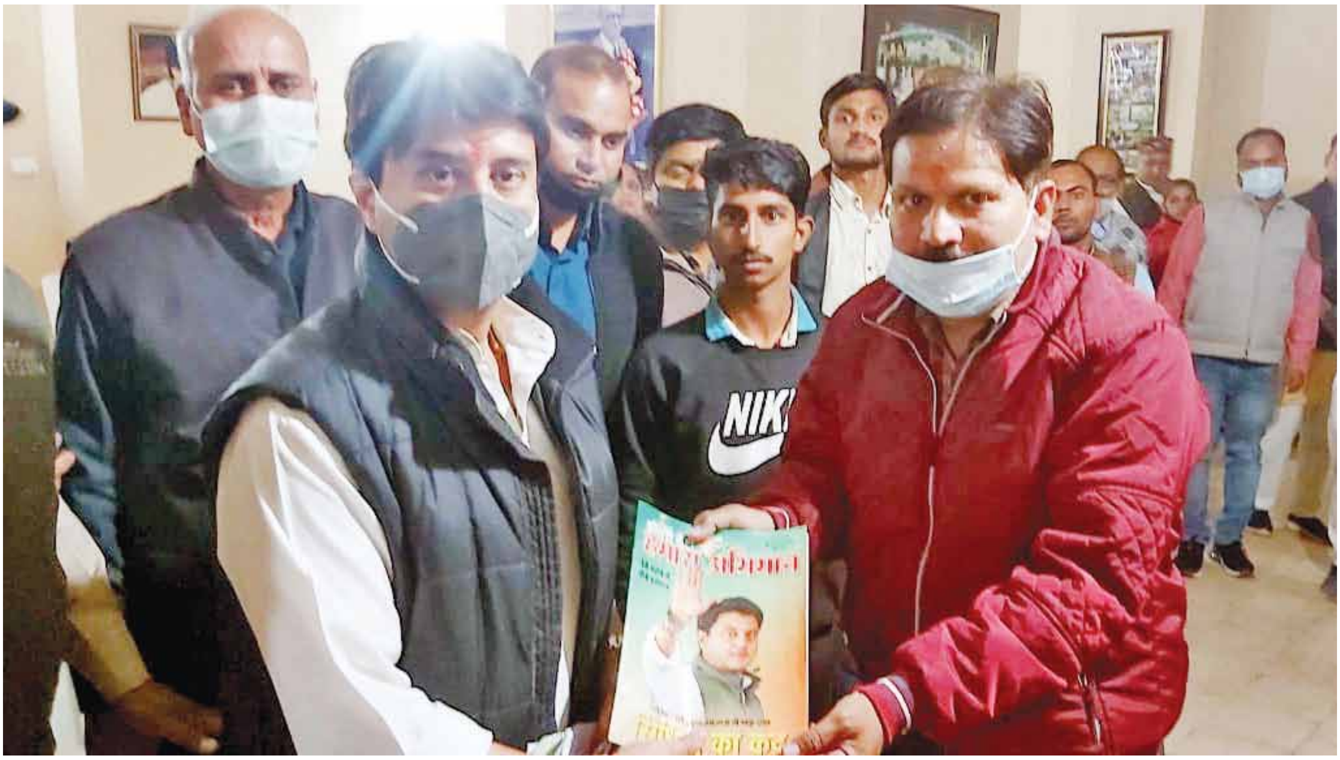

हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका के पिछले अंक की फ्रंट कवर स्टोरी की
केन्द्रीय मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया जी ने की प्रशंसा।

श्री पी के पांडे (आई. जी.सी आर.पी.एफ.
ग्वालियर) ने दिया साक्षात्कार

श्री मोहिन्दर कुमार डी.आई.जी., सीआरपीएफ
नीमच) से साक्षात्कार पर चर्चा

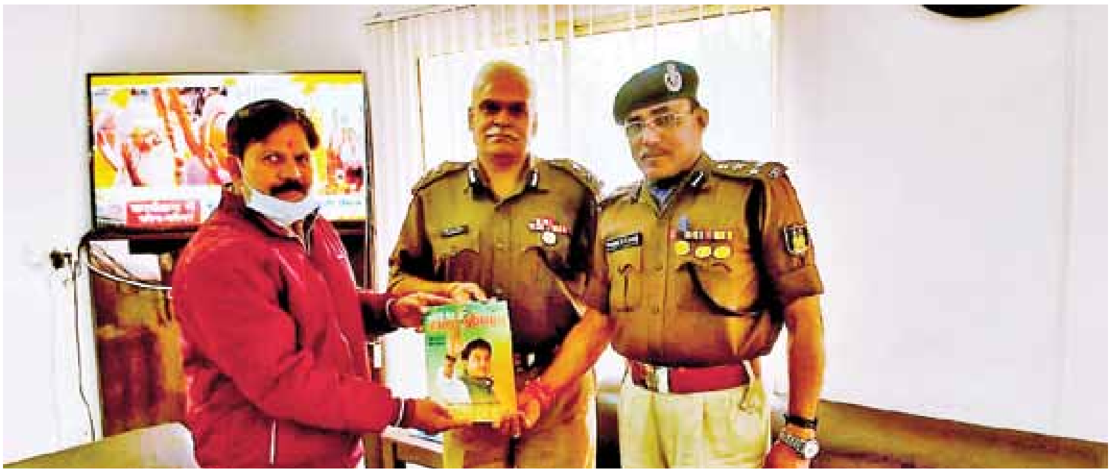

श्री पी के पांडे (आई. जी.सी आर.पी.एफ. ग्वालियर) ने दिया साक्षात्कार

हमारा देश
हमारा अभिमान

वरिष्ठ संरक्षक मंडल
- अनन्त श्री विभूषित श्रीमद जगद्गुरु श्री राम स्वरूपचार्य जी महाराज कामदगिरि पीठाधीश्वर चित्रकूट धाम
- श्री महामंडलेश्वर रामप्रिय दास
- श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर अनिरुद वन जी श्री धूमेस्वर धाम
- श्री डॉ. श्रीमन नारायण मिश्रा

संरक्षक मंडल
- श्री लोकेश चतुर्वेदी • श्री डॉ. दिनेश उपाध्याय
- श्री अरविंद जैन • श्री अरुण कांत शर्मा, महेश पुरोहित
- विनोद भारद्वाज, अधिवक्ता ग्वालियर हाईकोर्ट
- श्री मनोज भारद्वाज, अनिल जैन, निर्मल वासवानी

संपादक : मनोज चतुर्वेदी

पंकज दीक्षित : प्रमुख परामर्शदाता

विशेष संवाददाता
- रवि परिहार • रविकांत शर्मा

कानूनी सलाहकार
एडवोकेट अनिल शुक्ला शासकीय अधिवक्ता ग्वालियर हाईकोर्ट
एडवोकेट श्याम पाठक ग्वालियर हाई कोर्ट

ब्यूरो : अविनाश (उज्जैन संभाग)

छिंदवाड़ा ब्यूरो : जितेंद्र चौरे

मुम्बई ब्यूरो (महाराष्ट्र)
सचिंदर शर्मा (फ़िल्म डायरेक्टर)

ब्यूरो राजस्थान
सुभाष सोरल (फ़िल्म निर्माता) कोटा

ब्रजेश जैन- साक्षात्कार व्यवस्थापक और विज्ञापन संवाददाता इंदौर

संवाददाता : संदीप पाटिल, इंदौर

सलाहकार
- डॉ. सुनील शर्मा, नेत्र रोग विशेषज्ञ
- डॉ. मुकेश चतुर्वेदी, • डॉ. दिनेश प्रसाद (हड्डी रोग सर्जन)
- अनिल दुबे • विकास चतुर्वेदी • सुरेश शर्मा
- नारायणदास गुप्ता, • पीयूष श्रीवास्तव

मार्केटिंग प्रमुख : शैलेन्द्र जैन

मार्केटिंग मैनेजर
- सुनील • हरशूल • संजू

डिजाइन : मनोज पंवार

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक मनोज कुमार चतुर्वेदी द्वारा कंचन ऑफसेट डी-1/63, सेक्टर-4, विनय नगर ग्वालियर- फोन नं. 0751-2481433, (म. प्र.) से मुद्रित एवं शिव कॉलोनी गली नं. 4 , रेलवे स्टेशन के पीछे, तहसील डबरा, जिला ग्वालियर, (मध्यप्रदेश) प्रकाशित। संपादक-मनोज कुमार चतुर्वेदी ।
(सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र ग्वालियर रहेगा।)

विवरणिका

संपादकीय	02
शुभाशीष	03
कवर स्टोरी	04-05
	06-07
श्रद्धांजलि	8-9
आंदोलन	10
इंटरनेट	11
हमारा ग्वालियर	12-13
हमारा ग्वालियर	18-19
राजनीति	28-29
कानून	32
करियर	33
नशा	34-35-36
महिला	37
करियर	38-39
गृहस्थी	40-41
सेहत	42-43
मौसम विशेष	44-45
फैशन	46
ग्लैमर	47-48

संपादकीय

संघर्ष यानी ईश्वर ने आपको बेहतर बनाने के लिए चुन लिया है

पिछले 2 वर्षों में पूरी दुनिया जिस तरह से बदली है उस तरह से दो सहस्राब्दियों में भी नहीं बदली। जब जीवन मे संघर्ष आता है तो कुछ लेकर जाता है तो बहुत कुछ देकर भी जाता है। लेकिन महामारी आती है तो रद्दोबदल कर जाती है। ऐसा ही कुछ पूरी दुनिया ने कोरोना की विभीषिका के बाद महसूस किया है। यदि इस दुरुह समय से हम कुछ सकारात्मक निकाल सकते हैं तो वह है हर दिन को पूरे उत्साह के साथ उद्देश्य के साथ जीना। इस कठिन समय ने यही सिखाया है कि सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण है जीवन का होना। यानी हमारा जीवित होना पहली आवश्यकता है। दूसरी आवश्यकता है स्वस्थ रहना। जीवन और स्वस्थ जीवन के बाद ज़रुरी है खुश रहना।

कहते हैं स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। सारी परेशानियां, सारे संघर्ष इसलिए हैं कि प्राप्य जीवन को और खूबसूरत कैसे बनाया जाए। लेकिन होता इसके विपरीत है। समस्या आने पर हम परेशान हो जाते हैं, प्रयास घटा देते हैं। दुख आने पर खुश होना सीखना होगा क्योंकि ईश्वर आपको चुन रहा है, आपकी परीक्षा ले रहा है। आपकी दृढ़ता और मेहनत ही कुंजी है इस परीक्षा में सफल होने की...हमारा हिंदुस्तान हमारा अभिमान अपने रास्ते में आने वाले संघर्षों को इसी तरह सकारात्मक लेते हुए आपकी सेवा में अनवरत रहे...।

इन्हीं शुभकामनाओं की आकांक्षा के साथ...

मनोज चतुर्वेदी
संपादक

शुभाशीष

वेक्सीन के दोनों डोज़ स्वयं भी लगवाइए और लोगों को प्रेरित भी कीजिए

हर शीत काल में हज़ारों जानवर मर जाते हैं क्योंकि वे ठंड सहन नहीं कर पाते। मनुष्य के साथ में भी यही होता है। बस संख्या कम हो जाती है क्योंकि पिछले अनुभव से सीखकर व्यक्ति ठंड से बचने का बंदोबस्त कर लेता है। यहां देखने वाली बात यह है कि बावजूद समझ के कुछ लोग तो फिर भी काल के गाल में समा ही जाते हैं। यानी कुछ लोग अपने आसपास के अनुभव से भी नहीं सीखते।

मनोविज्ञान यह है कि समस्या आती है तो हम सतर्क हो जाते हैं। चली जाती है तो लापरवाह। कोरोना काल मे भी यही हुआ है और हो रहा है। परिणाम सामने है। कोरोना की पहली लहर में जितने लोगों की जान नहीं गई उससे कई गुना ज़्यादा दूसरी लहर में गई। सार यह है कि हम जितने सतर्क और समझदार हैं उतने ही ज़्यादा मनुष्य हैं और उतने ही सुरक्षित भी। संकल्प कीजिए कि हम सतर्क रहेंगे...मास्क पहनेंगे...और वेक्सीन के दोनों डोज़ ना सिर्फ स्वयं लगवाएंगे बल्कि अपने आसपास के लोगों को भी प्रेरित करेंगे। मनुष्य होने का यही एकमात्र लाभ है की परिणाम से पहले ही समझदार बन जाएं।

डॉ. श्रीमन नारायण मिश्रा
संरक्षक

अचानक क्यों खामोश हो गए राकेश टिकैत?

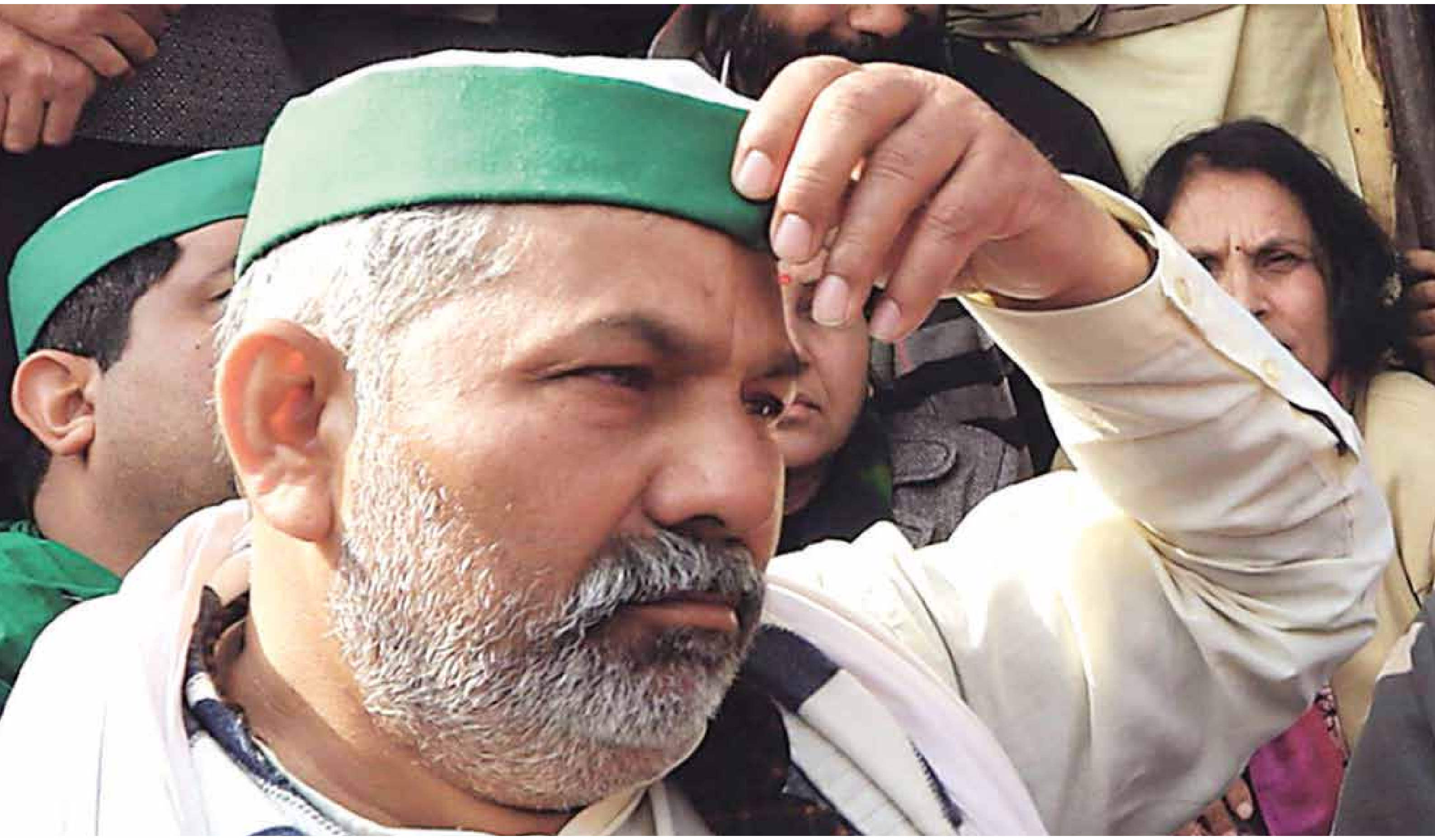

आंदोलन खत्म होने के बाद अब प्रधानमंत्री मोदी की इमेज को किसानों के बीच और बेहतर बनाने के साथ उन्हें किसानों का सबसे बड़ा हमदर्द साबित करने की रणनीति पर तेजी से काम चल रहा है। केंद्र सरकार इसकी पूरी तैयारी कर रही है। माना जा रहा है कि जनवरी 2022 में सरकार कुछ ऐसा करने वाली है, जिससे किसानों को उससे कोई शिकायत न हो। तब तक किसान दिल्ली से सटे हरियाणा और उत्तर प्रदेश के बॉर्डर से पूरी तरह चले जाएंगे। सभी टोल टैक्स खाली हो जाएंगे, लेकिन किसान संगठनों के बीच में भी राकेश टिकैत की चुप्पी चर्चा का विषय बनी हुई है। केंद्रीय सचिवालय के गलियारे में भी राकेश टिकैत की चुप्पी को लेकर तरह-तरह की चर्चा है। हालांकि भाकियू के नेता राजबीर सिंह जादौन का कहना है कि इसमें कोई सच्चाई नहीं है। इस तरह के कयास पर ध्यान नहीं देना चाहिए। जादौन कहते हैं कि भाकियू की तरफ से बातचीत में कभी राकेश टिकैत नहीं जाते। हमेशा से भाकियू के राष्ट्रीय महासचिव और हमारे नेता युद्धवीर सिंह ही जाते रहे हैं। युद्धवीर सिंह जाट महासभा के महासचिव भी हैं और चौधरी चरण सिंह, महेंद्र सिंह टिकैत के साथ भी काम कर चुके हैं। जबकि चर्चा है कि केंद्र सरकार की इच्छा के अनुरुप ही राकेश टिकैत शांत चल रहे हैं। टिकैत के चेहरे पर फिलहाल आंदोलन के दौर वाली या फिर जीत वाली कोई चमक नहीं दिखाई दे रही है। किसान नेता युद्धवीर सिंह भी किसानों के आंदोलन की बहुत बड़ी जीत बता रहे हैं, लेकिन वह इस समझौते को अभी 50 फीसदी ही बताते हैं।

मंत्री टेनी की बर्खास्तगी की मांग का क्या हुआ?

किसान आंदोलन को समाप्त करने के लिए किसानों ने जिन मुद्दों को प्रमुख बताया था, उसमें एक मुद्दा गृह राज्यमंत्री अजय मिश्र टेनी की बर्खास्तगी की मांग का भी था। इसके लिए प्रमुख किसान संगठनों ने भी काफी जोर दिया था। लेकिन केंद्र सरकार के रणनीतिकारों से वार्ता के दौरान किसान संगठनों को इस मांग को न उठाने के लिए मना लिया गया। किसान संगठनों से कहा गया कि किसानों की समस्या के समाधान और आंदोलन को समाप्त करने की शर्त में अजय मिश्र टेनी की बर्खास्तगी की मांग नहीं उठनी चाहिए। किसान संगठनों की यह मांग और जिद दोनों ठीक नहीं है। किसान संगठनों से जुड़े एक नेता ने कहा कि हमने इस पर कोई विशेष आपत्ति नहीं की। क्योंकि लखीमपुर खीरी हिंसा के मामले की जांच उच्चतम न्यायालय की निगरानी में हो रही है।

आखिर सरकार ने कैसे मनाया किसानों को?

सरकारी पक्ष की मानें तो 26 जनवरी को लाल किला और दिल्ली में हिंसा की स्थिति पैदा होने के बाद किसान संगठन आंदोलन को लेकर कुछ दबाव में आने लगे थे। लेकिन आंदोलन को उत्तर प्रदेश के एक नेता का संरक्षण मिलने के बाद इसका स्वरुप बदल गया। सरकार भी बैकफुट पर आ गई। दूसरा बड़ा झटका सरकार को लखीमपुर खीरी की घटना और उपचुनावों के नतीजों ने दिया। सूत्र का कहना है कि प्रधानमंत्री ने उच्चस्तर पर मंत्रणा के बाद किसान आंदोलन को लेकर रणनीति बनाई थी। इसमें केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह की काफी अहम भूमिका रही। किसानों को मनाने के लिए हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश के किसानों में गहरी पैठ रखने वाले रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने भी भूमिका निभाई। राजनाथ सिंह उत्तर प्रदेश के किसान नेताओं में नरेश टिकैत, राकेश टिकैत, युद्धवीर सिंह, सरदार वीएम सिंह, भानु गुट आदि में भी गहरी पैठ रखते हैं। भाकियू के युद्धवीर सिंह नरेश और राकेश के बीच में कड़ी का काम करते हैं और बातचीत में संवेदनशील रहते हैं। इसलिए युद्धवीर सिंह को इसके लिए चुना गया।

पंजाब और हरियाणा के किसानों को मनाया

किसानों को मनाने के लिए केंद्र सरकार के रणनीतिकारों ने पहले पंजाब से ही समस्या के समाधान के रास्ते को चुना। बताते हैं कि कैप्टन अमरिंदर सिंह के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने और उनकी अमित शाह से मुलाकात के बाद यह रास्ता आसान बनाने की कवायद शुरू हो गई। इसमें अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंह ने भी अहम भूमिका निभाई। किसान नेता सतनाम सिंह सरीखों ने तीनों कृषि कानूनों की वापसी की प्रधानमंत्री द्वारा घोषणा के बाद से ही सरकार के पक्ष में और आंदोलन से उठने के लिए बयान देना शुरू कर दिया। हरियाणा के किसानों को साधने के दौरान केंद्र सरकार के सामने सबसे अहम मुद्दा करीब 45 हजार मुकदमों की वापसी का आया। इस दौरान केंद्रीय मंत्री और पंजाब के प्रभारी गजेन्द्र सिंह शेखावत ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बताते हैं इसके समाधान का रास्ता खोजने के बाद केंद्र सरकार ने आंदोलन को समाप्त कराने की पटकथा लिखनी शुरू कर दी। इसमें केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह, कृषि मंत्रालय के सचिव संजय अग्रवाल, प्रधानमंत्री कार्यालय के कुछ अफसर अहम बताए जा रहे हैं।

सावधान हैं भाजपा और केंद्र के रणनीतिकार

राकेश टिकैत को लेकर भाजपा और केंद्र सरकार के रणनीतिकार काफी सावधान हैं। राजनीतिक मामले पर नजर रखने वाले सूत्र का कहना है कि राकेश टिकैत समाजवादी पार्टी के नेता अखिलेश यादव से अच्छा संबंध रखते हैं। इस आंदोलन में समाजवादी पार्टी की भूमिका से भी इनकार नहीं है। समाजवादी पार्टी का राष्ट्रीय लोकदल के साथ उत्तर प्रदेश में चुनावी तालमेल है। इसकी पूरी संभावना है कि राकेश टिकैत के कुछ करीबी नेता समाजवादी पार्टी के टिकट पर चुनाव मैदान में उतरें। राजनीति और चुनाव जैसी किसी संभावना के बारे में राकेश टिकैत भी चुनाव अधिसूचना जारी होने का इंतजार करने की बात कहते हैं। ऐसे में भाजपा और केंद्र सरकार के रणनीतिकारों ने एक तीर से दो निशाने साधने की कोशिश की है। राकेश टिकैत को अलग रखकर युद्धवीर सिंह से बातचीत की पहल की है। हालांकि नरेश टिकैत, राकेश टिकैत और युद्धवीर सिंह सभी आपस में करीबी हैं और इन सभी स्थितियों की भनक समय पर ही राकेश टिकैत को लग चुकी थी। बताते हैं आंदोलन के हर मोड़ पर काफी कुछ आपसी तालमेल के साथ आगे बढ़ा है।

राकेश टिकैत की कमाई कितनी ?

भारतीय किसान यूनियन के नेता राकेट टिकैत खुद को किसानों का नेता कहते हैं। उन किसानों के हक की लड़ाई लड़ने का दावा करते हैं, जिनकी जिंदगी कर्ज के बोझ तले दबी होती है और कई तो इसी बोझ में दबकर खुदकुशी कर लेते हैं। किसानों की औसत कमाई जानते हैं कितनी है? एक महीने में सिर्फ 6400 रुपये। ज्यादातर किसान 6 महीने फसल उगाते हैं और 6 महीने बेरोजगार रहते हैं। जो अपने खून से खेत सींचते हैं और दूसरों के लिए अन्न उगाते हैं। कृषि प्रधान भारत में हमारे किसानों की गरीबी किसी से छिपी नहीं है। आंकड़ों के मुताबिक भारत में 100 में से 52 किसान ऐसे हैं, जिनपर औसतन 1 लाख 40 हजार रुपए का कर्ज है। साल 2019 में 10 हजार किसानों ने आत्महत्या की। 76 प्रतिशत किसान ऐसे हैं, जो अब खेती छोड़ना चाहते हैं। गांवों में सिर्फ 1 प्रतिशत युवा ही ऐसे हैं, जो किसान बनना चाहते हैं। अब सवाल उठता है खुद को किसान नेता कहने का दावा करने वाले राकेश टिकैत की कमाई कितनी है?

4 राज्यों और 13 शहरों में संपत्ति

राकेश टिकैत की 4 राज्यों में संपत्ति है और वो राज्य हैं उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, दिल्ली और महाराष्ट्र। एक आंकड़े और अनुमान के मुताबिक राकेश टिकैत की देश के 13 शहरों में संपत्ति है, जिनमें मुजफ्फरनगर, ललितपुर, झांसी, लखीमपुर खीरी, बिजनौर, बदायूं, दिल्ली, नोएडा, गाजियाबाद, देहरादून, रूड़की, हरिद्वार और मुंबई शामिल हैं। एक अनुमान के मुताबिक राकेश टिकैत की संपत्ति करीब 80 करोड़ रुपये की है।

किन-किन क्षेत्र में कारोबार

1. जमीन 2. पेट्रोल पंप
3. शोरूम 4. ईंट-भट्टे
5. अन्य कारोबार

किसानों से ज्यादा नेता हैं टिकैत

राकेश टिकैत दिल्ली पुलिस में कांस्टेबल थे और किसान नेता कहे जाते हैं, लेकिन खेत तो सिर्फ टिकैत के साम्राज्य का एक भाग है। दूसरे भाग में बहुत सारे कारोबार हैं। ये वो कारोबार हैं, जिसके लिए किसान नहीं, बल्कि नेता बनना पड़ता है। 51 साल के राकेश टिकैत की शादी साल 1985 में सुनीता देवी से हुई थी और उनके तीन बच्चे हैं। एक बेटा जिसका नाम चरण सिंह है और दो बेटियां सीमा टिकैत और ज्योति टिकैत है।

ऑस्ट्रेलिया में रहती है बेटी

राकेश टिकैत की दोनों बेटियों की शादी हो चुकी है। राकेश टिकैत की छोटी बेटी ज्योति टिकैत ऑस्ट्रेलिया में रहती है। ऑस्ट्रेलिया के मेलबर्न शहर में 8 फरवरी को कृषि बिल के विरोध में बैठे प्रदर्शनकारियों के समर्थन में रैली आयोजित की गई थी, जिसमे खुद टिकैत की बेटी मौजूद थी और ऑस्ट्रेलिया के लोगों से किसान आंदोलन के समर्थन करने के लिए बोल रही थी।

गैरकानूनी रूप से पाल रखा है हिरण

जहां एक तरफ राकेश टिकैत खुद को किसान के हक के लिए लड़ने वाला बता रहे हैं तो दूसरी ओर उसकी आड़ में राकेश टिकैत ने गैरकानूनी रूप से हिरण पाल रखा है। बता दें कि भारत मे हिरन सहित किसी भी जंगली जानवर को पकड़कर बंद करना दंडनीय अपराध है। इसके दोषी को सात साल की सजा या 25 हजार रुपये का जुर्माना या दोनों हो सकते हैं।

लाखों कैश में 9 लाख की ज्वैलरी

मूवेवल असेट्स (चल संपत्ति) की जो जानकारी शेयर की गई थी उसके मुताबिक, कैश 17 लाख, बैंक डिपॉजिट 8 लाख, इंश्योरेंस में 28 हजार, गोल्ड और ज्वैलरी में 9।15 लाख निवेश किया है। अचल संपत्ति की बात करें तो खेती योग्य जमीन की कीमत 3 करोड़ रुपए, नॉन-एग्री लैंड की कीमत 88 लाख रुपए थी। उन्होंने बैंक से 10।71 लाख का लोन भी लिया था।

दो बार लड़े चुनाव लेकिन मिली हार

लंबी बीमारी के चलते 15 मई 2011 को पिता महेंद्र सिंह टिकैत के निधन के बाद बड़े बेटे नरेश टिकैत यूनियन के अध्यक्ष बना दिए गए। वहीं राकेश टिकैत भी सक्रिय तौर पर कार्य कर रहे थे। इससे पहले उन्होंने राजनीति में भी दांव आजमाया था। पहली बार 2007 मे उन्होंने मुजफ्फरनगर की खतौली विधानसभा सीट से निर्दलीय चुनाव लड़ा था। हार गए। फिर 2014 में अमरोहा जनपद से राष्ट्रीय लोक दल पार्टी ने उन्हें टिकट दिया।

44 बार जेल जा चुके हैं राकेश टिकैत

किसानों की लड़ाई के दौरान राकेश टिकैत 44 बार जेल जा चुके हैं। मध्यप्रदेश में एक बार भूमि अधिग्रहण कानून के खिलाफ उनको 39 दिनों तक जेल में रहना पड़ा था। इसके बाद उन्होंने दिल्ली में संसद भवन के बाहर गन्ना का समर्थन मूल्य बढ़ाने के मुद्दे पर सरकार के खिलाफ प्रदर्शन किया था। उन्होंने तब गन्ना जलाकर विरोध जताया था। इसके बाद उन्हें तिहाड़

जेल भेज दिया गया था। राजस्थान में भी एक बार उन्होंने किसानों के हित में बाजरे का समर्थन मूल्य बढ़ाने की मांग पर प्रदर्शन किया था। इस बार उन्हें जयपुर जेल जाना पड़ा था।

सिसौली में 110 बीघा जमीन

देश के 13 बड़े शहरों मुजफ्फरनगर, दिल्ली, रुड़की, ललितपुर, झांसी, लखीमपुर खीरी, बदायूं, देहरादून, हरिद्वार, बिजनौर, नोएडा, गाजियाबाद, मुंबई में टिकैत की करोड़ों की नामी और बेनामी संपत्तियां हैं। टिकैत के अपने गांव सिसौली में 110 बीघा जमीन है जो उनके और उनके परिवार के नाम पर दर्ज हैं। टिकैत के कुबने को इससे हर साल लाखों रुपये की आमदनी होती है।

75 बीघा बेनामी जमीन

चीनी मिलों से मिले आंकड़ों के मुताबिक दिल्ली सीमा पर जिस वक्त राकेश टिकैत धरना दे रहे थे उस दौरान उनका 2250 क्विंटल गन्ना चीनी मिलों में पहुंच चुका था। हरिद्वार के इकबालपुर गांव में टिकैत की 75 बीघा बेनामी जमीन है जिसकी अनुमानित कीमत साढ़े तेरह करोड़ रुपये से ज्यादा है। ललितपुर और गौतमबुद्ध नगर में भी टिकैत की बड़ी बेनामी जमीन है। झांसी, लखीमपुर खीरी, बिजनौर में रिश्तेदारों के नाम पर टिकैत की जमीन और फार्म हाउस हैं। टिकैत के पास चार से पांच पेट्रोल पंप, कार शो रूम और कई होटल हैं। कंस्ट्रक्सन कंपनी का काम भी है। मुजफ्फरनगर शामली के बीच हाइवे के किनारे जीआर इंफ्रा प्रोजेक्ट में राकेश टिकैत के बेटे चरण सिंह की बेनामी पार्टनरशिप राजस्थान के बिल्डर के साथ है। इस कंपनी पर अवैध मिट्टी खनन को लेकर कार्रवाई भी हो चुकी है। माटियान कंस्ट्रक्सन लिमिटेड में भी टिकैत के बेटे की बेनामी पार्टनरशिप है। रुड़की में होटल, कार शो रूम और कई पेट्रोल पंपों में राकेश टिकैत की पार्टनरशिप बताई जा रही है।

पैसा कहां से आ रहा

महेंद्र सिंह टिकैत के पुराने साथी और उनके सलाहकार रहे चौधरी वीरेंद्र सिंह भी राकेश की अकूत संपत्ति और जमीन व पेट्रोल पंप से लेकर कंस्ट्रक्शन कंपनी तक फैले राकेश और उनके बेटे के कारोबार की पुष्टि करते हैं। चौधरी वीरेंद्र सिंह कहते हैं कि यह तो साफ है कि धंधा बहुत बड़ा है। लिविंग स्टैंडर्ड ही बताता है कि पैसा बहुत बड़ी तादाद में और तेजी से आ रहा है। अब कहां से आ रहा है यह जानकारी हमें नहीं है।

ईंट भट्ठे, वाटर प्लांटः पश्चिम यूपी में राकेश टिकैत के कई ईंट भट्ठे भी चल रहे हैं। गाजियाबाद में वाटर प्लांट है। दिल्ली, नोएडा, मुंबई में संदीप शर्मा के नाम के व्यक्ति के जरिये टिकैत ने लाखों की प्रापर्टी खरीद रखी है। अल्पाइन कंस्ट्रक्शन कंपनी में भी राकेश टिकैत के बेटे की पार्टनरशिप है। मुजफ्फरनगर के कई पेट्रोल पंपों में राकेश टिकैत की छिपी हिस्सेदारी है।

आंदोलन खत्म नहीं करना चाहते थे राकेश टिकैत

किसान नेता राकेश टिकैत इस बार भी आंदोलन को खत्म नहीं करना चाहते थे। उनके नजरिए से अभी 5-6 मांगें और मानी जानी बाकी हैं। केंद्र द्वारा गठित कमेटी के तरफ से आए सरकारी प्रस्ताव को पजांब-हरियाणा के किसानों ने मंजूरी दी। विरोध हुआ तो टिकैत खेमे का, जो संख्या में कम रहा। अब ऐसे में खेमा और टिकैत साहब ज्यादा नहीं टिक पाए। अकेले पड़ता देख मजबूरन राकेश टिकैत को भी झुकना पड़ा और सरकार की तरफ से आए प्रस्ताव को मंजूरी दे दी। साथ ही किसानों के बीच कहा कि सरकार अपनी बातों से मुकरी तो दोबारा आंदोलन शुरू कर लेंगे। सरकारी ड्राफ्ट (प्रस्ताव) में दो मांगों का मानी जाना शामिल रहा। इसमें मृतक के परिवार को 5 लाख रुपए मुआवजा और सभी केस रद्द किए जाएंगे। ऐसा सुनते ही हरियाणा तैयार हुआ और पंजाब तो पहले ही पैकिंग कर रहा था। हरियाणा के लिए केस हटवाना बड़ी बात थी। वर्ष 2016 में हुए जाट आंदोलन वाला ही डर किसानों को सता रहा था। पिछले पांच सालों से आंदोलन के केसों के अंतर्गत पकड़े गए लोग आज भी जेलों में बंद हैं। जबकि किसानों पर तो देशद्रोह की धारा भी लगी हुई है।

टिकैत को छोड़ सभी के चेहरे खिले रहे : आंदोलन खत्म करने के लिए सिंघू बॉर्डर पर मीटिंग खत्म होने के बाद जब किसान नेता बाहर निकले तो सभी के चेहरे खिले हुए थे, लेकिन जब राकेश टिकैत आए तो उनके चेहरे पर मुस्कान नहीं थी। टिकैत ने कहा कि किसानों की बहुत-सी मांगें अभी बाकी हैं। जो सरकार ने भेजी हैं, उनको मान लिया है। सभी की सहमति हुई है कि जब अधिकारिक रूप से मांगें मान ली जाएगी, तब आंदोलन को हटा लिया जाएगा।

घोड़े पर बिठाकर भेजें, गधों पर नहीं...: खटकड़ टोल से आए किसानों ने कहा कि हम सामाजिक और पंचायती आदमी हैं। हमें तो पंचायतों में गांव-गांव जाना पड़ता है। हम न तो एसकेएम के साथ हैं और न ही किसी दूसरे संगठन के साथ हैं। हम किसी की भी मानने वाले नहीं हैं। सिर्फ एक बात यह रखते हैं कि वहां के लोगों ने हम पर विश्वास किया है। दिल्ली बात हुई। उसके बाद सिंघु बॉर्डर चर्चा हुई। हमें घोड़े पर बैठकर जाना है। गधे पर नहीं। जो निर्णय होगा सोच समझकर करना।

चढ़ूनी ने पहले ही दिया था आदेशः चढ़ूनी समर्थक ने कहा कि गुरनाम सिंह चढ़ूनी ने उन्हें पहले ही कह दिया था। अब अपना सामान पैक कर लो, घर जाने का समय है। उन्होंने कल ही पूरी पैकिंग कर ली। केस वापस होना जरूरी था। बाकी मांगों को तो दोबारा भी मनवा लिया जाएगा।

48 हजार पर दर्ज हैं केस : गुरनाम सिंह चढ़ूनी ने कहा कि हरियाणा के सभी संगठनों की एसकेएम की बैठक से पहले सभी बातों पर चर्चा हुई। सभी मांगें जायज रहीं, पर केस वापस होना महत्वपूर्ण बात है। प्रदेश के 48 हजार किसानों पर केस दर्ज हैं। आंदोलन को खत्म करवाते समय भी सरकार ने केस वापस लेने की बात कही थी, पर अभी तक वापस नहीं लिया। उस समय जाट आंदोलनकारियों ने लिखित में नहीं लिया था, इसी गलती की सजा आज भी भुगत रहे हैं। हम लिखित में आने के बाद आंदोलन समाप्त कर देंगे। बैठक में किसानों को 5 लाख मुआवजा और सभी केसों को वापस लिया जाना तय हुआ। इस पर सभी किसान सहमत हैं कि अधिकारिक रूप से घोषणा हो तो आंदोलन समाप्त करेंगे।किसान नेता रतन मान ने बताया कि हरियाणा के सभी संगठनों की अलग से बैठक हुई। वे केस दर्ज और मुआवजे की बात पर सहमत थे। इसके बाद पंजाब के संगठन भी बैठक में जुड़े, दोनों ही प्रदेश के किसान नेताओं ने सरकार के प्रस्ताव पर सहमति जताई।

जनरल रावत को श्रद्धांजलि

एक ऐसा नायक जिसकी मौजूदगी ही दुश्मनों के लिए काफी थी

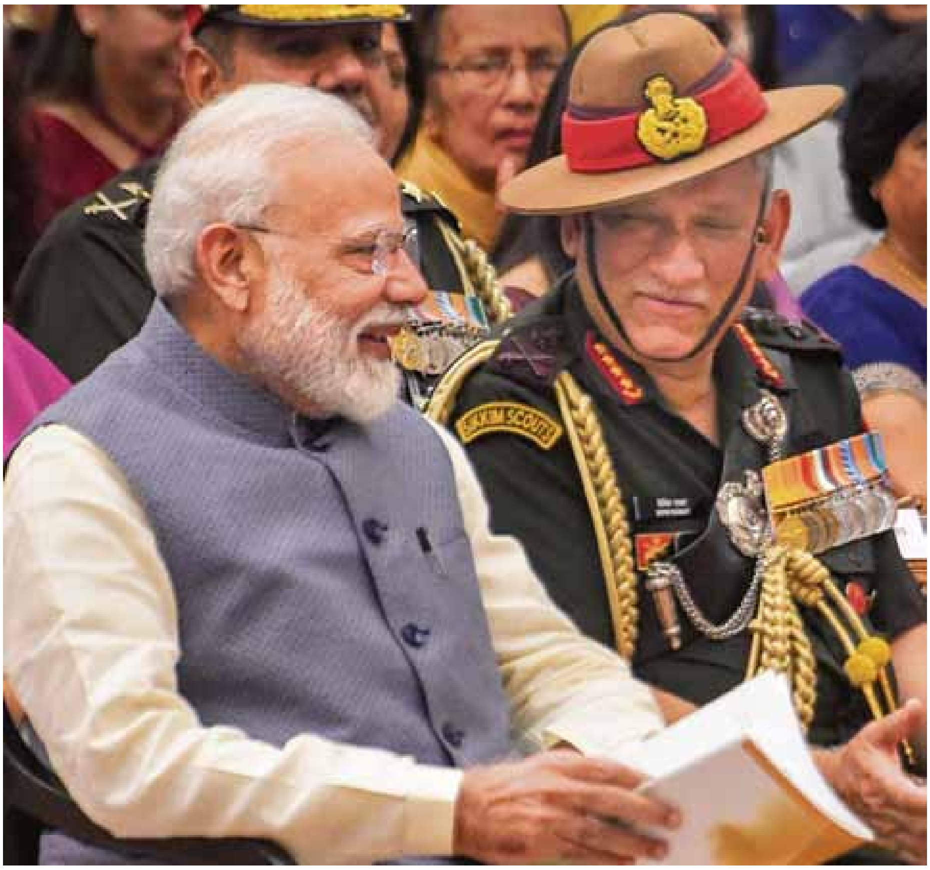

कैसे यकीन कर लें कि जिसकी एक दाहड़ से दुश्मनों के पसीने छूट जाते थे, वह निःशब्द, आंखें बंद किए लेटा हुआ है, फिर कभी न उठने के लिए। जनरल बिपिन रावत के रूप में देश ने सिर्फ एक चीफ ऑफ डिफेंस ही नहीं खोया है, एक ऐसा योद्धा भी खो दिया है, जिसकी मौजूदगी ही दुश्मनों को हिला कर रख देने के लिए काफी होती थी। नियति के क्रूर निर्णय ने असमय ही जनरल रावत को छीन लिया। जवान कभी मरता नहीं, अमर हो जाता है, पर यकीन मानिए जनरल रावत के ओजस्वी तस्वीरों को देखने के बाद एक बार को दिल मान ही नहीं रहा, जो हम मस्तिष्क को जबरदस्ती मनवाने की कोशिश कर रहे हैं। वेलिंगटन स्थित डिफेंस सर्विसेज स्टाफ कॉलेज में लैंड करने से ठीक सात मिनट पहले हेलीकॉप्टर क्रैश कर गया। काश वो सात मिनट, आठ दिसंबर के दिन के 24 घंटे में आए ही न होते। यह भी तो संयोग ही है कि जिस कॉलेज में संबोधन के लिए जनरल रावत जा रहे थे, वहीं से उन्होंने स्नातक भी किया था। दिमाग में ऐसे न जाने कितने क्यों, कैसे और काश, जैसे सवाल कुरेद रहे हैं, पर हकीकत वही है कि जो दिल मानने को तैयार नहीं है।

मौत को दे चुके थे मात

सेना के जवान हर सहज-असहज परिस्थितयों से मुकाबले को तैयार होते हैं, जनरल रावत तो तीनों सेनाओं के सुप्रीम थे। साल 2015 में वह मौत को भी मात दे चुके थे। बतौर लेफ्टिनेंट जनरल, नागालैंड में उनकी तैनाती थी। तीन फरवरी की रोज एक कर्नल और दो पायलेट के साथ जनरल रावत चीता हेलीकॉप्टर में सवार थे। हेलीकॉप्टर हवा में कुछ ऊपर पहुंचा ही था कि इंजन फेल हो गया। देखते-देखते हेलीकॉप्टर जमीन पर आ गिरा। हेलीकॉप्टर में सवार जवानों और पायलेट को गंभीर चोट आई, लेकिन कहते हैं न 'शो मस्ट गो ऑन'। हेलीकॉप्टर क्रैश होने के कुछ घंटे के बाद जनरल रावत ने दूसरे हेलीकॉप्टर से उड़ान भरी और मिशन पर निकल गए। काश आठ दिसंबर की रोज भी कुछ ऐसा हो गया होता।

जनरल रावत के पहले सीडीसी नियुक्त होते ही दिल को इस बात की तसल्ली हो गई थी, कि सेना अब ऐसे हाथों में है, जो दुश्मनों को सिर उठाते ही कुचलने की क्षमता रखता है। सर्जिकल स्ट्राइक में उनकी कूटनीति के बाद से देश ही नहीं, पड़ोसियों तक भी संदेश पहुंच गया था कि जनरल रावत 'बर्दाश्त' करने वाले लोगों में से नहीं हैं। कश्मीर हो या पूर्वोत्तर के हिस्से, जनरल रावत ने आतंकियों के दांत खट्टे कर रखे थे। चीन हो या पाकिस्तान, सब अच्छी तरह से जानते थे कि जनरल रावत के रहते भारत की तरफ आंख उठाना, उन्हें अंधा बना सकता है।

पहली हम नहीं मारेंगे, पर...

साहस और बहादुरी, कुदरती तौर पर खून में होती है और जनरल रावत का खून इस मामले में 'बहुत गाढ़ा' था। सीमा पर पाकिस्तान का आतंक बढ़ता जा रहा है। दुश्मनों की इस हरकत से तंग, जनरल रावत ने स्पष्ट संदेश दे दिया-

पहली गोली हमारी तरफ से नहीं चलेगी, लेकिन जब हम चलाना शुरू करेंगे तो इसकी गिनती भी नहीं करेंगे।

सर्जिकल स्ट्राइक में पाकिस्तान को उन्होंने यह प्रमाणित करके भी दिखा दिया। कई सैन्य अधिकारियों ने साक्षात्कारों में इस बात का जिक्र किया है कि जनरल रावत जितने शालीन और मृदुभाषी थे, उन्हें पहली बार देखकर इस बात का अंदाजा ही नहीं लगाया जा सकता, कि वह इतने अद्भुत सैन्य अधिकारी हैं।

युद्ध भी लड़े और शांति अभियानों में भी शामिल रहेः 63 साल के जनरल बिपिन रावत ने अपने करियर में कई उपलब्धियां हासिल की। जनरल बिपिन रावत के पिता लक्ष्मण सिंह रावत भी सेना में थे। लेफ्टिनेंट जनरल लक्ष्मण सिंह रावत साल 1988 में वाइस चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ़ के पद से रिटायर हुए थे। जनरल बिपिन रावत भारतीय सेना में 42 साल रहे हैं। बिपिन रावत ने युद्ध भी लड़े और शांति अभियानों में भी शामिल रहे। भारत ने पुलवामा हमले के बाद पाकिस्तान के बालाकोट में एयरस्ट्राइक किया था तब बिपिन रावत ही भारतीय सेना के प्रमुख थे। साल 2015 में बिपिन रावत की देखरेख में ही भारतीय सेना म्यांमार में घुसकर आतंकियों के ठिकानों को तबाह किया था। उन्होंने भारतीय सेना में रहते हुए कई उत्कृष्ट कार्य किए जिससे देश का सिर गर्व से ऊंचा हुआ है। जनरल बिपिन रावत और मधुलिका ने अपनी दो बेटियों को बिलखता छोड़ गए हैं जिनके सिर से एक साथ माता-पिता का साया छिन गया है। बिपिन रावत और मधुलिका की एक बेटी का नाम कृतिका और दूसरी बेटी का नाम तारिणी है। कृतिका की शादी हो गई है और वह अपने पति के साथ मुंबई में रहती हैं। छोटी तारिणी दिल्ली हाईकोर्ट में वकील के तौर पर प्रैक्टिस कर रही हैं। देश के लिए मर मिटने वाले जनरल बिपिन रावत की बहादुरी हमेशा लोगों के दिलों में जिंदा रहेगी।

उन्होंने कहा था...

जब हम जम्मू-कश्मीर की बात करते हैं, तो इसमें पीओके और गिलगिट बाल्टिस्तान क्षेत्र भी शामिल होते हैं। पीओके पर हमारे पड़ोसियों ने अवैध रूप से कब्जा किया हुआ है। उन्होंने कहा था पीओके आतंकियों के नियंत्रण में है। उन्होंने कहा कि जम्मू-कश्मीर में पाकिस्तान आगे छद्म युद्ध' जारी रखेगा।

बदलाव की शुरुआत

बतौर सीडीएस, जनरल रावत में सेना में कई तरह के बदलावों की शुरुआत कर दी थी। सेना में महिलाकर्मियों की संख्या बढ़ाने की कवायद हो या थियेटर कमान के रूप में सेना के एकीकरण प्रक्रिया की, जनरल रावत के कार्यकाल में एक नई ऊर्जा देखने को मिलने लगी थी। जल-थल-नभ, तीनों सेनाओं में आधुनिकीकरण के वह समर्थक थे, पर अब वह बस यादों में रह गए हैं। देश ने एक अमूल्य हीरा खो दिया है। आंखें नम हैं, गला भर आता है, लेकिन जवानों को नम आंखों से नहीं, सलामी देकर विदा किया जाता है। मां भारती के अमर सपूत को विनम्र श्रद्धांजलि। आप हमेशा याद आएंगे रावत साब।

हरिवंशराय बच्चन की 'अग्निपथ' ये पक्तियां भारत माता के सपूत जनरल बिपिन रावत जैसे वीर सैनिकों के लिए लिखी गई हैं।

**तू न थकेगा कभी...
तू न रुकेगा कभी...
तू न मुड़ेगा कभी...
कर शपथ.. कर शपथ...
अग्निपथ... अग्निपथ...
अग्निपथ...।**

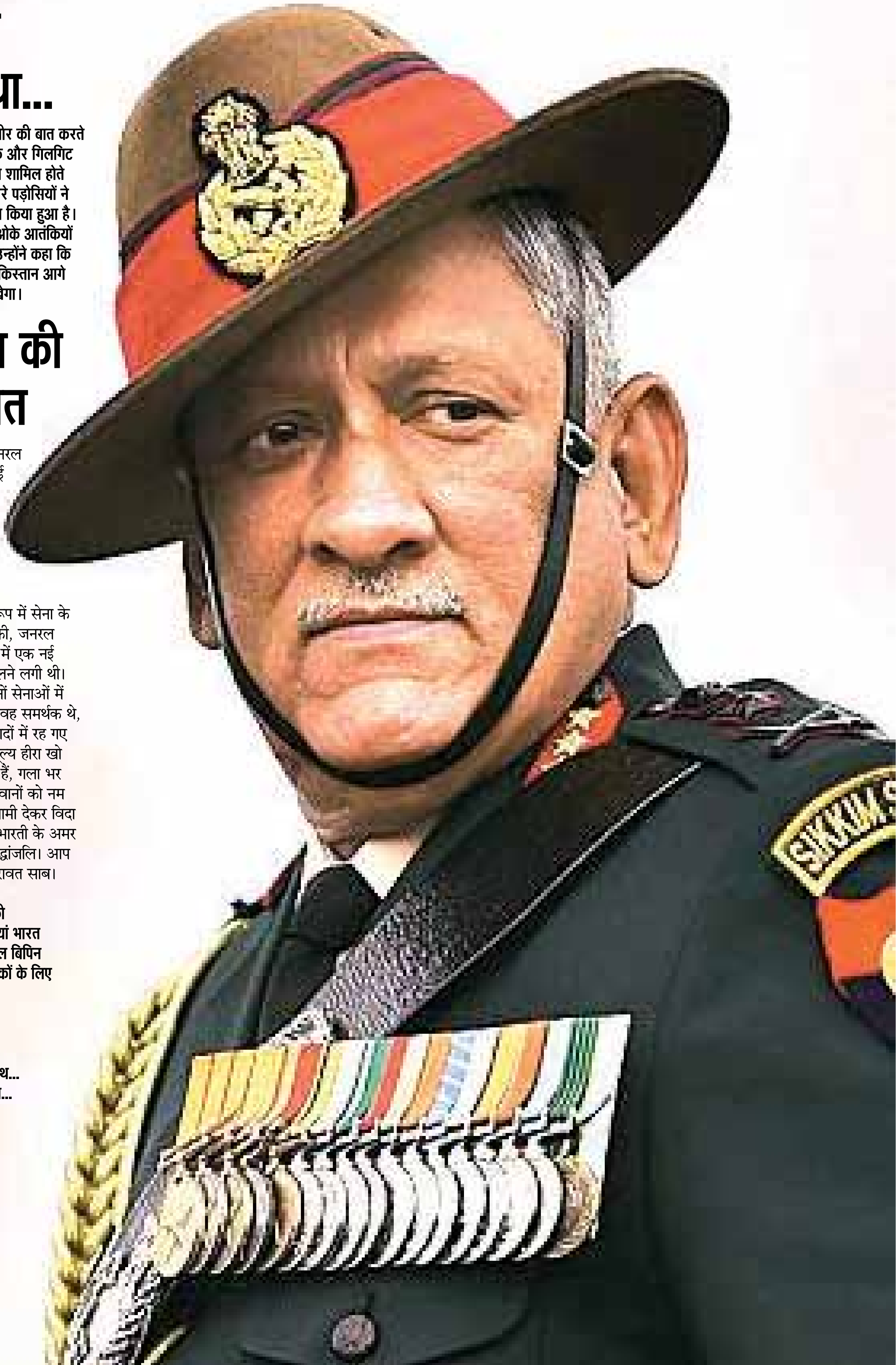

कोरोना वायरस का नया वैरिएंट ओमिक्रोन का खतरा बढ़ा...

कोरोना वायरस के नये वैरिएंट ओमिक्रोन ने देश में तेजी से अपना संक्रमण बढ़ाना शुरू कर दिया है। शाम को महाराष्ट्र में ओमिक्रोन वैरिएंट से संक्रमित सात नये मामले सामने आये हैं। इससे पहले स्वास्थ्य मंत्रालय ने अपने प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया था कि देश में कुल 25 मामले ओमिक्रोन वैरिएंट से संक्रमित लोगों के हैं। यानी अब देश में कुल 32 लोग ओमिक्रोन वैरिएंट से संक्रमित हैं। देश में राजस्थान में नौ, गुजरात में तीन, महाराष्ट्र में 17, कर्नाटक में दो और दिल्ली में एक व्यक्ति इस वैरिएंट से संक्रमित है। महाराष्ट्र में जो 7 नये मामले सामने आये हैं उनमें से 3 मुंबई से और 4 पिंपरी चिंचवाड़ नगर निगम से हैं। महाराष्ट्र के स्वास्थ्य विभाग ने जानकारी दी है कि अब प्रदेश में कोरोना वायरस के ओमिक्रोन वैरिएंट के 17 मरीज हो गये हैं। स्वास्थ्य विभाग ने लोगों को चेतावनी दी कि हम खतरे में हैं क्योंकि हमने मास्क लगाना कम कर दिया है। ओमिक्रोन से बचाव के लिए हमें मास्क पहनना बहुत जरूरी है, साथ ही हमें वैक्सीन के दोनों डोज भी लगवाने चाहिए, तभी हम इस वायरस से खुद को बचा पायेंगे।

बच्चों को टीका अभी फैसला नहीं

ओमिक्रोन के खतरे को देखते हुए डॉक्टर यह सलाह दे रहे हैं कि बच्चों को इससे बचाने के लिए उनका वैक्सीनेशन बहुत जरूरी है, लेकिन ध्यान देने वाली बात यह है कि देश में अबतक 18 साल से कम उम्र के बच्चों को वैक्सीन देने पर कोई फैसला नहीं हुआ है। नीति आयोग के सदस्य (स्वास्थ्य) डॉ वी के पॉल नेकहा कि बच्चों के टीकाकरण पर राष्ट्रीय तकनीकी सलाहकार समूह (एनटीएजीआई) की ओर से कोई सिफारिश नहीं की गई है। उन्होंने बताया कि टीम इस संबंध में कई स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं का अध्ययन किया जा रहा है। वहीं 18 साल से अधिक के लोगों को टीके का बूस्टर डोज देने के बारे में उन्होंने कहा कि हम इस संबंध में विश्व पर नजर रखे हुए हैं। वैश्विक वैज्ञानिकों के अध्ययनों से जो बातें सामने आयेंगी उसके आधार पर ही कोरोना के बूस्टर डोज पर फैसला किया जायेगा।

दुनियाभर में दहशत फैला दी

कोरोना के नये संक्रमण ओमिक्रोन के मामले सामने आने से दुनियाभर में चिंता की लहर दौड़ गयी है। हाल ही में जीवन पटरी पर आता लग रहा था कि ओमिक्रोन वेरिएंट ने दुनियाभर में दहशत फैला दी है। अब तक 38 देशों में इसका संक्रमण पहुंच गया है। दक्षिण अफ्रीका में नवंबर में इस वेरिएंट का पहला मामला सामने आया था। इसके अलावा बोत्सवाना, बेल्जियम, हांगकांग और इस्राइल में भी इसका संक्रमण हुआ। दक्षिण अफ्रीका में इसके मामले तेजी से बढ़े हैं। इस वेरिएंट पर वैक्सीन कितनी असरदार साबित होगी, इस पर अभी डॉक्टर कुछ ठोस कहने की स्थिति में नहीं है।

कुछ भी कहना मुश्किल

विशेषज्ञ स्पष्ट कर चुके हैं कि अभी इसके असर के बारे में कुछ भी कहना मुश्किल है। प्रारंभिक सूचनाओं के अनुसार यह सही है कि यह फैलता ज्यादा तेजी से है, लेकिन पिछले डेल्टा वेरिएंट की तरह घातक नहीं है। अलबत्ता, इसे लेकर दहशत अधिक है। यही वजह है कि विभिन्न देश कोरोना से बचाव संबंधी नियमों में सख्ती कर रहे हैं और यात्रा प्रतिबंध लगाये जा रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस वेरिएंट को वेरिएंट ऑफ कंसर्न यानी चिंता का विषय बताते हुए इसका नाम ओमिक्रोन रखा है। संगठन ने इसे इसलिए चिंता का विषय कहा है कि इसमें संक्रमण का खतरा ज्यादा हो सकता है। हालांकि, अभी इस बात के ठोस प्रमाण नहीं मिले हैं।

वेरिएंट कैसे पनपा होगा

यह वेरिएंट कैसे पनपा होगा, इसका भी समुचित जवाब नहीं है। अनुमान है कि यह वेरिएंट ऐसे मरीज में विकसित हुआ होगा, जिसकी प्रतिरोधक क्षमता कमजोर होगी और वह लंबे समय तक संक्रमित रहा होगा। फिर दूसरे लोगों में फैल गया, लेकिन इस बार संक्रमण से मुकाबले को हम ज्यादा तैयार हैं। बड़ी संख्या में लोगों को कोरोना वैक्सीन लग चुका है। हाल में देश ने एक बार फिर एक दिन में वैक्सीन के एक करोड़ से ज्यादा खुराक देने का रिकॉर्ड बनाया है। देश में अब तक छह बार ऐसा हुआ है, जब एक दिन में एक करोड़ से ज्यादा टीके लगे हों।

ऑनलाइन गेमिंग का भी नियमन हो

• अभिजीत मुखोपाध्याय

क्रिप्टोकरेंसी पर कानूनी पहल की चर्चा के बीच ऑनलाइन गेमिंग के नियमन और कराधान पर बहस हो रही है। कुछ दिन पहले राज्यसभा में भाजपा सांसद सुशील कुमार मोदी ने यह मसला उठाया था और उपराष्ट्रपति-सह-सभापति एम वेंकैया नायडू ने भी उनकी चिंता से सहमति जताते हुए सरकार को इसका संज्ञान लेने को कहा था। इस संदर्भ में सबसे पहले यह रेखांकित करना जरूरी है कि नियमन और कराधान दो अलग-अलग क्षेत्र हैं और उन्हें एक साथ रखकर नहीं देखा जाना चाहिए।

जिस प्रकार से व्यापक डिजिटल नियमन का होना आवश्यक है, उसी तरह ऑनलाइन गेमिंग का नियमन भी किया जाना चाहिए। विभिन्न ऑनलाइन गतिविधियों और सेवाओं की तरह इसका भी विस्तार हो रहा है।

जहां तक ऐसे खेलों का सवाल है, जिनमें भागीदारी करने के लिए न तो खेलनेवाले को कोई राशि देनी पड़ती है और न ही ऐसे गेमिंग पोर्टल से कोई पुरस्कार हासिल होता है, वहां कराधान का मामला आसान नहीं है। यदि उस खेल में अश्लीलता है, उससे हिंसा या किसी समाज विरोधी प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है या देश के कानूनों का उल्लंघन किया जाता है, तो इनकी रोकथाम के लिए पहले से ही वैधानिक प्रावधान हैं।

इन प्रावधानों को प्रभावी ढंग से लागू करने की दिशा में ठोस प्रयास होने चाहिए। खेल के ऐसे चिंताजनक आयामों को कराधान से नियंत्रित या प्रतिबंधित नहीं किया जा सकता है। ऑनलाइन गेमिंग भले ही अपेक्षाकृत नया क्षेत्र है, लेकिन वीडियो गेमिंग तो बड़े शहरी क्षेत्रों में लगभग तीन दशक से खेली जाती रही है और धीरे-धीरे उसका विस्तार छोटे शहरों और कस्बों तक होता गया। उसके आर्थिक और सामाजिक प्रभाव को लेकर भी लंबे समय से चर्चा होती रही है। इस पृष्ठभूमि में ऑनलाइन गेमिंग पर नियंत्रण करना मुश्किल काम नहीं हैं।

ऑनलाइन गेमिंग की लत से निपटने का मसला एक गंभीर विषय है और इसे काबू में करना आसान नहीं है क्योंकि इंटरनेट पर तमाम गतिविधियों और उसके इस्तेमाल को लेकर भी ऐसी चिंताएं हैं। डिजिटल तकनीक हमारे जीवन के हर क्षेत्र में गहरे तक पैठ बना चुकी है। इसलिए लत को रोक पाना नियमन कर देने और कर लगा देने भर से ही संभव नहीं है।

इसके लिए बड़े पैमाने पर जागरूकता का प्रसार किया जाना चाहिए ताकि लोग संयमित ढंग से ऑनलाइन खेलों में भागीदारी करें और उसकी लत की चपेट में न आयें। हमने पहले पबजी, ब्लू व्हेल जैसे बेहद हिंसक खेलों के असर को देखा है। ऐसे कई खेलों पर पाबंदी लगानी पड़ी। लेकिन समूचे गेमिंग के साथ ऐसा नहीं किया जा सकता है। इंटरनेट की गतिविधियों पर बड़े पैमाने पर पाबंदी लगा पाना संभव भी नहीं है।

एक खेल को रोका जायेगा या उस पर बड़ा कर लगाया जायेगा, तो कोई और गेमिंग पोर्टल या एप आ जायेगा और यह सिलसिला चलता रहेगा। नियमन के स्तर पर यह हो सकता है कि मौजूदा कानूनों को ठीक से लागू किया जाये और उनमें जरूरत के मुताबिक संशोधन किये जायें। इस क्रम में यह भी उल्लिखित करना जरूरी है कि सिक्किम, गोवा, नागालैंड, मेघालय आदि कुछ राज्यों में ऑनलाइन खेलों पर नियंत्रण रखने के कानून हैं। इसी तरह लॉटरी से जुड़े वैधानिक प्रावधान भी हैं। उनके अनुभवों के आधार पर संशोधन करने या नये कानून बनाने का काम किया जा सकता है।

ऑनलाइन खेलों को आम तौर पर दो श्रेणियों में बांटा जाता है- एक, जिनमें कौशल की जरूरत होती है और दूसरे, जिनमें संयोग से फैसला होता है, जैसे- रमी, पोकर आदि। यदि हम इनके लिए एक या दो तरह के वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) लगाते हैं, तो उसका निर्धारण करना आसान नहीं है क्योंकि दोनों तरह के खेलों में लोग पैसा लगाते हैं और जीतने की आशा करते हैं।

इन खेलों के कारोबार में लगी कंपनियों को खेलनेवाले के पंजीकरण शुल्क से कमाई होती है। उस कमाई पर आयकर समेत अन्य कराधान व्यवस्थाएं पहले से हैं। उसमें यह देखा जाना चाहिए कि कंपनियां ठीक से अपना टैक्स भरें। ऐसा न करने पर दंडित करने के कानून भी अस्तित्व में हैं।

संयोग के आधार पर जीते जानेवाले खेलों से खिलाड़ी को मिलनेवाली राशि पर भी टैक्स लगाया जाता है। ऐसा नहीं है कि उसे पूरी राशि मिलती है। उदाहरण के तौर पर, अगर किसी को लॉटरी से एक लाख रुपये मिलते हैं, तो उसे एक ठीक-ठाक हिस्सा कर के रूप में चुकाना पड़ता है। इन व्यवस्थाओं का दायरा बढ़ाकर ऑनलाइन खेलों पर लागू किया जा सकता है। डिजिटल लेन-देन होने से भुगतान को छिपाना अब बेहद मुश्किल है।

दो माह पहले ऐसी खबरें आयी थीं कि सरकार इन खेलों की श्रेणी के आधार पर 18 और 28 फीसदी जीएसटी लगाने पर विचार कर रही है। उम्मीद है कि जीएसटी काउंसिल इस संबंध में जल्दी ही किसी ठोस फैसले पर पहुंचेगी। गेमिंग के कारोबारी मौजूदा 18 फीसदी दर को जारी रखने की पैरोकारी कर रहे हैं।

जो भी फैसला हो, बहुत सोच-विचार कर लिया जाना चाहिए। गेमिंग ही नहीं, समूचे डिजिटल कारोबार और उसके कराधान की ठीक से समीक्षा जरूरी है। कंपनियां कानूनी खामियों का भी फायदा उठाती हैं, जिसका नकारात्मक असर कर संग्रहण पर होता है। इसे रोका जाना चाहिए। गेमिंग की लत निश्चित ही चिंताजनक है और इस संबंध में समाजशास्त्रियों और मनोचिकित्सकों की राय पर गौर किया जाना चाहिए।

‘रोको टोको अभियान’ की शुरूआत

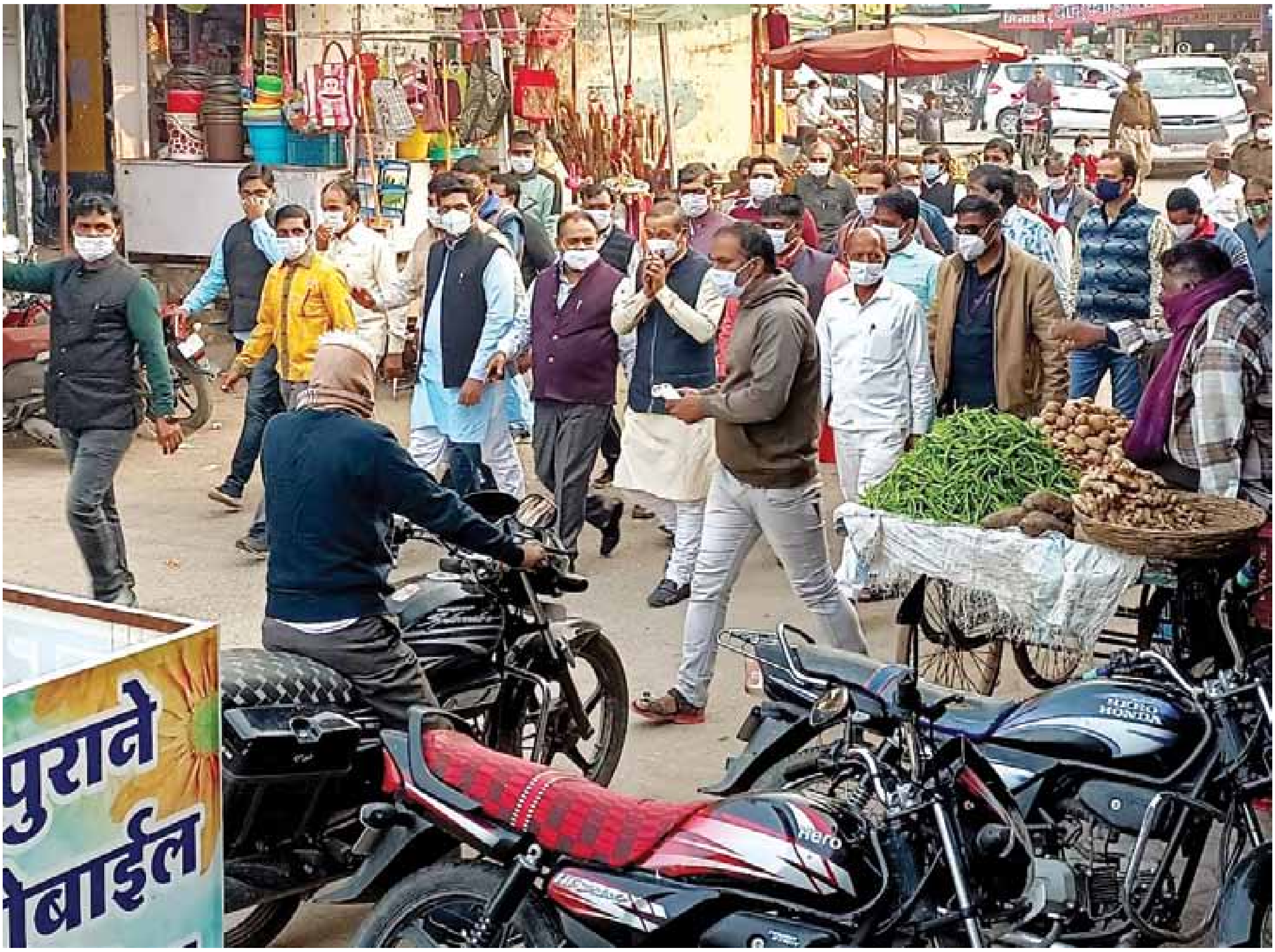

जावद कैबिनेट मंत्री ओमप्रकाश जी सकलेचा ने कोराना के प्रभाव से बचाव के लिए ‘ रोको टोको अभियान’ की शुरुआत जावद नगर भ्रमण कर की सभी को मास्क पहनने एवं वैक्सीन लगवाने का संदेश दिया ।

राजेंद्र मेडिकल स्टोर डबरा की ओर से
समस्त डबरा वासियों को दीपावली की

बहुत बहुत
शुभकामनाएं

प्रो. नारायण दास गुप्ता

देश भक्ति और देश की सेवा ही सर्वोच्च है, भारत माता के लिए सर्वस्व अर्पण

सीआरपीएफ के ग्वालियर ट्रेनिंग सेंटर के आईजी पीके पांडे

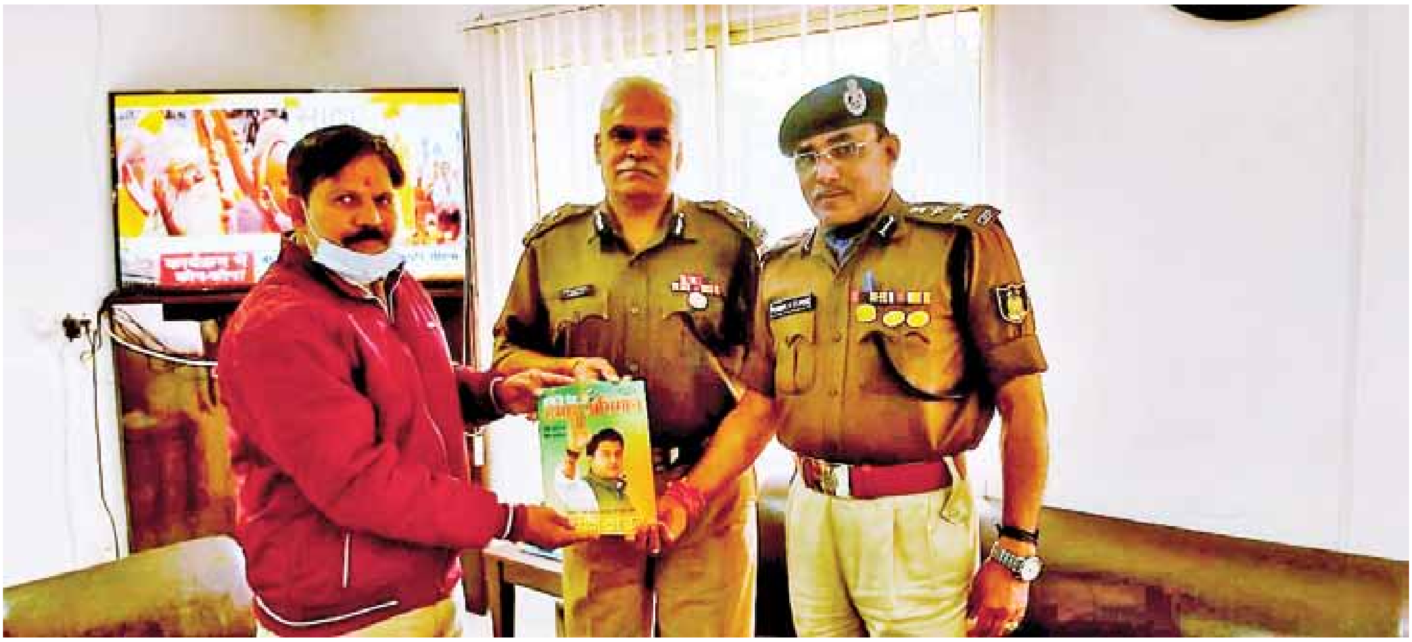

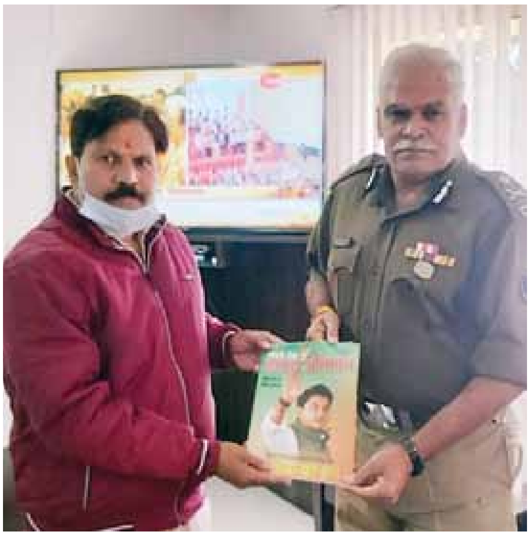

ग्वालियर सी आर पी एफ के ट्रेनिंग सेंटर के आईजी पी.के. पांडे ने हमारा देश हमारा अभिमान पत्रिका के सम्पादक मनोज चतुर्वेदी के साथ विशेष चर्चा करते हुए कहा कि, देश भक्ति और देश सेवा ही सर्वोच्च है हमारे लिए, भारत माता के लिए सर्वस्व अर्पण है। ज्ञात हो आई जी पांडे अपनी ईमानदारी, देश भक्ति और कर्त्तव्य निष्ठ व्यक्ति के रूप मे जाने जाते है। आप विषम परिस्थितियों मैं भी कार्य कुशलता से कार्य करने के लिए जाने जाते है। आपने जम्मू कश्मीर मैं भी सी आर पी एफ के कई बड़े पदों पर अपने नेतृत्व की छाप छोड़ चुके है। आई जी पांडे ने 370 धारा के समाप्ति की घोषणा से पहले इन्हें सीआरपीएफ के 2002 से 2007 तक श्रीनगर मैं बटालियन का नेतृत्व किया इसके वाद इन्हें पुनः 2011 से 2013 तक श्रीनगर सीआरपीएफ बटालियन के डी आई जी की जिम्मे दारी दी गई जिसे इन्होंने बहुत कुशलता से निभाया। इसके बाद पुनः 2016 मैं 3 से 4 महीने डीआईजी ऑपरेशन सीआरपीएफ श्रीनगर की जिम्मेदारी संभाली उसके उपरांत आप 2019 से 2020 तक आई जीसीआरपी बटालियन श्रीनगर मैं दायित्व निभाया। ओर वर्तमान मे 2021 से ग्वालियर सी आर पी एफ के ट्रेनिंग सेंटर पनिहार मैं आई जी के रूप मे कार्यरत है। आपने बताया कि जब यह सहायक कमांडेंट थे और वेसिक प्रशिक्षण के दौरान पंजाव मैं पोस्टिंग हुई। उसी समय हाइवे पेट्रोलिंग करते समय अमृतसर जिले के एक स्थान कुचियाँ पर इनके ऊपर एम्बुश (हमला) हुआ आतंकवादियों के द्वारा जिसमे आपके दोनों पैरों मैं गोलियां लगी जिसके कारण पांडे जख्मी हो गए। और स्वस्थ होने के बाद इनको पुनः जिम्मेदारी मिली और इनके द्वारा उस क्षेत्र के आतंकवादी ग्रुप का सफाया किया गया। बर्तमान मैं भी इनको चलने मैं दोनों पैरों मैं कष्ट होता है खासकर सर्दियों मैं। प्रशिक्षण मैं और सुधार के साथ देने का प्रयास किया जा रहा है। आपके नेतृत्व मैं बृक्ष ट्रेनिग कैम्प मैं 5 से 10 लाख वृक्षों को लगाया गया है। यहाँ तक कि इन वृक्षों मैं रुद्राक्ष के भी वृक्ष लगाए गए। आपके कार्य और मधुर स्वभाव के कारण श्रीनगर मैं पांडे पार्क बनाया गया है। देश सेवा ही सर्वोपरि सेवा है जहाँ मौका मिले वहाँ करना चाहियें।

जय हिन्द -जय भारत

वंदेमातरम, आईजी, पीके पांडे ग्वालियर, सीआरपीएफ

सोयतकलां पुलिस को मिली सफलता

अंतरराज्यीय गिरोह से 8 क्विंटल 80 किलो मादक पदार्थ गांजा किया...

पुलिस मुख्यालय भोपाल एवं पुलिस महानिरीक्षक श्री संतोष कुमार सिंह उज्जैन जोन उज्जैन के निर्देशानुसार शराब माफियाओं, गौ तस्करों एवं अवैध मादक पदार्थों की तस्करी करने वालों के विरुद्ध कार्यवाही किए जाने हेतु निर्देशित किया गया था जिसके पालन में पुलिस अधीक्षक श्री राकेश सगर जिला मालवा के निर्देशन में एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री नवल सिंह सिसोदिया तथा एसडीओपी श्री नाहर सिंह रावत के मार्गदर्शन में, थाना प्रभारी श्री हरीश जेजूरकर के नेतृत्व में थाना सोयतकला पुलिस टीम को अंतर्राजीय गिरोह को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त हुई है। सोयत कलां पुलिस ने 8 क्विंटल 80 किलो मादक पदार्थ गांजा जप्त कर एक आरोपी को मय कंटेनर के गिरफ्तार कर एनडीपीएस एक्ट में प्रकरण पंजीबद्ध किया है। आरोपी से प्रारंभिक पूछताछ करने पर अवैध मादक पदार्थ गांजा को तेलंगाना राज्य से लाना बताया जा रहा है। आरोपी को विस्तृत पूछताछ के लिए न्यायालय पेश किया जाएगा।

सफलता

थाना सोयतकलां पुलिस ने 8 क्विंटल 80 किलो मादक पदार्थ (गांजे) के साथ एक आरोपित को गिरफ्तार कर

सोयत पुलिस ने 8 क्विंटल 80 किलो गांजे के साथ एक आरोपी मय कंटेनर के गिरफ्तार कर एनडीपीएस एक्ट में प्रकरण पंजीबद्ध किया

एनडीपीएस एक्ट के तहत प्रकरण पंजीबद्ध किया गया। जप्त मादक पदार्थ गांजे की कीमत लगभग एक करोड़ सत्तावन लाख रुपये बताई जा रही है। 8 क्विंटल 80 किलो ग्राम गांजा की संभवत सोयतकला पुलिस की पहली और सबसे बड़ी कार्रवाई बताई जा रही है।

मादक पदार्थ की कीमत एक करोड़

पुलिस अधीक्षक श्री राकेश कुमार सगर ने जानकारी देते हुए बताया कि मुखबिर से सूचना मिली थी कि एक कंटेनर में मादक पदार्थ थाने की ओर आ रहा है जिस पर तुरंत थाना प्रभारी सोयत के नेतृत्व में टीम गठित कर मुखबिर द्वारा बताई गई जानकारी अनुसार वाहन चेकिंग की गई तो उसमें से 8 क्विंटल 80 किलोग्राम मादक पदार्थ गांजा होना पाया गया जिसकी कीमत लगभग एक करोड़ सत्तावन लाख रुपये है। पुलिस ने जप्त मश्रुका 8 क्विंटल 80 किलो ग्राम अवैध मादक पदार्थ गांजा एक कंटेनर क्रमांक एमपी 09 जीजी 3674 जप्त किया एवं वाहन चालक आरोपित विष्णु प्रसाद पिता किशन उर्फ राम किशन दांगी उम्र 34 वर्ष निवासी खेजरपुर थाना रायपुर जिला झालावाड़ राजस्थान के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत प्रकरण पंजीबद्ध किया गया एवं मामला विवेचना में लिया गया।

इनकी रही महत्वपूर्ण भूमिका

उक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी हरीश जेजूरकर उप निरीक्षक दिलीप कटारा सहायक उपनिरीक्षक सुमेर सिंह मीणा रामप्रकाश पुष्पद प्रधान, आरक्षक ऋतुराज सिंह, आरक्षक संजय दांगी दिनेश गुर्जर विश्वनाथ सिंह झाला राकेश राठौर होकम दांगी अमित शर्मा रामचंद्र दांगी हेमंत पाराशर बनवारी वर्मा राजेश कुमार की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

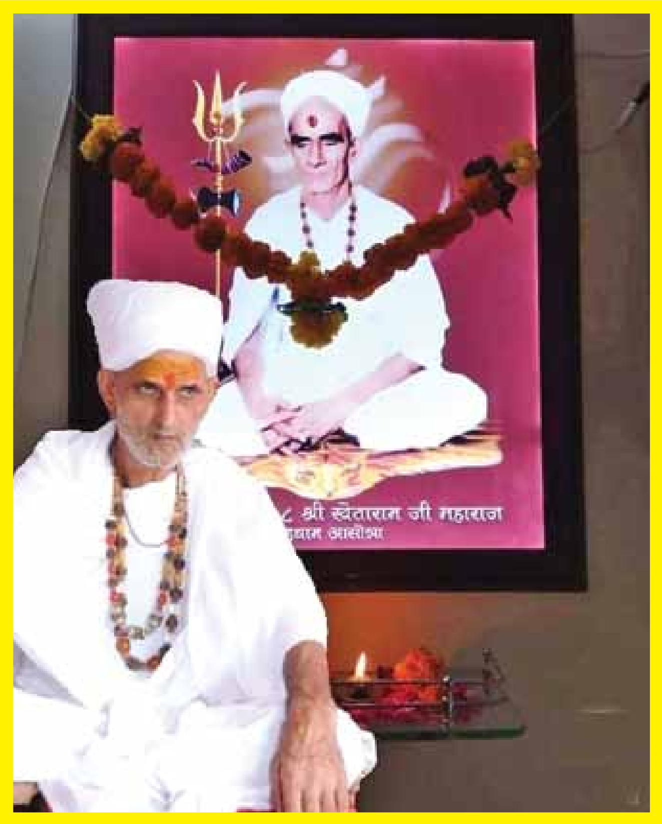

जोधपुर मिष्ठान्न भंडार डबरा की ओर से समस्त डबरा वासियों को दीपावली की

बहुत बहुत शुभकामनाएं

हमारे यहाँ शुद्ध एवं ताजी मिठाईयां सदैव उपलब्ध रहती है

: शुभकामनाएं कर्ता :

प्रो. महेंद्र एवं समस्त परिवार

सफलता और विफलता जीवन का हिस्सा है...

क्या कभी हम इन बातों की तरफ ध्यान देते हैं कि मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से सफलता के मायने क्या हैं? हम क्यों हर बार, हर जगह सफल ही होना चाहते हैं। दरअसल यह हमारा 'बिलीफ सिस्टम' होता है जिसके कारण हम यह मान लेते हैं कि हम सफल हैं और हमारे बच्चों को भी सफल होना चाहिए। या हम यह मान लेते हैं कि हम नाकाम हैं लिहाजा ये सुनिश्चित कर लेना चाहते हैं कि हमारे बच्चे नाकाम न हो जाएं।

यह तो सच ही है कि प्रत्येक व्यक्ति सफल होना चाहता है। असफलता किसी को पसंद नहीं। लेकिन शायद ही हमने इस ओर ध्यान दिया हो कि सफलता और विफलता घटनाओं को इंगित करती हैं व्यक्ति को नहीं। या तो हम कुछ करते हुए सफल होते हैं, या हम किसी काम में विफल हो जाते हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि हम पूरी तरह से सफल हैं या पूरी तरह से विफल। हमारे कुछ पहलू ऐसे हो सकते हैं जिनमें हम पूरी तरह सफल न हों या किसी में पूरी तरह विफल न हों। एक सफलतम व्यक्ति का बड़ा बैंक बैलेंस हो सकता है, लेकिन साथ ही यह भी संभव है कि वह एक अभिभावक, पति या पत्नी या किसी अन्य रिश्ते में पूरी तरह नाकाम हो। इसी तरह कोई व्यक्ति किसी व्यवसाय में पूरी तरह नाकाम हो, लेकिन अविश्वसनीय रूप से वह अच्छा अभिभावक साबित हो सकता है।

अगर बच्चा परीक्षा में फेल हो जाता है तो हम उसे नाकाम कहते हैं, हम इस तरह से पेश आते हैं जैसे कि वह जिंदगीभर नाकाम ही रहेगा। यानी एक बार मिली असफलता को अस्थायी मान बैठते हैं। हो सकता है एक परीक्षा में फेल बच्चा आगे सफलता की इबारत लिखे। हम यह मानने के लिए तैयार नहीं होते कि बच्चे खेल में अच्छे हो सकते हैं, वे बहुत बड़े कलाकार हो सकते हैं, अच्छे वक्ता या रचनात्मक समस्या को हल करने वाले हो सकते हैं। वे ईमानदार व मददगार हो सकते हैं। उनमें व्यक्ति के रूप में अनोखे गुण हो सकते हैं। हम इन सब चीजों को नजरअंदाज कर देते हैं और उन पर विफलता

का ठप्पा लगा देते हैं सिर्फ इसलिए कि वह एक परीक्षा में फेल हुए हैं।

अपने बच्चों को उनके तमाम सामर्थ्यों और कमजोरियों के साथ, समग्रता में स्वीकार करने के लिए यह समझने की जरूरत है कि सफलता और विफलता, घटनाओं को परिभाषित करने वाली शब्दावलियां हैं, लोगों को नहीं। ध्यान रहे कि कुछ विफलताओं का सामना हमें और हमारे बच्चों को निश्चित रूप से करना ही पड़ेगा। हमें एक अभिभावक होने के नाते बच्चों को ऐसे जीवन कौशलों से सुसज्जित करना चाहिए जिनको वे नाकाम होने की स्थिति में इस्तेमाल कर सकें और परिस्थितियों से निपट सकें। हमें बतौर अभिभावक, विपरीत हालात के सामने साहस व समृद्धि के सामने विनम्रता के गुणों को विकसित करना चाहिए। तभी हम अपने बच्चों को उनके जीवन में आने वाली तमाम चुनौतियों और खुशियों, सफलताओं और विफलताओं का सामना कर पाने लायक बना पाएंगे।

जीवन में सफलता-असफलता बहुत महत्वपूर्ण नहीं है। यह मायने नहीं रखता कि आप कितनी बार असफल हुए हैं, दुनिया सिर्फ परिणाम देखती है, कोशिश नहीं। कभी-कभी सफलता हमारी नाकामी, गलती व अनचाहे अपराध की भी ढाल बन जाती है। अतः सफल होना व संतुष्ट होना दो भिन्न बातें हैं। यदि हम अपने मन के अनुसार कोई भी कार्य करके खुश हैं, तो वह संतुष्टि है और यदि हम किसी बड़े पद, प्रभाव या प्रतिष्ठा से समाज में रुतबा बनाए हुए हैं, तो यह कामयाबी है। जरूरी नहीं कि कामयाबी से आप संतुष्ट ही हों। संतुष्टि में 'अर्थ' के लिए कोई स्थान नहीं होता है। जीवन हमारा है व निर्णय भी हमारे हैं। तय हमें करना है कि जीवन कैसे जीयें? कामयाब होना है या संतुष्ट? जीवन का असली आनन्द सिर्फ इस बात में है कि लोग हमें पैसे, प्रभाव या पद से प्रभावित होकर अग्रिम पंक्ति में स्थान न दें, बल्कि हमारी योग्यता व समाज के प्रति हमारे योगदान के बलबूते पर अग्रिम पंक्ति में स्थान मिले।

पारस डेयरी एवं पारस डेयरी के समस्त स्टॉफ, परिवार की ओर से समस्त डबरा वासियों को

दीपावली की शुभकामनाएं...

योगेश कुमार सैनी डेयरी इंचार्ज

रहवासियों के द्वारा स्वच्छता के लिए धन्ना सेठों के खिलाफ राम धुन बजाई

• मनोज चतुर्वेदी

ग्वालियर शहर को स्वच्छ रखने के लिए नगर निगम के साथ में जहां आमजन एवं जुड़ते जा रहे हैं वहीं पर मानव कुष्ठ आश्रम के रहवासी भी स्वच्छता के लिए शहर के धन्ना सेठों को संदेश दे रहे हैं । आज दिनांक 6 दिसंबर 2021 को मानव कुष्ठ आश्रम के रहवासी के द्वारा सर्राफा बाजार में नगर निगम के अपर आयुक्त मुकुल गुप्ता , जू अधिकारी गौरव परिहार, स्वास्थ्य अधिकारी भीष्म पमनानी अतिक्रमण अधिकारी एवं अन्य नगर निगम के अमले के साथ में जाकर सर्राफा बाजार डीडवाना ओली के विभिन्न व्यवसायिक प्रतिष्ठानों के मालिकों को स्वच्छता का संदेश दिया। इस संबंध में राजू अग्रवाल दुकान दार डिडबाना ओली, अभय कोठारी संस सराफा बाजार, देवेंद्र गुप्ता चाट बाला सराफा बाजार, गोपाल अग्रवाल बर्तन वालेसराफा बाजार एंड संस एवं अन्य व्यवसायिक प्रतिष्ठान ओके यहां पाई गई गंदगी के लिए नगर निगम के द्वारा जुर्माना ना करके कुष्ठ आश्रम के रह वासियों के साथ में मिलकर राम धुन बजाई ।

साथ ही उनको दो प्रकार के डस्टबिन रखने सूखा एवं गीला कचरा अलग-अलग डस्टबिन में डालें पॉलीथिन का उपयोग न करने एवं कचरा इधर-उधर ना फैलाने के लिए समझाइश दी गई । निगम नगर निगम के अमले के साथ में मानव कुष्ठ आश्रम के रहवासी श्री लक्ष्मण, सलीम, राम, बिरज, श्यामलाल, मुख्तार भी उपस्थित थे।

सीमा सुरक्षा बल : अपना 57वां स्थापना दिवस मनाया गया

सीमा सुरक्षा बल का 57 वां स्थापना दिवस कल एक दिसंबर 2021 को मनाया। स्वतंत्रता के बाद देश की सीमाओं की देखरेख राज्य के सशस्त्र बलों द्वारा होती थी। 1962 के भारत -चीन युद्ध और तत्पश्चात कच्छ में पाकिस्तान की दखलंदाजी के बाद बदली परिस्थितियों में बल की स्थापना एक दिसंबर 1965 को प्रथम महानिदेशक आईपी केएफ रूस्तमजी के नेतृत्व में की गई। प्रारंभ में बल की स्थापना पाकिस्तान से लगती सीमाओं की निगरानी के लिये की गई।

बीएसएफ की शुरूआत में 25 बटालियनों के साथ हुई। इसमें मुख्यतः सशस्त्र पुलिस बल के ही कर्मी स्वेच्छा से शामिल हुये। समय के साथ सीमा सुरक्षा बल का काफी विस्तार हुआ , और आज इस बल की जनशक्ति 193 बटालियन तक पहुंच चुकी है। लगभग 7419.7 किलोमीटर लम्बी पाकिस्तान और बांग्लादेश की सीमाओं को सुरक्षित रखने की महती जिम्मेदारी इसके पास है। उत्तर की दुर्गम गगनचुम्बी हिमाच्छादित पहाडियों की हाड कंपाती ठंड, थार रेगिस्तान की चिलचिलाती धूप, पूर्वांचल की विषम परिस्थितियों व कच्छ की सपाट दलदली जमीन, सभी जगहों पर सीमा सुरक्षा बल के जवान दिन-रात विषम परिस्थितियों का पूरी जीवटता के साथ सामना कर देश की सीमाओं को सुरक्षित रखने के लिये अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को सर्वदा तत्पर खडे हैं। आज बीएसएफ के पास खुद का तोपखाना, जल शाखा तथा वायु शाखा है और विश्व में अपने प्रकार का इकलौता सीमा सुरक्षा बल है।

अपने 57 साल के गौरवमयी इतिहास में सीमा सुरक्षा बल की कई उपलब्धियां खास रही हैं। सीमाओं की सुरक्षा और सीमावर्ती निवासियों में विश्वास की भावना पैदा करना इस सोच के साथ बल का गठन किया गया था। इतिहास गवाह है कि बल ने अपने मूलभूत कसौटियों पर अपेक्षाओं से ज्यादा अपने आपको सर्वदा प्रमाणित किया है। अपने शैशवकाल में ही 1971 के युद्ध के दौरान सीमा सुरक्षा बल के योगदान को कोई भूल नहीं सकता। खुद तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री ने मुक्त कंठ से बल के योगदान और जवानों के बलिदान की प्रशंसा की थी। बीएसएफ ने 1971 में भारत.पाक युद्ध में सक्रिय हिस्सा लिया और 339 अलंकरण एवं वीरता मेडल प्राप्त किए। सन् 1999 में ऑप्स विजय फिर ऑप्स पराक्रम जैसी कठिन परिस्थितियों में सीमा सुरक्षा बल ने भारतीय सेना के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सरहदों पर मोर्चा संभाले रखा। Sandhyadesh

विगत वर्षों में पूर्वांचल में अलगाववाद, पंजाब और कश्मीर में आतंकवाद और वर्तमान में वामपंथी अतिवाद को नियंत्रित करने के संघर्ष में सीमा सुरक्षा बल के योगदान का देश साक्षी रहा है और अपनी उपलब्धियों से देश का मान बढाया है। इसके अलावा जब कभी भी देश को सीमा सुरक्षा बल की सेवाओं की जरूरत महसूस हुई है, तब अपनी उत्कृष्ट सांगठनिक कार्यक्षमता और जवानों के अप्रतिम जीवट और साहस की बदौलत सर्वदा अपेक्षाओं पर खरा उतरा है। साथ ही कम समय में अपनी एक विशिष्ट और विश्वसनीय पहचान बनाने में सफल रहा है। सीमा प्रबंधन के अलावा बल ने आंतरिक सुरक्षा ड्यूटी तथा आपदा प्रबंधन में भी अपना अहम योगदान दिया है।

बीएसएफ आज सीमाओं की सुरक्षा से लेकर काउंटर इमरजेंसी, आंतरिक सुरक्षा ड्यूटी तथा नक्सल विरोधी अभियान में अपना अहम योगदान दे रही है। पूरी दुनिया के सबसे बडे बॉर्डर गार्डिंग फोर्स का खिताब हासिल करने वाला यह बल अपने उत्कृष्ट सीमा प्रबंधन के लिये विश्व विख्यात है। देश की सुरक्षा की महती जिम्मेदारी बल के पास है। सीमा सुरक्षा बल देशहित को सर्वोपरि रखते हुए देश की सुरक्षा एवं विकास में बल के सभी कार्मिक अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान दे रहा है।

बीएसएफ अकादमी टेकनपुर में प्रशिक्षु सहायक कमाण्डेंटों की भव्य दीक्षांत परेड आयोजित

परेड में 61 प्रशिक्षु सहायक कमाण्डेंट शामिल हुए

• मनोज चतुर्वेदी

ग्वालियर 27 अक्टूबर 2021/ सीमा सुरक्षा बल अकादमी टेकनपुर में बुधवार को सीधी भर्ती के सहायक कमाण्डेंट बैच नं. 45 के राजपत्रित अधिकारियों की भव्य दीक्षांत परेड का आयोजन हुआ। दीक्षांत समारोह का आयोजन सीमा सुरक्षा बल के महानिदेशक श्री पंकज कुमार सिंह के मुख्य आतिथ्य में किया गया। इस अवसर पर एडीजी एवं निदेशक सीमा सुरक्षा बल अकादमी टेकनपुर श्री लालातेंदु मोहंती सहित सीमा सुरक्षा बल के अन्य अधिकारी, प्रशिक्षुओं के परिजन एवं गणमान्य नागरिक मौजूद थे। दीक्षांत परेड में शामिल 61 प्रशिक्षु राजपत्रित अधिकारियों ने महानिदेशक सीमा सुरक्षा बल श्री पंकज कुमार सिंह की मौजूदगी में संविधान, देश की एकता व अखण्डता एवं संप्रभुता बनाए रखने के लिये अपने आप को समर्पित करने की शपथ ली।

दीक्षांत परेड में शामिल हुए सभी प्रशिक्षु अधिकारियों ने सीमा सुरक्षा बल अकादमी टेकनपुर की प्रशिक्षण टीम के कुशल मार्गदर्शन में 53 सप्ताह का गहन व कठिन प्रशिक्षण में अपने आप को भट्टी में फौलाद की तरह तपाकर देश की रक्षा के लिये तैयार किया है। प्रशिक्षण के दौरान सभी प्रशिक्षुओं को देश की विभिन्न सीमाओं का दौरा भी करवाया गया है। जिससे वे अपने को सीमा की रक्षा के लिये तैयार कर सकें। आरंभ में मुख्य अतिथि ने शहीद स्मारक अजेय प्रहरी पर पुष्प चक्र अर्पित किया और शहीदों को श्रद्धांजलि देकर नमन किया। इसके बाद परेड मैदान पहुँचकर दीक्षांत परेड का निरीक्षण किया। साथ ही विभिन्न क्षेत्रों में अव्वल रहे प्रशिक्षु अधिकारियों को ट्रॉफियां वितरित कीं। मुख्य अतिथि श्री पंकज कुमार सिंह ने दीक्षांत परेड की भूरि-भूरि प्रशंसा की। साथ ही मुख्य प्रशिक्षकों, प्रशिक्षण टीम और प्रशिक्षु अधिकारियों को हार्दिक बधाई दी। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण टीम ने युवा अधिकारियों को सामान्य व्यक्ति से एक योग्य लीडर के रूप में निखारकर तैयार किया है। श्री सिंह ने प्रशिक्षु अधिकारियों के माता-पिता व अभिभावकों के प्रति भी धन्यवाद व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि आप सब ने अपने बच्चों को देश की सेवा के लिये समर्पित किया है।

महिला प्रशिक्षु अधिकारी को मिला ऑल राउण्ड सर्वोत्तम प्रदर्शन का खिताब

महिला प्रशिक्षु अधिकारी सहायक कमाण्डेंट सुश्री रितु ने ऑल राउण्ड सर्वोत्तम प्रदर्शन किया, उन्हें कुल तीन ट्रॉफियां दी थीं। यह उपलब्धि हासिल कर सुश्री रितु ने साबित किया कि महिलायें भी पुरूषों से किसी भी क्षेत्र में कम नहीं हैं। देश की सुरक्षा के लिये भी वे तत्पर हैं।

इन प्रशिक्षु अधिकारियों को मिली ट्रॉफी

सहायक कमाण्डेंड सुश्री रितु को ऑल राउण्ड सर्वोत्तम प्रदर्शन के लिये स्वार्ड ऑफ ऑनर, बाहरी प्रशिक्षण में सर्वोत्तम पुरस्कार के रूप में गृह मंत्री ट्रॉफी और निशानेबाजी में अव्वल रहने पर निदेशक ट्रॉफी प्रदान की गई। आंतरिक प्रशिक्षण में पहले स्थान पर रहे सहायक कमाण्डेंट श्री रंजीत सिंह को महानिदेशक ट्रॉफी और ड्रिल में अव्वल रहे सहायक कमाण्डेंट श्री आशुतोष गौतम को निदेशक बेटन ट्रॉफी प्रदान कर सम्मानित किया गया।

बैंड व डॉग शो और घुड़सवारी का रोमांचक प्रदर्शन भी हुआ

दीक्षांत परेड के समापन सत्र में सीमा सुरक्षा बल के जाबांजों द्वारा शानदार बैंड शो, डॉग शो व घुड़सवारी का प्रदर्शन कर सभी को रोमांचित कर दिया।

रतलाम में क्रेडिट आउटरीच अभियान के मेगा कैंप में स्व सहायता समूह ऋण वितरित

रतलाम प्रवास के दौरान राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति,म.प्र. के तत्वावधान में आयोजित 'क्रेडिट आउटरीच अभियान' के मेगा कैंप में शामिल हुआ। साथ में श्री एम वी राव जी(एमडी एंड सीईओ ऑफ सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया), कलेक्टर श्री कुमार पुरुषोत्तम जी, विधायक श्री चेतन कश्यप जी एवं मंडल अध्यक्ष श्री सचिन गोखरू जी उपस्थित रहे ।

मा. शिवराजसिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

मा. नरोत्तम मिश्रा
गृह मंत्री, मध्यप्रदेश

मा. भूपेंद्र सिंह
नगर विकास मंत्री, मध्यप्रदेश

प्रशासक
बृज मोहन आर्य

कौशलेंद्र विक्रम सिंह
कलेक्टर, ग्वालियर

पीयुष श्रीवास्तव
सीएमओ नगर परिषद

पीछोर नगरपरिषद की ओर से समस्त पिछोर नगर वासियों को दीपावली की शुभकामनाएं देते हुए यह अपील करती है...

1. स्वस्थ रहने के लिए स्वच्छता का ध्यान रखे साथ ही कचड़ा नगर परिषद की कचरा लेने आने बाली गाड़ी में डाले।

2. डेंगू बीमारी डेंगू मच्छरों के काटने से होती है इसलिए डेंगू विमारी से बचने के लिए , आस पास गदंगी ना फैलाये, और ना आस पास गंदे पानी को एकत्रित होने दे। क्योकि मच्छरों पनपने का ऐसे स्थान बहुत उचित होते है ।

3. कोरोना से बचने के लिए वैक्सीन अवश्य लगवाए जिन्होंने प्रथम डोज लगवा लिया है वो दूसरा डोज अवश्य लगवाये, जिनको प्रथम डोज नही लगा है वो अपने आधार कार्ड को लेकर अस्पताल और वैक्सीनेशन शिविर मैं जाकर रजिस्ट्रेशन कराए और तुरंत वैक्सीन लगवाये। जिससे आप भी सुरक्षित रहे साथ मैं माता पिता और परिवार को सुरक्षित रखे।

4. पिछोर नगर परिषद हमेशा आपकी सेवा मैं तत्यपर्य है आप भी नगर परिषद का सहयोग करे जिससे पीछोर नगर परिषद का विकाश हो सके।

5. पेड़ पौधों को अवश्य लगाएं।

6. करों, नलों के विल का भुगतान अवश्य करें ।

बॉलीवुड मे हो रही है हिन्दुओं के खिलाफ साज़िश..?

मनोज चतुर्वेदी, संपादक

जब से हिंदुस्तान मे फिल्म बननी शुरु हुई थी तो दादा साहब फाल्के जिन्हे हिंदी फिल्मो का जनक कहा जाता है सत्य हरीशचंद्र से की थी, और फिर राम राज्य, शिव महिमा, वामनअवतार, विष्णु महिमा, सती अन्सुईया, जैसी फिल्में बनती थी, धीरे धीरे लोग सिनेमा की और आकर्षित हुए, और अभिनय की ओर लोगों का रुझान हूआ, पहले महिला पात्र की भुमिका पुरुष ही निभाया करते थे, लेकिन कुछ निर्माता-निर्देशक ने तबयाफ को सिनेमा मे काम करने को राजी कर लिया, इद्तीश ईरानी की आलम आरा से संगीत और संवाद शुरु हुआ, फिर दौर शुरु हुआ बंगाल के फिल्म निर्देशक भी अपना जलवा दिखाने लगे देवकी बोस, नितिन बोस जैसे निर्देशक सामने आये', नल दमयंती ' बंगाली की पहली फिल्म थी, जितनी भी फिल्म बन रही थी सभी पौराणिक कथाओं पर बन रही थी, फिर, 'जागृति' आई फिर देश प्रेम से ओतप्रोत सिनेमा आनी लगी, कोई भेद भाव ना था, हर जात और धर्म के लोग आगे आ रहे थे, सन्त कबीर, सन्त तुकाराम जैसी फिल्मों का मराठी और हिंदी मे बन रही थी, लेकिन बाबजूद इसके फ़िल्म मे जो नायक या नायिका आरहे थे भले ही वोह मज़हब से मुस्लिम थे, पर नाम हिन्दू का रखते थे, यूसफ़ खान दिलीप कुमार बन कर आये, मीना कुमारी, मधुबाला, जो मुस्लिम थी उन्होने हिंदी नाम रखा और नाम कमाया, सिनेमा लोगो के दिलो दिमाग में छआने लगा, लोग फिल्मो के दीवाने होने लगे, समाज मे बदलाव आने लगा, लोग फिल्म के नायक नायिका को अपना आदर्श मानने लगे, उनकी तरह की लिबास,, और हियेर स्टायल रखने लगे, हिन्दू हीरो, मुस्लिम अभिनेत्री से शादी करने लगे, इस्का असर लोगो पर भी पडने लगा, लेकिन अब लगता है की इसके पीछे सोची समझी साजिश थी, फिल्म इन्डस्ट्री मे पुरी तरह से दबदबा कायम करने का, ऐसे वक़्त मे एक नई लेखक निर्देशक की आई, और उसने फिल्म मे एक नई शुरुआत की, अचानक मदिरो के पुजारी को ढोंग--पाखंडी और चोर, बलात्कारी दिखाया जाने लगा, ठाकुर जमींदार को जुल्मी बताया जाने लगा, घर मे काम करने वाला नौकर पहले राम और फिर रामू हो गया, हल्वाई लखन हो गया, और रहींम और अब्दुल चचा सच्चे और ईमानदार बन गये, हिन्दू हीरौ नास्तिक हो गया, दिवार का विजय को भगवान पे भरोसा नही रहा, लेकिन कुली का काम करते हूए उस्से बिल्ला 786 मिल जाता है, और वोह उस पर यकिन करता है, जब तक वोह उसके साथ रह्ता है, उसे कुछ नही होता, और जैसे बिला गिरता है उसे गोली लग जाती है, ऐसा क्यूँ, कभी हमने गौर नही किया, लेकिन धीरे धीरे ये ज़हर घोला गया, उन्नीस बीस फिल्म मे कादर खान का संवाद को बार बार दुहराया गया, खान का बच्चा कभी झट नही बोलता, हालांकी जितने भी भजन लिखे जाते सब मुस्लिम शायर ने लिखे संगीत भी मुस्लिम संगीतकारो ने दिया, लेकिन एक समय ऐसा आया की, भजन गायब हो गये और हर फिल्म मे कब्बाली सुनाई देने लगा, मुहब्बत वाले गीत मे भी पीछे से मौला मौला आने लगा, और फिर हिन्दू नाम की जगह फिरोज खान, अकबर खान, से शुरु हुआ करवा शाहरुख, सलमान, और आमिर से होता हुआ सैफ, और इमरान तक आ गया, और बॉलीवुड मे खान छा गया, और अब हिन्दू अभिनेत्री उनसे, शादी करने लगी, समाज मे इसका असर पडा, और हिन्दू लडकियो ने मुस्लिम से शादी करना शुरु कर दिया, लव जिहाद आज सबसे बड़ी समस्या है!

कुछ फिल्मकारो ने फिर हिम्म्त दिखा रहे है, तानजी, बाहुबली, और पृथ्वीराज चौहान, जैसी फिल्में आ रही है, मुस्लिम समाज को आइना दिखाया जा रहा है, उन्हें आतक्वादी दिखाया जा रहा है, लेकिन अब भी मुस्लिम के खिलाफ बोलने मे डरते है, आज भी मौला गीत हिट होते है, मुझे फर्क नही, पर भजनो का आना जरुरी है, हिन्दुतांन के हिन्दू को जगना जरुरी है, सिनेमा मे सच दिखना ज़रुरी है, हिन्दू को अगर कोई गलत दिखाता है तो विरोध ज़रुर करे इस बात की तह तक पहुँचने के लिए हमने फिल्म उधोग से जुडे कई लोगो से बात की लेकीन लोग सत्य बोलने से कतराते दिखे, धार्मिक फिल्मो से अपनी पहचान बना चुके सचिन्द्र शर्मा, जिन्होने 'माय फ्रैंड गणेश' की सीरिज लिखी है और,, मै कृष्णा हूँ, सत्य साई बाबा, सवरिया, साई बाबा जैसे फिल्म लिखी है उनका कहना है की जिन मुद्दो को आज उठाया जा रहा है, हमने बचपन मे देखी थी लेकिन तब हमने भी गौर नहीं किया था, लेकिन अब जब चीज़ो को तथ्यों के साथ कहा जा रहा है, तो लगता है की यहां भी कुछ संकीर्ण मानसिकता के लोग थे और है जो आज भी इस तरह की हरकत करने से बाज़ नही आते, लेकिन अब बदलाव आ रहा है, धर्म और देश के बारे लोग खुल कर बात करने लगे है, बॉलीवुड मे भी दो विचारधारा के लोग है।

तानसेन समारोह-2021

तानसेन समारोह और शहर के पर्यटन स्थलों को जोड़कर विशेष पैकेज बनाएं

संभाग आयुक्त श्री सक्सेना ने प्रचार-प्रसार समिति की बैठक में दिए निर्देश

• विशेष संवाददाता मनोज चतुर्वेदी

तानसेन समारोह को जोड़ते हुए विशेष टूरिज्म पैकेज तैयार कराएँ, जिससे स्थानीय टूरिज्म को बढ़ावा मिले। साथ ही तानसेन समारोह के बारे में प्रचार-प्रसार हो। इस आशय के निर्देश संभाग आयुक्त श्री आशीष सक्सेना ने तानसेन समारोह-2021 के प्रचार-प्रसार के लिये गठित समिति की बैठक में संबंधित अधिकारियों को दिए। उन्होंने कहा तानसेन समारोह के बारे में प्रदेश के बाहर प्रचार-प्रसार की योजना तैयार कर उसे मूर्तरूप दें।

शुक्रवार को यहां मोतीमहल स्थित मानसभागार में आयोजित हुई बैठक में संभाग आयुक्त श्री सक्सेना ने कहा कि इस प्रकार के टूरिज्म पैकेज तैयार किए जाएं, जिसके जरिए पर्यटक महाराज बाड़ा की फसाड़ लाइटिंग, डिजिटल म्यूजियम व शहर के अन्य पर्यटन स्थलों को देखने के बाद तानसेन समारोह का भी आनंद ले सकें। उन्होंने कहा शहर के होटल ग्रुप व टूर ऑपरेटर का भी इसमें सहयोग लें। साथ ही व्यापारिक व सामाजिक संगठन, बीएसएफ, एयर फोर्स व सीआरपीएफ सहित अन्य सरकारी और गैर सरकारी संगठनों को भी इन टूर पैकेज के बारे में बताएं। श्री सक्सेना ने जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला-बाल विकास श्री राजीव सिंह एवं स्मार्ट सिटी के जनसंपर्क अधिकारी श्री मनीष मिश्रा को लोकल टूरिस्ट पैकेज का समन्वय करने की जिम्मेदारी सौंपी है।

बैठक में कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह एवं भोपाल से पर्यटन बोर्ड के अधिकारी वर्चुअल रूप से शामिल हुए। यहाँ मोतीमहल स्थित मानसभागार में नगर निगम आयुक्त श्री किशोर कान्याल, स्मार्ट सिटी की सीईओ श्रीमती जयति सिंह और अपर संचालक जनसंपर्क श्री जी एस मौर्य सहित पर्यटन, संस्कृति, आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय के अधिकारी मौजूद थे।

पर्यटकों व संगीत रसिकों को आकर्षित करने होंगे प्रयास

संभाग आयुक्त श्री आशीष सक्सेना ने बैठक में कहा कि तानसेन समारोह एवं ग्वालियर के पर्यटन की तरफ बाहर के लोगों को आकर्षित करने के लिये प्रदेश के बाहर भी प्रचार-प्रसार कराया जायेगा। उन्होंने कहा कि मुरैना कलेक्टर समीपवर्ती आगरा जिले के कलेक्टर से, दतिया जिले के कलेक्टर झांसी से, गुना कलेक्टर कोटा से शिवपुरी कलेक्टर ललितपुर से और भिण्ड कलेक्टर इटावा जिले के कलेक्टर से समन्वय स्थापित कर राष्ट्रीय तानसेन समारोह के बारे में बतायेंगे, जिससे प्रदेश के बाहर के लोग तानसेन समारोह के प्रति आकर्षित हों। इसके अलावा देश की राजधानी दिल्ली में भी तानसेन समारोह को लेकर एक कार्निवाल आयोजित करने पर विचार किया गया। प्रदेश के बाहर प्रचार-प्रसार के लिए पर्यटन एवं संस्कृति विभाग रूपरेखा तैयार करेंगे।

महाराज बाड़ा व किलागेट से निकलेगी कला यात्रा

तानसेन समारोह की पूर्व संध्या यानि 25 दिसंबर की सांध्य बेला में किलागेट से इंटक मैदान तक यानि "गमक" के आयोजन स्थल तक पूर्व की भाँति "कला यात्रा" निकलेगी। साथ ही इस बार महाराज बाड़े से भी एक कला यात्रा निकाली जायेगी। जिसमें राजा मानसिंह तोमर कला एवं संगीत विश्वविद्यालय और संभाग भर की विभिन्न ग्राम पंचायतों के लोक कलाकारों को शामिल किया जायेगा। यह कला यात्रा खुले वाहनों से हजीरा स्थित इंटक मैदान पहुँचेगी। बाड़े से निकलने वाली कला यात्रा के समन्वय की जिम्मेदारी संभागीय संयुक्त आयुक्त श्री मंडलोई, नगर निगम के अपर आयुक्त श्री आर के श्रीवास्तव और जिला पंचायत के अतिरिक्त मुख्य कार्यपालन अधिकारी डॉ. विजय दुबे को सौंपी गई है।

रसिकों के ऑनलाइन पंजीयन के लिये बनेगा पेज

संभाग आयुक्त श्री आशीष सक्सेना ने बैठक में यह भी निर्देश दिए कि देश और दुनिया के संगीत रसिकों को तानसेन समारोह से ऑनलाइन जोड़ने के लिये एक पेज तैयार करें। इस पेज पर मोबाइल नम्बर इत्यादि जानकारी भरकर रसिकगण तानसेन समारोह से जुड़ सकेंगे।

भारतरत्न अटल जी की यादों को संजोने के

सांसद श्री शेजवलकर की अध्यक्षता में स्मार्ट सिटी एडवायजरी फोरम की बैठक सम्पन्न

• विशेष संवाददाता रविकांत शर्मा

पूर्व प्रधानमंत्री भारतरत्न स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी की यादों को संजोने के लिए गोरखी स्कूल परिसर में स्मार्ट म्यूजियम बनाया जाएगा। म्यूजियम में बनने वाली आधा दर्जन गैलरी में अटल जी के सम्पूर्ण जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं को स्मार्ट तरीके से संजोया जाएगा। इस आशय की जानकारी सांसद श्री विवेक नारायण शेजवलकर की अध्यक्षता में आयोजित हुई स्मार्ट एडवाइजरी फोरम की बैठक में दी गई। महाराज बाड़ा स्थित गोरखी वही स्कूल है जिसमें भारत रत्न स्व अटल विहारी वाजपेयी ने प्रारंभिक शिक्षा का ककहरा सीखा था। सांसद श्री शेजवलकर ने कहा अटल म्यूजिम को पूरी भव्यता प्रदान की जाये जिससे सैलानियों को अटल जी से संबंधित सभी प्रकार की प्रेरणादायी जानकारी मिल सके। उन्होंने स्मार्ट सिटी के तहत ग्वालियर शहर में जुड़ रहे आयामों के रख-रखाव और संधारण की पुख्ता व्यवस्था करने पर भी विशेष बल दिया।

उन्होंने कहा विकास कार्यों के संधारण की व्यवस्था ऐसी हो जिससे शहरवासियों को विकास कार्यों का लाभ लंबे समय तक मिल सके। शनिवार को मोतीमहल के मान सभागार में आयोजित हुई बैठक में प्रस्तावित बायो डायवर्सिटी पार्क, स्वर्णरेखा नदी का विकास, अंतरराज्यीय बस टर्मिनल, ग्वालियर शहर के प्रवेश द्वार और स्मार्ट स्कूल शिक्षा नगर सहित स्मार्ट सिटी से संबंधित अन्य विकास कार्यों पर भी विचार मंथन हुआ। विधायक श्री प्रवीण पाठक, भाजपा जिला अध्यक्ष श्री कमल माखीजानी, कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह, पुलिस अधीक्षक श्री अमित सांघी, नगर निगम आयुक्त श्री किशोर कान्याल, स्मार्ट सिटी की सीईओ श्रीमती जयति सिंह सहित एडवायजरी फोरम के सदस्य गण सर्व श्री राजेन्द्र सेठ, कुलदीप भारद्वाज व डॉ. सत्यप्रकाश शर्मा सहित अन्य सदस्यगण व विभागीय अधिकारी उपस्थित थे। सांसद श्री विवेक नारायण शेजवलकर ने बैठक में कहा शहर में स्मार्ट सिटी के माध्यम से शहर की स्वच्छता की मॉनीटरिंग को और प्रभावी बनाया जाए। कंट्रोल कमाण्ड सेंटर के माध्यम से आम जनों को निगम द्वारा कचरा प्रबंधन के तहत किए जा रहे कार्यों की जानकारी एसएमएस के माध्यम से उपलब्ध कराने के प्रयास हों। उन्होंने कहा स्मार्ट सिटी का कंट्रोल कमाण्ड सेंटर ग्वालियर के लिये एक बड़ी सौगात है। इसका शहर के विकास में अधिकतम उपयोग किया जाए। श्री शेजवलकर ने कहा स्वर्ण रेखा नदी रिवर फ्रंट एरिया सहित अन्य विकास कार्यों के लिए विस्तृत योजना तैयार करें और एडवाइजरी फोरम तथा अन्य जनप्रतिनिधियों की सहमति के बाद ही इसे अंतिम रूप दें। विधायक श्री प्रवीण पाठक ने भी स्मार्ट सिटी द्वारा किए जा रहे कार्यों में संधारण और मॉनीटरिंग की प्रभावी व्यवस्था बनाने का सुझाव दिया। भाजपा जिला अध्यक्ष श्री कमल माखीजानी ने स्मार्ट सिटी के तहत आर्टिस्ट कैम्प आयोजित करने का सुझाव दिया। इनके अलावा श्री राजेन्द्र सेठ, श्री कुलदीप भारद्वाज तथा डॉ. सत्यप्रकाश शर्मा सहित अन्य सदस्यों ने भी महत्वपूर्ण

लिए गोरखी में बनेगा भव्य स्मार्ट म्यूजियम

सांसद ने कहा विकास कार्यों की देखरेख और मॉनीटरिंग की पुख्ता व्यवस्था हो

सुझाव दिए। कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह ने कहा ग्वालियर शहर में स्वच्छता के काम में स्मार्ट सिटी द्वारा तकनीकी सहयोग दिया जाएगा। उन्होंने नगर निगम आयुक्त से कहा कि सड़क और दुकान के सामने कचरा पाए जाने पर जुर्माने की कार्रवाई से पहले कचरा संग्रहण की पुख्ता व्यवस्था करें। इस व्यवस्था के बारे में दुकानदारों को भी जानकारी दी जाए और स्वच्छता कार्यक्रम में उन्हें भी भागीदार बनाएँ।

नगर निगम आयुक्त श्री किशोर कान्याल ने बैठक में बताया कि नगर निगम द्वारा स्वच्छता सर्वेक्षण की तैयारियों के लिये विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। शहर के सभी वार्डों में डोर टू डोर कचरा कलेक्शन की व्यवस्था निगम द्वारा की गई है। स्वच्छता के कार्य को प्रभावी रूप से करने के लिये वार्ड मॉनीटर बनाने के साथ-साथ जिला प्रशासन की ओर से सभी वार्डों में एक – एक जिला स्तरीय अधिकारी को भी प्रभारी बनाया गया है। स्वच्छता के साथ-साथ पानी की उपलब्धता और गंदे पानी की शिकायतों के निराकरण के लिये भी स्मार्ट सिटी के कंट्रोल कमाण्ड सेंटर द्वारा सकारात्मक सहयोग प्राप्त हो रहा है। कचरा गाड़ियों की निगरानी भी कंट्रोल कमाण्ड सेंटर के माध्यम से की जा रही है। स्मार्ट सिटी की सीईओ श्रीमती जयति सिंह ने स्मार्ट सिटी परियोजना के तहत कैंसर पहाड़िया के समीप बनाये जाने वाले अत्याधुनिक बायो डाइवर्सिटी पार्क व आईएसबीटी सहित अन्य कार्यों के संबंध में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि ग्वालियर स्मार्ट सिटी परियोजना के तहत डिजिटल म्यूजियम व टाउन हॉल, स्मार्ट पार्क, स्मार्ट खेल मैदान सहित कई महत्वपूर्ण परियोजनाये पूर्ण हो चुकी हैं। जिसका लाभ जनता को मिल रहा है। वहीं डिजिटल लाइब्रेरी, कटोराताल, चौपाटी, ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक महत्व की इमारतों पर फसाड लाइटिंग जैसी महत्वपूर्ण योजनाएं भी पूर्ण हो चुकी हैं। उन्होंने इन सभी स्मार्ट विकास कार्यों के बारे में प्रजेण्टेशन के माध्यम से बैठक में उपस्थित सदस्यो को सिलसिलेवार जानकारी दी। उन्होंने स्मार्ट सिटी बस सेवा के तहत इंट्रा और इंटर सिटी बस योजना के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस सेवा के तहत 80 स्मार्ट बसें चलाई जाएँगी। बैठक में बाइक शेयरिंग, स्मार्ट ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम व शहर में एलईडी लाइटिंग लगाने सहित अन्य विकास कार्यों की भी समीक्षा हुई।

हुजरात मंडी क्षेत्र में बनेगी स्मार्ट मार्केट : स्मार्ट सिटी की सीईओ श्रीमती जयति सिंह ने बैठक में जानकारी दी कि हुजरात मंडी क्षेत्र में स्मार्ट मार्केट बनाई जाएगी। इस संबंध में नगर निगम, स्मार्ट सिटी और एमपीसीसीआई के बीच त्रिस्तरीय एमओयू हुआ है। जल्द ही अब यहाँ निर्माण प्रक्रिया शुरु कर दी जायेगी।

एडवाइजरी फोरम को दिखाए जाएँगे स्मार्ट सिटी के काम : बैठक में निर्णय लिया गया कि स्मार्ट सिटी के द्वारा शहर में विकास कार्यों के जो आयाम जोड़े गए हैं उन्हें स्मार्ट सिटी एडवाइजरी फोरम के सदस्यों को दिखाया जाए। साथ ही उनसे मिले महत्वपूर्ण सुझावों को भी शहर विकास की योजनाओं के क्रियान्वयन में शामिल करें।

कलेक्टर ने कहा ठान लें स्वच्छता में ग्वालियर को केवल और केवल अव्वल बनायेंगे

कचरा फेंका तो घर के बाहर दिन भर होगी रामधुन...

• विशेष संवाददाता रवि परिहार

कचरा गाड़ी के बजाय बाहर कचरा फेंका तो स्वच्छता के प्रति सदबुद्धि लाने के लिये उसके घर के सामने भजन मंडली ढोल-मजीरों के साथ दिन भर रामधुन का गायन करेगी। इसी तरह कचरा फैलाने वालों को स्कूली बच्चों की वानर सेना हतोत्साहित करेगी और स्वच्छता के प्रति समर्पित लोगों की टीम हर गली-मोहल्ले में स्वच्छता की अलख जगायेगी। कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह की अध्यक्षता में स्वच्छता की रणनीति बनाने को लेकर आयोजित हुई नगर निगम के अधिकारियों की बैठक में इन नवाचारों पर सहमति बनी।

कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह ने बैठक में प्रेरणादायी उदबोधन दिया। उन्होंने कहा कि नगर निगम के सभी अधिकारी-कर्मचारी यह ठान लें कि हम शहरवासियों के सहयोग से स्वच्छता के क्षेत्र में ग्वालियर को केवल और केवल नम्बर वन शहर बनाकर ही दम लेंगे। कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह ग्वालियर शहर को स्वच्छता में अव्वल शहर बनाने के लिये पाँच बिंदुओं पर पुख्ता रणनीति के साथ काम करने पर बल दिया। इनमें डोर-टू-डोर कचरा संग्रहण और उसका प्रसंस्करण, शहर के किसी भी गली-मोहल्ले में कहीं पर भी कचरा न दिखे। पूरे शहर में दिन में दो बार झाड़ू और नालियों की नियमित सफाई, हर वार्ड व मोहल्ले में समर्पित स्वच्छता टीम तथा हर वार्ड में मजबूत सूचना तंत्र हो जिससे यह पता चल सके कि कहां पर कचरा जमा है और किसने कचरा फेंका है। बैठक में कलेक्टर ने आईईसी अर्थात प्रभावी जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने पर जोर देते हुए कहा कि विधिवत साक्षात्कार लेकर हर वार्ड में समर्पित लोगों की टीम तैयार करें। प्रयास ऐसे हों, जिससे पूरे शहर की स्वच्छता में भागीदारी हो। उन्होंने कहा स्वच्छता की रणनीति को अंजाम देने के लिये स्वच्छता सर्वेक्षण के प्रावधानों के अनुरूप दस्तावेज तैयार करने और फील्ड पर काम करने के लिये अलग-अलग टीमें तैयार करें। साथ ही यह भी कहा कि सार्वजनिक शौचालय, सब्जीमंडी, बस स्टेण्ड सहित अन्य सार्वजनिक स्थलों पर साफ-सफाई की विशेष व्यवस्था हो।

कलेक्टर श्री सिंह ने डोर-टू-डोर कचरा संग्रहण के लिए वाहनों की संख्या बढ़ाने पर भी विशेष बल दिया। उन्होंने कहा कि पुराने वाहनों को दुरूस्त कराकर कचरा संग्रहण में लगाएं। साथ ही हर वाहन में जीपीएस लगा हो और कॉल सेंटर से भी इसकी मॉनीटरिंग की जाए। नगर निगम आयुक्त श्री किशोर कान्याल ने ग्वालियर शहर में विधानसभा क्षेत्रवार स्वच्छता के लिये की गई प्लानिंग की विस्तारपूर्वक जानकारी दी। बैठक में अपर कलेक्टर श्री इच्छित गढ़पाले एवं नगर निगम के अपर आयुक्त श्री अतेन्द्र सिंह गुर्जर सहित नगर निगम के अन्य अधिकारी मौजूद थे।

टपकेश्वर ट्रेडर्स (पेंट्स) डबरा की ओर से समस्त डबरा वासियों को दीप पर्व की हार्दिक बहुत बहुत शुभकामनाएं

प्रो. प्रमोद पचौरी

नाबार्ड ने किया ग्वालियर जिले के लिए 8521 करोड़ की ऋण संभाव्यता का आकलन

नाबार्ड द्वारा वर्ष 2022-23 हेतु बैंको के लिए 8 हजार 521 करोड़ रूपए की ऋण संभाव्यता का आकलन किया है जो कि पिछले वर्ष से लगभग 11 प्रतिशत अधिक है। बाल भवन में आयोजित हुई बैंकर्स की जिला स्तरीय सलाहकार समिति की बैठक में कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह द्वारा जिले की ऋण संभाव्यता योजना बुकलेट का विमोचन किया गया।

इस ऋण संभाव्यता में कृषि क्षेत्र हेतु 5 हजार 68 करोड़ रूपए, एमएसएमई हेतु 2 हजार 213 करोड़ एवं अन्य प्राथमिकता हेतु एक हजार 239 करोड़ रूपए का आकलन किया गया है। कृषि मियादी ऋण एक हजार 751 करोड़ रूपए का आकलन किया गया जो कि कुल कृषि क्षेत्र का लगभग 35 प्रतिशत है। इस मौके पर श्री किशोर कन्याल कमिश्नर नगर निगम, श्री आशीष तिवारी सीईओ जिला पंचायत, श्री अभिषेक आनंद LDO RBI, श्री सुशील कुमार LDM, समस्त बैंक के जिला समन्वयक एवं NULM, NRLM के वरिष्ठ अधिकारीगण मौजूद थे।

यश कंस्ट्रक्शन और निबोध इंटरप्राइजेज की ओर से दीपावली की समस्त डबरा वासियों को
बहुत बहुत शुभकामनाएं

शुभकामनाएं कर्ता
प्रो. नीरज गुप्ता (यश कंस्ट्रक्शन), प्रो.सुरभि गुप्ता (निबोध इंटरप्राइजेज)

यह राजनीति है...

जरा तोल-मोल के बोल

वंशवाद या परिवारवाद शासन की वह पद्धति है जिसमें एक ही परिवार, वंश या समूह से एक के बाद एक कई शासक बनते जाते हैं। माना जाता है कि लोकतंत्र में वंशवाद के लिए कोई स्थान नहीं है, इसके बावजूद कई देशों में आज भी वंशवाद हावी है। दरअसल, वंशवाद, निकृष्टतम कोटि का आरक्षण है। हालांकि, इसे राजतंत्र का सुधरा हुआ रूप भी कहा जा सकता है। पिछले सप्ताह प्रधानमंत्री ने वंशवाद पर चोट करते हुए उन्हें धिक्कारा, जो आज भी वंशवाद के समर्थक हैं। पीएम का अप्रत्यक्ष, लेकिन सीधा कटाक्ष कांग्रेस पर था।

वंशवादी दल जो स्वयं लोकतांत्रिक चरित्र खो चुके हैं, वह लोकतंत्र की रक्षा कैसे कर सकते हैं। सच है, भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में आज वंशवाद के लिए कोई स्थान नहीं है। लेकिन, अपने ही देश में यह भी एक कहावत है 'चिराग तले अंधेरा'। हम इस बात को भूल जाते हैं कि जब हम किसी की ओर इशारा करते हैं उनकी ओर एक अंगुली उठती है, जबकि शेष तीन अंगुलियां अपनी ओर ही होती है। आज कोई भी दल सीना ठोककर यह नहीं कह सकता कि उसके यहां ऐसा चलन नहीं है, यानी उनका दल इस अपवाद से परे है।

आजादी के बाद वंशवाद को बढ़ाने का आरोप सबसे पहले नेहरू गांधी परिवार पर लगा, क्योंकि इसके तीन सदस्य- जवाहर लाल नेहरू, बेटी इंदिरा गांधी और इंदिरा के बेटे राजीव गांधी, देश के प्रधानमंत्री रह चुके हैं। इनमें दो की हत्या आतंकवादियों द्वारा की जा चुकी है। आज जब राजीव के बेटे राहुल गांधी, कांग्रेस की इस परंपरा को आगे बढ़ाने की कोशिश में जी—जान से जुटे हैं, वहीं बहन प्रियंका वाड्रा भाई का साथ देने मैदान में कूद पड़ी हैं। पहले जहां आलोचना के बावजूद वंशवाद नेहरू गांधी परिवार का अचूक हथियार माना जाता था, आज वामपंथियों को छोड़ लगभग सभी दलों ने इसे बेझिझक अपना कर एक नई प्रथा सी कायम कर दी है।

नेहरू गांधी के बाद जम्मू और कश्मीर के दिवंगत मुख्यमंत्री शेख अब्दुल्लाह के परिवार का नाम भी वंशवाद को लेकर बहुत आगे आता है। यहां उनके बेटे फारुख अब्दुल्लाह और पोते उमर दोनों राज्य के मुख्यमंत्री रह चुके हैं। उसी तरह जैसे पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी के मुफ्ती मुहम्मद सईद और उनकी बेटी महबूबा मुफ्ती।

राजतंत्र हो या कुलीन तंत्र और वर्तमान का आरोपित लोकतांत्रिक ढांचा इन सब में एक बात पूर्णतया समान होती है और यह बात है वंशानुगत उत्तराधिकार तथा परिवारवाद की जिसमें सत्ता हमेशा पारिवारिक ढांचे के अंतर्गत प्रवाहित होती रहती है। किंतु यह वंशवाद मात्र भारत तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसका प्रचलन उतने ही प्रभावी रूप में लगभग सभी अल्प विकसित या नव विकासशील देशों में देखा जा सकता है, जहां पर कुछेक परिवार राजनीति में हमेशा महत्वपूर्ण रहे हैं और जिनके प्रभाव से पूरी राजनीतिक व्यवस्था संचालित होती रही है।

भारत में जहां गांधी-नेहरू परिवार तक ही अब परिवारवाद सीमित नहीं रह गया है। तमाम नए सियासी घराने भी वंशानुगत सत्ता हस्तांतरण का तरीका अपनाने लगे हैं जिससे इस प्रथा का विकराल स्वरूप देखा जा

सकता है। इसका सबसे ज्वलंत उदाहरण पिछले वर्षों में ही उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने अखिलेश यादव की ताजपोशी के रूप में देखा जा सकता है जिन्हें बिना अनुभव के प्रदेश की सबसे महत्वपूर्ण कुर्सी का उपहार मिला। उनकी योग्यता बस इतनी है कि वे बहुमत पाए दल के मुखिया के पुत्र हैं।

वर्ष 2014 में लोकसभा चुनावों में प्रधानमंत्री पद के लिए भाजपा के तत्कालीन उम्मीदवार और आज के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राहुल गांधी को 'शहजादा' और तत्कालीन यूपीए सरकार को 'दिल्ली सल्तनत' करार देते हुए गांधी परिवार पर ताना मारा था। मोदी ने उत्तर प्रदेश में अपने अभियान के दौरान समाजवादी पार्टी के नेता मुलायम सिंह यादव और अखिलेश यादव की जोड़ी का जिक्र करते हुए भी कहा था, 'जहां मां और बेटे की सरकारों ने देश को तबाह कर दिया, वहीं उत्तर प्रदेश को पिता-पुत्र की सरकार ने बर्बाद कर दिया।' मोदी और उनकी पार्टी के सहयोगियों ने वंशवादी संस्कृति को बढ़ावा देने को लेकर विपक्षी दलों के खिलाफ हमलावर रुख अपना रखा है, जबकि प्रमुख राजनीतिक परिवारों के सदस्य भाजपा में शामिल हो रहे हैं और आगे भी बढ़ रहे हैं।

वर्ष 2019 में अखबार में छपी जानकारी के मुताबिक भाजपा के लगभग 11 प्रतिशत सांसदों, यानी 45 सदस्यों की पृष्ठभूमि वंशवाद की राजनीति से जुड़ी है। वर्ष 2019 के महाराष्ट्र और हरियाणा विधानसभा चुनावों में तो मानों भाजपा और कांग्रेस के बीच इसकी होड़ ही लगी थी कि कौन कितने राजनीतिक वंशजों को मैदान में उतारेगा। भाजपा ने महाराष्ट्र और हरियाणा में राजनीतिक परिवारों से जुड़े 29 लोगों को मैदान में उतारा, जिनमें 17 ने जीत हासिल की। इस मामले में कांग्रेस का आंकड़ा 36 में से 21 का था।

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पवन खेड़ा ने कहा, 'भाजपा में दुष्यंत, पंकज सिंह, अनुराग ठाकुर, पूनम महाजन, जयंत सिन्हा, प्रवेश वर्मा आदि के बाद भी राजनीतिक वंशजों की जैसे कमी पड़ गई हो तो वह अन्य दलों से भी वंशवादियों को ला रहे हैं। अब उनके पास बोम्मई के रूप में एक और वंशवादी कर्नाटक का मुख्यमंत्री है।' उन्होंने कहा, 'पार्टी के अपने और दूसरी पार्टियों से आयातित वंशवादियों को मिलाकर भाजपा के पास कांग्रेस की तुलना में अधिक राजनीतिक वंशज हैं। उन्हें कांग्रेस के खिलाफ वंशवादी राजनीति के इस पुराने हथकंडे का इस्तेमाल करना बंद कर देना चाहिए। यह एक पाखंड और उबाऊ बन चुका है।'

सच तो यह है कि किसी को अपना चेहरा स्वयं नहीं दिखाई देता है। उसे खुद को देखने के लिए दर्पण अथवा पानी के सामने जाना पड़ता है। जब हम किसी और की आलोचना करने लगते हैं तो यह भूल जाते हैं कि अपनी स्वयं की उनमें कितनी कमी है। लगभग यही हमारे राजनीतिज्ञों से होता रहा है। जब वह मंच से समाज को संबोधित करते हैं तो उन्हें केवल अपनी बातों की प्रतिक्रिया का प्रभाव देखना होता है जो किराये के लाए गए श्रोता होते हैं। ऐसे श्रोता—दर्शक तो उनकी बातों से प्रभावित हो जाते हैं, लेकिन समाज का वह वर्ग, जो बुद्धिजीवी होता है, उसकी हंसी, आलोचना तथा उपहास के पात्र बनते हैं। आज राजनीतिज्ञ सारी मर्यादाओं को या तो भूल गए हैं अथवा उन्हे अपने शब्द चयन का ज्ञान नहीं होता। यह एक आम बात हो गई है की जो राजनीतिज्ञ जितनी अमर्यादित शब्दों का प्रयोग करते हैं, समाज का एक वर्ग उन्हें उतना सम्मानित समझता है।

याद कीजिए नेताओं के पुराने भाषणों को, फिर जब देश के गृह राज्यमंत्री ने सार्वजनिक जनमंच से धरने पर बैठे किसानों पर हमला बोलते हुए कहा था कि कुछ ही मिनट में इन्हें समझा दूंगा। जिसके कुछ दिन बाद ही आरोप है कि लखीमपुर खीरी में उनके ही बेटे ने सरेआम गाड़ियों से किसानों को रौंद कर मार डाला । मुख्य अपराधी के रूप में वह जेल में बंद है और उसकी जमानत के लिए लगातार प्रयत्न चल रहे हैं। सच तो यह है कि यह भी तो एक परिवारवाद वंशवाद का नमूना है।

प्रधानमंत्री हो या कोई और राजनीतिज्ञ, उन्हें सदैव अपनी पद और कद का ध्यान रखते हुए शब्दों को तौलकर उसकी मर्यादा का ध्यान रखना चाहिए, अन्यथा लखीमपुर खीरी तथा जनता अमर्यादित शब्दों को सुन—सुनकर ऐसे नेताओं की बातों पर विश्वास करना छोड़ देगी। वैसे जनता अब ऐसे नेताओं पर विश्वास करना लगभग छोड़ ही दिया है। जो कभी यह कहते थे कि यदि उनकी सरकार बनी तो प्रत्येक के खाते में पंद्रह लाख रुपया और लाखों लोगों को रोजगार देंगे, जिसे उनके ही दल द्वारा चुनाव के बाद 'जुमला' करार दिया था।

ध्यान देने की बात यह है की जिन परिवारों को वंशवादी कहा जा रहा है वे स्वयं उच्च पदस्थ नहीं हो गए , उन्हे जनता ने मतदान में चुना और बहुमत दल की ताकत ने उन्हें उस कुर्सी पर बैठाया । ऐसा इसलिए कि हमारा भारत जनतांत्रिक देश है जहां जनता ही भाग्य विधाता है । जो कुछ भी हुआ अथवा हो रहा है यह सारा निर्णय भारतीय जनता का है अतः जनता को ही यदि कोई अपराधी मान ले तो यह उनकी इच्छा । जनता हर उस आलोचक को समय आने पर समझा देती है – क्योंकि हमारा देश लोकतांत्रिक व्यवस्था में संविधान के बल पर चल रहा है इसलिए यहां कोई वंशवादी नही है । सब जनता के बहुमत द्वारा चुने हुए प्रतिनिधि हैं ।

नोवा डेयरी एवं नोवा डेयरी के समस्त स्टॉफ, परिवार की ओर से समस्त डबरा वासियों को

दीपावली की शुभकामनाएं...

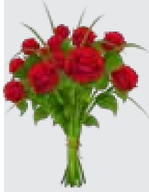

लक्ष्मीनारायण, डेयरी इंचार्ज, योगेंद

ग्वालियर स्मार्ट सिटी सी.ई.ओ. ग्वालियर श्रीमती जयति सिंह

हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका की सलाहकार टीम में हुए नारायण दास गुप्ता।
संरक्षक महोदय डॉ. श्रीमन नारायण मिश्रा जी ने दिया सहमति पत्र

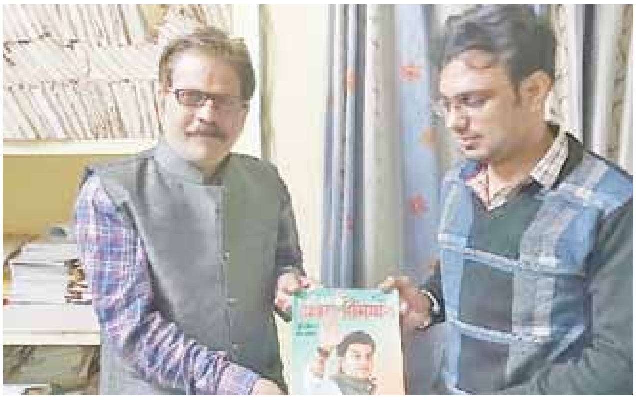

पीयूष गुप्ता एई ने पत्रिका की टीम को शुभकामनाएं दी

रामनिवास सिकरवार तहसीलदार ग्वालियर, सिटीसेन्टर

खुशबू लाइट एण्ड टेंट्स की ओर समस्त देशवासियों को

दीपावली की शुभकामनाएं...

सभी तरह के शुभ कार्यो में हमेशा याद रखें...

आफिस : चौधरी मार्केट, जवाहरगंज चौराहा, डबरा,निवास : गायत्री मंदिर रोड, गुप्तापुरा, डबरा, मो. 9425481608, 9098370800

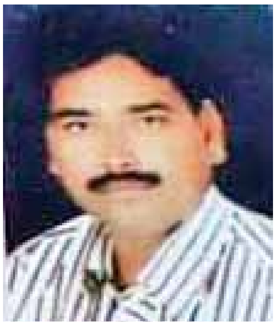

गिरीश कुमार प्रजापति (पप्पू)

न्यू याकूब साउण्ड एण्ड लाइट्स की ओर से सभी को

दीपावली की शुभकामनाएं...

इको माइक सिस्टम एवं लाइट डेकोरेशन

हास्पिटल रोड, बैंड मार्केट, डबरा, जिला ग्वालियर, निवास मोती मस्जिद, बिजली घर के पास, वार्ड नं. 17, गोमतीनगर, डबरा, मो. 9827201717, 7415409888

याकूब भाई

ग्वालियर का मशहूर न्यू दयाल बैंड डीजे एण्ड इवेंट्स की ओर से डबरावासियों को

दीपावली की शुभकामनाएं...

याकूब भाई

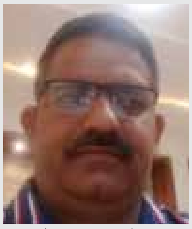

मुकेश कुकरेजा
(हैप्पी भाई)

H.O. : हजरत रोड, लस्कर, ग्वालियर, B.O. : शहीद गेट, सेठी पम्पस, मोरार, B.O. : बैंड मार्केट, डबरा, याकूब भाई : मो. 9827201717, 7415409888, मुकेश कुकरेजा : मो. 7772012000

उपभोक्ता अधिकार

देरी के खिलाफ मजबूती से करें अपील

• पुष्पा गिरिमाजी

दुकानदार ने मुझे खराब टेलीविजन सेट बेचा जिसके खिलाफ मैंने जिला उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग के समक्ष शिकायत दर्ज कराई थी। मैंने केस जीत लिया और आयोग ने रिटेलर को सेट बदलने और मुआवजे का भुगतान करने का आदेश दिया। आदेश मिलने के पांच माह बाद फुटकर विक्रेता ने अब अपील दायर कर दी है। क्या यह समय की बर्बादी नहीं है? अब मुझे क्या करना चाहिए?

निश्चित रूप से अपील को समयबद्ध होना चाहिए। खुदरा विक्रेता देरी के लिए जरूर क्षमा मांगेगा, लेकिन आपको पहले इस देरी का विरोध करना चाहिए और समय सीमा पार होने को आधार बनाते हुए अपील खारिज करने का दावा करना चाहिए। उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 2019 की धारा 41 में जिला आयोग के आदेश के खिलाफ तथ्यों या कानून के आधार पर राज्य आयोग के समक्ष अपील दायर करने का प्रावधान है, लेकिन आदेश की तारीख से 45 दिनों के भीतर। इसमें आगे कहा गया है कि आयोग उस अवधि की समाप्ति के बाद अपील पर विचार कर सकता है 'यदि वह संतुष्ट है कि उस अवधि के भीतर इसे दायर नहीं करने के लिए पर्याप्त कारण' था।

अनेक कारोबारी देरी से अपील करने के प्रावधान का फायदा उठाते हैं और देर से अपील दायर करते हैं। ऐसे लोग देरी को नजरअंदाज करने के लिए एक प्रार्थनापत्र दे देते हैं। असल में, इस तरह की देरी को केवल दुर्लभतम मामलों में ही नजरअंदाज किया जाना चाहिए। लंबी देरी के बाद मामला दर्ज करना कानून के प्रति अनादर को दर्शाता है और इससे सख्ती से निपटा जाना चाहिए। दुर्भाग्य से, उपभोक्ता अदालतें देरी को माफ करने के प्रावधान की व्याख्या में काफी उदार रही हैं और यहां तक कि अनावश्यक रूप से लंबी देरी को भी माफ कर दिया गया है। चीजें बेहतरी के लिए बदलती हैं और मैं आपसे आग्रह करूंगी कि देरी को माफ करने और अपील को स्वीकार करने के खिलाफ जोरदार तरीके से जिरह करें।

क्या आप कुछ हालिया आदेश के बारे में बता सकती हैं?

एचडीएफसी बैंक लिमिटेड बनाम दीपक गोयल (2021 का आरपी नंबर 438, आदेश की तारीख 12 अक्तूबर, 2021) में राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग का हालिया आदेश आपके काम आएगा। इधर, जिला आयोग द्वारा बैंक को नोटिस दिया गया था, बैंक ने अपने मामले का प्रतिनिधित्व नहीं किया - इसका स्पष्टीकरण दिया गया कि नोटिस प्राप्त करने वाले बैंक कर्मचारी ने उच्च अधिकारियों को सूचित नहीं किया!

जिला आयोग ने बैंक को कुछ अनधिकृत लेनदेन के लिए शिकायतकर्ता से वसूले गए 87,375 रुपये वापस करने, 10,000 रुपये का मुआवजा और 5,000 रुपये की लागत का भुगतान करने का निर्देश दिया। बैंक ने राज्य आयोग के समक्ष एक अपील दायर की, जिसने इसे सीमा के आधार पर खारिज कर दिया। बैंक द्वारा दायर पुनरीक्षण याचिका के जवाब में, शीर्ष उपभोक्ता अदालत ने पाया कि बैंक ने राज्य आयोग के समक्ष लॉकडाउन अवधि को छोड़कर 274 दिनों या 195 दिनों की देरी के लिए माफ़ी मांगी थी। बैंक ने आगे तर्क दिया कि कोविड-19 से उत्पन्न स्थिति के कारण सुप्रीम कोर्ट द्वारा दी गई छूट को ध्यान में रखते हुए देरी केवल 66 दिनों की थी। राष्ट्रीय आयोग ने कहा, 'यद्यपि हम इस प्रकार के निवेदन से पूर्णतया सहमत नहीं हैं परन्तु स्वयं स्वीकार करने पर 66 दिनों के विलम्ब से राज्य आयोग में अपील दायर की गई थी।'

आयोग ने पुनरीक्षण याचिका को खारिज करते हुए जो कहा वह उन सभी लोगों के लिए एक चेतावनी होनी चाहिए जो सोचते हैं कि वे विलंबित अपीलों से बच सकते हैं। आयोग ने कहा, 'आम तौर पर, हम देरी के लिए क्षमा के बिंदु पर विचार करने के पहलू पर एक उदार दृष्टिकोण अपनाने की प्रवृत्ति रखते हैं और इस तरह की क्षमा मांगने वाले पक्ष की ओर एक अनुग्रहपूर्ण दृष्टिकोण अपनाने के लिए लचीला रुख अपनाते हैं। यही कारण है कि हम यह पसंद करते हैं कि मामले को प्रारंभिक स्तर पर यानी देरी के आधार पर बंद करने के बजाय योग्यता के आधार पर तय किया जाए, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम कभी भी समय सीमा के कानून के संबंध में वैधानिक आवश्यकता पर मनमानी कर सकते हैं। इस प्रावधान को विधायिका द्वारा अपने विवेक से प्रदान किया गया है।' आयोग ने आगे कहा, 'यह बताने के लिए अधिक विस्तार की आवश्यकता नहीं है कि जब समय सीमा समाप्त हो जाती है, तो यह एक साथ एक अधिकार को जन्म देती है जो दूसरे पक्ष को प्राप्त होता है और दूसरा पक्ष बिना किसी पर्याप्त कारण के अपने अर्जित अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता है; इसलिए, जब कभी भी विलंब होता है, और जब भी उस पहलू पर क्षमा मांगी जाती है, तो दोनों पक्षों को ऐसे तथ्यात्मक आधार दिखाने की जिम्मेदारी का निर्वहन करना पड़ता है, जिसके आधार पर इस तरह के विलंब को माफ किया जा सके।'

कैटरिंग में भी तलाशें संभावनाएं

बदलते समय में शादी-व्याह एवं अन्य अवसरों पर मेहमाननवाजी से लेकर साज-सज्जा तक के रंग-रूप बदले हैं। लोगों ने अब हर रस्म को यादगार बनाने के लिए बारातियों के स्वागत से लेकर सजावट तक, हर इंतजाम पर खास ध्यान देना शुरू कर दिया है। मगर इन सबमें सबसे पहले नंबर आता है खाने का इंतजाम। अगर आपके खाने का मैन्यू, फिट हो तो आपका आयोजन 50 प्रतिशत हिट माना जाता है। एक अनुमान के मुताबिक भारतीय होटल इंडस्ट्री 15 प्रतिशत सालाना की दर से वृद्धि कर रहा है। इस क्षेत्र में विदेशी कंपनियां भी साझेदारी कर रही हैं। रेस्तरां या फास्ट फूड ज्वाइंट के बढ़ते विस्तार के बाद तो कैटरिंग एक बिजनेस का रूप अख्तियार कर चुका है। जाहिर है जहां इतने सारे होटल, रेस्तरां होंगे वहां कैटरिंग के काम की भी डिमांड होगी। कैटरिंग एक सेवा देने वाली इंडस्ट्री है, जिसमें ग्राहकों को उनकी मांग के अनुसार सुविधाएं दी जाती है। इस काम के लिए पूरी तरह से कार्यकुशल और प्रभावशाली व्यक्तित्व का होना जरूरी है। आज इस फील्ड में काफी अवसर पैदा हुए हैं तो आइए आपको अवगत करवाते हैं कि कैसे आप इस क्षेत्र में जिंदगी संवार सकते हैं।

काम, कोर्स और योग्यता

कैटरिंग के फील्ड में कामयाब होने के लिए व्यक्तिगत संबंधों का होना जरूरी है। आज सभी छोटे-बड़े होटलों को कैटरिंग टेक्नोलॉजी के जानकारों की डिमांड है। कैटरिंग का काम किसी के साथ जुड़कर या निजी रूप से भी किया जा सकता है। अगर आप खुद का काम शुरू करना चाहते हैं तो घर या दुकान कहीं से भी यह काम शुरू कर सकते हैं। इस काम को छोटे स्तर पर शुरू करने के लिए ज्यादा लोगों की जरूरत नहीं है, वहीं बड़े स्तर पर शुरुआत के लिए कई लोगों की आवश्यकता होती है। बड़े स्तर पर कैटरिंग के काम के लिए ज्यादा लागत और बड़ी जगह की जरूरत पड़ती है। हमेशा ध्यान रखना होता है कि कस्टमर से किया गया जो प्रॉमिस टूटे नहीं। क्योंकि विश्वास ही इस काम में कामयाबी का रास्ता है।

कैटरिंग होटल मैनेजमेंट का अहम पार्ट है। ऐसे संस्थानों की कोई कमी नहीं है जो कैटरिंग कोर्स कराते हैं। इन कोर्सों की अवधि संस्थानों पर निर्भर करती है। यहां इस बात का ध्यान रखना जरूरी है कि अच्छे संस्थान से लिया गया प्रशिक्षण बेहतर रोजगार दिलाने में कारगर होता है।

कैटरिंग के लिए पहले किसी कोर्स या योग्यता की दरकार नहीं थी, लेकिन पिछले कुछ समय से इसमें सर्टिफिकेट, डिप्लोमा जैसे कोर्स भी कराए जाने लगे हैं। मान्यता प्राप्त बोर्ड या विश्वविद्यालय से 12वीं या स्नातक होना जरूरी है। 12वीं में अंग्रेजी एक अनिवार्य विषय के रूप में होनी चाहिए। इस इंडस्ट्री में कामयाब होने के लिए कुछ व्यक्तिगत गुणों का होना भी जरूरी है जैसे, मृदुभाषी होना, परेशानी में भी चेहरे पर शिकन न आने देना, सेवा सत्कार को धर्म की श्रेणी में रखना आदि।

कहां हैं अवसर

जॉब के नजरिए से यह क्षेत्र काफी धनी है। इसमें आप एयरलाइन कैटरिंग एवं केबिन सर्विस, हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन एंड कैटरिंग, होटल और टूरिज्म एसोसिएशन, रेलवे, बैंक, सैन्य बल, शिपिंग कॉरपोरेशन, आदि के साथ जुड़कर भी काम कर सकते हैं। इसका प्रशिक्षण लेने वाले अधिकतर लोग होटलों में काम करना ही पसंद करते हैं। देश-विदेश में प्रचलन में आ रहे नए व्यंजनों के बारे में अपडेट रहना और इस तरह की नई चीजों को ईजाद करना यदि आपको आता है तो कैटरिंग के फील्ड से अच्छा दूसरा कोई और करिअर ऑप्शन नहीं है। इसमें रोजगार भी है और स्वरोजगार भी। शादी-विवाह, बर्थडे पार्टी, तरह तरह के इवेंट्स में तो कैटरिंग की डिमांड रहती ही है, हॉस्पिटैलिटी इंडस्ट्री, हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन, टूरिज्म एसोसिएशन, रेलवे में जॉब के बेशुमार अवसर है।

प्रमुख संस्थान

इग्नू, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली

कुरुक्षेत्र विश्विद्यालय, टूरिज्म एंड होटल मैनेजमेंट विभाग, कुरूक्षेत्र, हरियाणा

लक्ष्य भारती इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल होटल मैनेजमेंट, नयी दिल्ली

जिंदगी का नाश करता नशा...

• अभिषेक कुमार सिंह

राजनेता ही नहीं, अक्सर प्रबुद्ध लोग हर मंच पर भारत को युवाओं के बल पर दुनिया की आर्थिक महाशक्ति बनाने की बात कहते रहते हैं। उनकी दलील होती है कि युवाओं की विशाल आबादी वाला यह मुल्क आने वाले वक्त में महाशक्ति बनने का दम रखता है। लेकिन हकीकत की जमीन पर जब हम अपने युवाओं की स्थिति देखते हैं, तो कई अन्य समस्याओं के साथ नौजवानों को नशे का शिकार होते हुए पाते हैं। समझ में नहीं आता कि अध्यात्म से लेकर आईटी तक का सफर करने वाले युवाओं का बड़ा तबका बिना नशे के अपनी जिंदगी बसर करने को तैयार क्यों नहीं है। हो सकता है कि यह दावा ऊपरी तौर पर खोखला और आधारहीन प्रतीत हो रहा है, लेकिन जब हम हाल में (16 सितंबर 2021) गुजरात के कच्छ स्थित मुंद्रा पोर्ट पर करीब 3 हजार किलोग्राम ड्रग्स की खेप पकड़े जाने की घटना पर नजर डालते हैं, तो हमारे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में इसकी कीमत 21000 करोड़ रुपये है। दावा है कि यह पूरी दुनिया में पकड़ी गई अवैध नशीले पदार्थों की सबसे बड़ी खेप है। यही नहीं, आमतौर पर ऐसी अवैध खेपें पूरे देश में पूरे साल ही पकड़ी जाती हैं, लेकिन उन सभी को मिलाकर यह मात्रा अभी 2500 किलोग्राम रही है। लेकिन एक ही स्थान पर और एक ही साथ 3 हजार किलोग्राम ड्रग्स (हेरोइन) की धरपकड़ का यह किस्सा सच में हैरतअंगेज है और कई आशंकाओं को जन्म दे रहा है।

ईरानी टेलकम पाउडर

सोने, दुर्लभ वन्यजीवों और ड्रग्स की तस्करी का अपना इतिहास रहा है। उपलब्धता और कीमत में अंतर के आधार पर दुनिया के कई हिस्सों से इसके रैकेट चलते रहे हैं। सोने की तस्करी में कीमतों के फर्क की भूमिका होती है, वन्यजीवों के मामलों में उनकी दुर्लभता और दवाओं तथा खाल व्यापार में उनके इस्तेमाल की प्रेरणा काम करती है, जबकि नशीले पदार्थों की तस्करी नशे के शौकीनों के जरिए मोटा मुनाफा कमाने की चाह उसके अवैध रास्ते बनाती है। बताया जा रहा है कि मुंद्रा पोर्ट पर हुई ताजा धरपकड़ के पीछे इसी वर्ष जून 2021 में कस्टम विभाग की एक नाकामी है, जिसमें एक बड़ा कंसाइनमेंट (ड्रग्स की खेप) हाथ से निकल गया और वह इसके कारोबारियों तक जा पहुंचा। इस नाकामी से हताश राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई) और कस्टम अधिकारियों को इस बार जब यह खबर मिली कि आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा की एक कंपनी आशी ट्रेडिंग फर्म द्वारा ईरानी टेलकम पाउडर की बड़ी खेप आयात की गई है और बीते तीन महीने में ही आयात की जा रही टेलकम पाउडर की यह दूसरी बड़ी खेप है, तो कस्टम और डीआरआई की टीमें चौकन्नी हो गईं। पता चला कि अफगानिस्तान के कंधार स्थित हसन हुसैन लिमिटेड से पहले ईरान और फिर वहां से कथित तौर पर ईरानी टेलकम पाउडर का बड़ा कंसाइनमेंट गुजरात के कच्छ स्थित मुंद्रा पोर्ट पहुंचा है, तो मामले को संदिग्ध मानकर जांच की गई। मालूम हुआ कि दो बड़े कंटेनरों में 3 हजार किलोग्राम हेरोइन मौजूद है। दुनिया की सबसे बड़ी ड्रग्स की खेप की बरामदगी ने एजेंसियों के होश तब और उड़ाए, जब इसकी कीमत का पता चला। पकड़ी गई ड्रग्स कितने लोगों तक पहुंच सकती थी, इसका एक आकलन भी किया गया है। स्वीडन की एक रिपोर्ट बताती है कि एक व्यक्ति एक दिन में आधे

ग्राम (460 मिलीग्राम) ड्रग्स का सेवन कर सकता है। लेकिन सेवन की जाने वाली ड्रग्स में न्यूनतम 23 फीसदी या इससे ज्यादा की मिलावट की जाती है। नशे के बाजार में बिकने वाली ड्रग्स कई बार इससे भी ज्यादा मिलावटी होती है। यह मिलावट मिल्क शुगर अथवा दूसरे केमिकल्स की होती है। ऐसे में यदि पकड़ी गई 3 हजार किलोग्राम ड्रग्स यदि पूरी तरह प्योर (शुद्ध) हुई तो मिलावट के बाद यह 75 लाख से एक करोड़ लोगों के सेवन योग्य नशीले पदार्थ में बदल जाती है। यदि यह हेरोइन पहले से मिलावट वाली निकली तो इससे 15 लाख लोग प्रभावित हो सकते हैं। अंदाजा लगाया जा सकता है कि जब पकड़ी जा रही खेपें ही लाखों लोगों के नशे का सामान बनने की क्षमता रखती हैं, तो बिना पकड़ी गई खेपें हमारे युवाओं को किस कदर अपनी चपेट में ले रही होंगी।

बढ़ी आवक और धरपकड़

ऐसा नहीं है कि हमारे देश में यह पहला मौका है जब बड़ी मात्रा में नशीले पदार्थों की बरामदगी हुई हो। हाल के वर्षों में दिल्ली-एनसीआर (राष्ट्रीय राजधानी परिक्षेत्र) के अलावा पंजाब, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और राजस्थान में सप्लाई होने वाली ड्रग्स की बड़ी खेपें लगातार पकड़ी गई हैं। जैसे वर्ष 2019 में बिहार, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र और असम–ड्रग्स तस्करों की धरपकड़ के मामले में ये चार राज्य शीर्ष पर रहे थे। वर्ष 2020 में भारत में ड्रग्स की सबसे बड़ी खेप यूपी, महाराष्ट्र, तेलंगाना और तमिलनाडु से पकड़ी गई थी। पिछले कुछ अरसे ड्रग्स तस्करी के बड़े रैकेटों का पर्दाफाश हुआ है, जैसे दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने पिछले दो सालों में 10 बड़े ऑपरेशन को अंजाम देकर करीब 24 सौ करोड़ की हेरोइन बरामद की है और इनमें कभी नाइजीरियाई तो कभी अफगानी नागरिकों तक को गिरफ्तार किया गया है। इससे पहले जुलाई 2017 में भारतीय अधिकारियों ने 1500 किलोग्राम ड्रग्स बरामद की, जिसे अफगानिस्तान से ही भारत लाया जा रहा था। ड्रग्स अकेले अफगानिस्तान से नहीं आती है। दिल्ली में नशीले पदार्थों की सबसे ज्यादा आवक अफगानिस्तान से और उसके बाद नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश और म्यांमार के रास्ते होती है और यहां खपाए जाने के बाद बची हुई ड्रग्स दिल्ली से यूरोप, ब्रिटेन और लैटिन अमेरिकी देशों तक में सप्लाई की जाती है। इन ड्रग्स में हेरोइन के अलावा डायजेपाम, मैंड्रेक्स, एफेटेमिन, मॉर्फिन, केटामाइन, मेथमफेटामाइन, एमडीएमए, पेंटाजोकिन, स्यूडोफिड्रिन, म्याऊं-म्याऊं और कॉडिन आदि शामिल होती हैं। ड्रग्स तस्करों के कई गिरोह हैं जो इसके नए रास्ते तलाशते रहते हैं। जैसे कुछ समय पहले म्यांमार से पहले मणिपुर-बिहार और फिर दिल्ली तक लाई गई 25 किलो हेरोइन की खेप (बाजार कीमत 125 करोड़ रुपये) पकड़ी गई थी और इससे एक बड़े रैकेट का भंडाफोड़ हुआ था। हालांकि बड़ी खेपों के पकड़े जाने का सिलसिला इधर अवश्य बढ़ा है, लेकिन ज्यादातर ड्रग तस्कर कभी भी एक साथ इतनी भारी मात्रा में ड्रग्स की खेप नहीं ले जाते, क्योंकि इनके पकड़े जाने का खतरा बना रहता है।

रेव पार्टियों के फरेब

एक क्रूज पर आयोजित रेव पार्टी में शामिल बॉलीवुड के शीर्ष सितारे के बेटे की गिरफ्तारी के बाद से जिस तरह ड्रग्स के कारोबार की चर्चा पूरे देश में चल रही है, वे रेव पार्टियां नयी नहीं हैं। बताते हैं कि 1980 के दशक में इन पार्टियों के आयोजन की सूचनाएं मिलने लगी थीं। नशा, मौज-मस्ती, म्यूजिक, नाच-गाना और कई बार तो सेक्स तक की छूट देने वाली इन पार्टियों का आयोजन देश के धनकुबेरों की जवान होती पीढ़ी के बीच एक आम चलन बन गया है। इन पर कानून और पुलिस की कथित तौर पर नजर होती है, कुछेक मामलों में धरपकड़ भी होती है, लेकिन बेहद खुफिया तौर पर होने वाली इन पार्टियों के आयोजक पूरी कशिश करते हैं कि उनके दायरे और रेव पार्टी में शामिल होने वाले लोगों के अलावा किसी और को इसकी भनक तक न लगे। देश के महानगरों जैसे कि दिल्ली-एनसीआर, मुंबई के अलावा खंडाला, पुणे और जयपुर-पुष्कर आदि के फार्म हाउस आदि को इन पार्टियों की सबसे उपयुक्त जगह माना जाता है क्योंकि यहां नशीले पदार्थों की उपलब्धता आसानी से हो जाती है। जब भी इनमें शामिल लोगों को पुलिस ने पकड़ा है, उनके पकड़े गए लोगों के खून में नशीले पदार्थ मौजूद पाए गए हैं। ये पार्टियां बड़े गुपचुप तरीके से आयोजित की जाती हैं। नशीले पदार्थ बेचने वालों के लिए ये रेव पार्टियां धंधे की सबसे मुफीद जगह बन गई हैं। आज भले ही कहा जा रहा हो कि एक खास समुदाय का नौजवान होने के लिए बॉलीवुड सितारे के बेटे को ताजा मामले में फंसाया गया है, पर धनकुबेरों और उनकी संतानों की नशाखोरी और रेव पार्टियों में शिरकत की यह कोई अनोखी और पहली घटना नहीं है। इन रेव पार्टियों में एक खास ट्रेंड उनमें होने वाली नशाखोरी के रूप में देखने को मिलता है। जब कभी भी ऐसी रेव पार्टियों पर छापे डाले गए हैं, उनमें धनकुबेरों के पास से भारी मात्रा में ड्रग्स पाया गया है। नशा बेचने और खरीदकर सेवन करने वाली भीड़ इनमें जुटती है और ऐसे-ऐसे ड्रग्स इनमें लिए जाते हैं जिनका नाम भी शायद जनता और मीडिया पहली बार सुनती है। खुफिया ढंग से कोड भाषा के जरिए संदेशों का आदान-प्रदान करने वाले लोग अब इसके लिए सोशल मीडिया का इस्तेमाल भी करने लगे हैं। हो सकता है कि फेसबुक-इंस्टाग्राम पर ही किसी कोड के लीक हो जाने से इस बार क्रूज पर आयोजित रेव पार्टी की जानकारी जांच एजेंसियों के अधिकारियों को हो गई।

सजा और सुधार का अभाव

आज की तारीख में देश के कई राज्य यह दावा करते हैं कि उन्होंने नशे के कारोबार की रोकथाम के कई उपाय किए हैं, लेकिन मादक पदार्थों की बढ़ती तस्करी साबित करती है कि ये उपाय कारगर नहीं हैं। जैसे हाल के वर्षों में पंजाब (जहां के युवाओं में नशे की लत की भीषण समस्या को फिल्म-उड़ता पंजाब में दर्शाया गया है) में राज्य सरकार ने इसकी कोशिशें कीं। तत्कालीन मुख्यमंत्री कैप्टन अमरेंद्र सिंह ने वर्ष 2018 में नशे के खिलाफ दो बड़े प्रावधान किए। एक प्रावधान के तहत उन्होंने केंद्र सरकार से इसकी इजाजात मांगी कि वह अपने राज्य में ड्रग तस्करों को पहली बार के अपराध में ही मौत की सजा देने का प्रावधान कर सके। अभी यह व्यवस्था मादक पदार्थों की तस्करी में दूसरी बार अपराध साबित होने पर लागू है। इसके अलावा उन्होंने पंजाब में सभी सरकारी कर्मचारियों के लिए ड्रग्स की जांच करने वाला डोप टेस्ट बाध्यकारी बनाने का ऐलान किया। पंजाब में नियुक्ति और पदोन्नति के लिए भी कर्मचारियों का यह डोप टेस्ट बाध्यकारी बनाया गया। हालांकि इससे पहले भी कैप्टन सरकार ड्रग्स के कारोबार को थामने की कुछ पहलकदमियां ले चुकी थी। जैसे, सत्ता में आने के कुछ समय बाद उन्होंने नशे की रोकथाम के लिए तत्कालीन एडिशनल डीजीपी हरप्रीत सिद्धू की अध्यक्षता में एक स्पेशल टास्क फोर्स का गठन किया था। इस स्पेशल टास्क फोर्स ने मादक पदार्थों की सप्लाई रोकने के सिलसिले में एक साल के अंदर करीब 19 हजार नशाखोरों-कारोबारियों को पकड़ा और इसी अवधि में दो लाख से ज्यादा नशापीड़ितों को इलाज मुहैया कराया गया। इस दौरान नशाविरोधी कानूनों के तहत वहां करीब 4000 लोगों को नशा व्यापार में दोषी करार दिया गया और राज्य की जेलों में साढ़े पांच हजार से ज्यादा ऐसे लोगों को भेजा गया। एक आकलन कहता है कि पिछले कुछ वर्षों में नशाविरोधी कानून के तहत सजा दिलाने के मामले में पंजाब सबसे आगे रहा है और यहां सजा का प्रतिशत 82 फीसदी से ज्यादा है।

नशा कर रहा नैतिक मूल्यों का पतन

नशीले पदार्थों की रोकथाम से जुड़े कानून देखें तो भारत में ड्रग्स की तस्करी को रोकने के लिए 14 नवंबर 1985 को नारकोटिक ड्रग्स एंड साइकॉट्रॉपिक अधिनियम यानी एनडीपीएस लागू हुआ था। इसके तहत ड्रग्स बनाना, भांग-अफीम आदि की खेती करना, बेचना, खरीदना और परिवहन करना अवैध है। इस अधिनियम में अब तक तीन बार 1988, 2001 और 2014 में संशोधन हो चुका है। यह अधिनियम भारत के सभी नागरिकों के साथ-साथ एनआरआई नागरिकों और भारत में पंजीकृत विमानों और जहाजों पर भी लागू होता है ताकि उनके जरिए ड्रग्स की तस्करी न हो सके। एनडीपीएस अधिनियम के कार्यान्वयन को सक्षम बनाने के लिए 17 मार्च 1986 को नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो बनाया गया। नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) भारत की मुख्य कानून प्रवर्तन और खुफिया एजेंसी है। ये मादक पदार्थों और अवैध तस्करी से लड़ने के लिए जिम्मेदार है। राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआईआई) केंद्रीय जांच ब्यूरो सीमा शुल्क आयोग और सीमा सुरक्षा बल अन्य प्रमुख सहायक एजेंसियां हैं। इन मामलों में सजा दवाओं की मात्रा पर निर्भर करती है। कम मात्रा में ड्रग रखने पर छह महीने की सजा और 10 हजार रुपये का जुर्माना हो सकता है। कम मात्रा से अधिक लेकिन व्यवसायिक मात्रा से अधिक ड्रग्स रखने के लिए 10 साल की कठोर जेल और 1 लाख रुपये का जुर्माना है। व्यावसायिक मात्रा रखने के लिए 10 से 20 साल की कठोर जेल और 2 लाख जुर्माना है। बहुत अधिक मात्रा में ड्रग्स रखने पर मौत की सजा भी हो सकती है, पर इसके उदाहरण दुर्लभ हैं। यूं तो पंजाब या बिहार सरकार नशे के खिलाफ कई उपाय करते दिखाई दे रही है, लेकिन जमीन पर इन उपायों की हकीकत काफी अलग रहती है। अफीम, चरस और शराब आदि नशों की चपेट में आई युवा पीढ़ी को समस्या से बचाने के जो उपाय आज तक आजमाए गए हैं, वे असल में अंदर से खोखले रहे हैं। एक बड़ा सवाल नशा छुड़ाने वाली तकनीकों और इलाज की पद्धतियों का भी है। हमारी सरकार की मौजूदा नीति ड्रग एडिक्शन से निपटने के लिए सिंगल कोर्स ट्रीटमेंट देने की है, जिसमें नशे के शिकार शख्स को चार से छह हफ्ते तक वैकल्पिक दवाओं से ट्रीटमेंट दिया जाता है। संयुक्त राष्ट्र नशे के इलाज की इस पद्धति को मान्यता तो देता है, लेकिन मौजूदा संसाधनों में आज के घोषित नशेड़ियों का इलाज शुरू किया जाए, तो उन सभी का इलाज करने में दस से बीस साल लग जाएंगे। एक समस्या यह भी है कि भले ही नशे के आदी युवक को उनके परिजन इलाज दिलाना चाहते हैं, लेकिन अक्सर उन्हें इन चिकित्सा पद्धतियों और इलाज के केंद्र का पता ही नहीं होता। ऊपर से सरकार का ज्यादा ध्यान सिर्फ पुनर्वास और सुधार केंद्रों पर टिका है जिससे समस्या का संपूर्ण निराकरण संभव नहीं है। एक दिक्कत यह भी है कि नशा सिर्फ एक खास इलाके तक सीमित नहीं रहता है, बल्कि नशे के कारोबारी धीरे-धीरे आसपास के इलाकों में भी अपना जाल फैला लेते हैं। जैसे, नशे की समस्या आज पंजाब तक सीमित नहीं है, बल्कि पड़ोसी राज्य हरियाणा इसकी चपेट में है, दिल्ली के स्कूल-कॉलेजों के सामने भी बच्चों को नशे से दूर रखना चुनौती बन गया है। हालात ये हैं राजस्थान का कोटा ड्रग्स का गढ़ माना जाने लगा है, उत्तराखंड के देहरादून, हल्द्वानी समेत अनेक इलाकों में शाम ढलते नशे का धुआं और शराब की गंध माहौल में फैलने लगती है। यह असल में एक सामाजिक समस्या भी है जो परंपरागत पारिवारिक ढांचों के बिखराव, स्वच्छंद जीवनशैली, सामाजिक अलगाव आदि के हावी होने और नैतिक मूल्यों के पतन के साथ और बढ़ती जा रही है।

नशे के तार यहां-वहां

यूं तो आदिकाल से सोमरस और भांग जैसे नशे का जिक्र मिलता है। अंग्रेजों की दासता के दौर में ब्रिटिश शासकों ने बंगाल में किसानों को धान के स्थान पर अफीम की खेती के लिए विवश किया था। बताते हैं कि उनकी इसी नीति का नतीजा 1943-44 के द ग्रेट बंगाल फेमिन यानी अकाल के रूप में दिखा था। इस अकाल में एक करोड़ मौतों का अंदाजा लगाया जाता है। आधुनिक काल में भारत में ड्रग्स की तस्करी के तार अफगानिस्तान, ईरान, पाकिस्तान, म्यांमार, लाओस, कंबोडिया, थाईलैंड और भूटान आदि मुल्कों से जुड़े रहे हैं। इन देशों की सीमाओं से भारत में ड्रग्स की खेप आती रहती हैं। अफगानिस्तान, ईरान, पाकिस्तान आदि देशों की तरफ से नशीले पदार्थों की तस्करी को ड्रग्स आतंकवाद के रूप में भी देखा गया है। अफीम की खेती वाले कई प्रमुख क्षेत्र आतंकवादी संगठनों जैसे लश्कर-ए-तैयबा, जैश-ए-मोहम्मद, अलकायदा और हिज्बुल मुजाहिदीन, उल्फा, नक्सली और माओवादी जैसे आतंकवादी संगठनों के गढ़ हैं। इन आतंकी संगठनों को काफी पैसा ड्रग्स की खेती और सप्लाई से मिलता रहा है। ऐसे में अगर मुंद्रा पोर्ट पर पकड़ी गई और अफगानिस्तान से आई अब तक की सबसे बड़ी खेप को आतंकवाद के परिप्रेक्ष्य में देखा जा रहा है, तो उसमें कोई गलती नहीं है। यह एक जाना-माना तथ्य है कि अफगानिस्तान दुनिया का एक बड़ा अफीम उत्पादक देश (दुनिया की कुल पैदावार का 80 फीसदी हिस्सा) है और अब ऐसे ज्यादातर इलाके आतंकी संगठन तालिबान के कब्जे में हैं। अब, जबकि तालिबान को सरकार चलाने के लिए ज्यादा पैसे की जरूरत होगी, बहुत संभव है कि वह इस जरूरत के लिए अफीम की खेती और ड्रग्स की सप्लाई के नए स्रोत और ठिकाने बनाए।

देसी लुक में हो जाए थोड़ा मॉडर्न टच...

• दीप्ति अंगरीश

फेस्टिव सीजन चल रहा है। यह सीजन अभी लंबे समय तक चलेगा। फेस्टिव सीजन के अलावा छुट्टियों का भी दौर आएगा। ऐसे में हर किसी का घर के बाहर आना-जाना लगा रहता है। कभी पार्टी में जाना है, तो कभी किसी मेहमान का स्वागत करना होता है। इसका मतलब यह नहीं कि आप भारी-भरकम कपड़ों में लिपट जाएं और फिर दिन भर असहज महसूस करती रहें। ऐसी ड्रेसिंग आपको हटकर दिखाने के बजाय आपका ग्लो ही छीन लेगी। एथनिक वियर में वेस्टर्न का ट्विस्ट आपको अंदर-बाहर से खूबसूरत तो दिखाएगा ही, आप कंफर्टेबपल महसूस भी करेंगी। देसी-विदेशी स्वैग में आप इस फेस्टिव सीज़न में कुछ हटकर भी दिखेंगी। इसलिए जब आप देसी लुक में थोड़ा माडर्न टच देंगी तो निश्चित रूप से यह आपको तो कंफर्टेबल लगेगा ही सामने वाले भी आपकी तारीफ ही करेंगे। इसलिए आइये इस फेस्टिव सीजन के दौरान हम कुछ नये फैशन पर चर्चा करें।

ज़री वाली कॉटन साड़ी

साड़ी फेस्टिव सीजन में शिमर वाली साड़ियां बहुत अच्छी लगती हैं। स्पेशल मौकों पर आप साड़ी ही पहनना चाहती हैं, तो ज़री वाली कॉटन साडियां मुफीद हैं। कॉटन साड़ियों में कामकाज करना आसान होता है। शिमर, एम्ब्रॉयडरी या कलर वाला ज़री बॉर्डर सूती साड़ी को कलरफुल बनाएगा।

क्रॉप-टॉप और लहंगा स्कर्ट

अगर लगता है कि लहंगा पहनकर आप किचन वर्क, ग्रीटिंग से लेकर पार्टी में असहज महसूस करेंगी, तो ब्राइट कलर के प्लेन या प्रिंटेड लंहगे के साथ क्रॉप टाप पहनें। क्रॉप टॉप की स्लीव की लंबाई कोहनियों से छोटी नहीं होनी चाहिए।

लॉन्ग कुर्ता और शरारा

आजकल शरारा और कुर्ता फैशन में है। इस्लामिक स्टाइल के ब्राइडल फैशन में आज तक हिट है शरारा। हटकर दिखना चाहती हैं, तो फेस्टिव सीज़न में लॉन्ग कुर्ते के साथ शरारा पहनें। कुर्ता शिमरी लुक के फैब्रिक और शरारा को कॉटन फैब्रिक में पहनें। फेस्टिव लुक को कम्पलीट करें दुपट्टे से।

हैवी दुपट्टा

हैवी दुपट्टा फेस्टिव लुक देता है। पर इसे आप डिफॉल्ट वार्डरोब में रखें। यानी जिसे आप कभी भी पहन सकते हैं। हैवी दुपट्टे के साथ कुर्ता आप चाहे सलवार, चूड़ीदार, सिगरेट पैंट या प्लाजो के साथ पहनें। फिर चाहे कुर्ते का फैब्रिक कोई भी हो। क्योंकि हैवी दुपट्टे पर ही नज़र टिकेगी। हैवी दुपट्टे में फुलकारी, बनारसी, कांथा वर्क या पैच वर्क अच्छा विकल्प है।

ट्यूनिक कुर्ता

कॉटन ट्यूनिक कुर्ते को जब हम एक लंबे कॉटन प्रिंटेड दुपट्टे के साथ पेयर करते हैं तो यह न केवल फेस्टिव पार्टी के लिए बल्कि गर्मी और उमस को मात देने के लिए सही पारंपरिक पोशाक बन जाता है। इसमें फ्लेयर्ड या लूज स्लीव्स चुनें। गहरे रंगों का विकल्प चुनें। मौसम अगर सर्दी का शुरू हो रहा है तो उसमें उससे मैच करती गर्म ड्रेस को भी पहना जा सकता है।

मैक्सी कुर्ता

मैक्सी कुर्ता फेस्टिव लुक देता है। इसके साथ बॉटम में सिगरेट पैंट या प्लाज़ो पहनें और हील की बजाय फ्लैट मोजड़ी पहनें।

एथनिक जैकेट

यदि आप ऐसे मौकों पर इंडियन या इंडो वेस्टर्न नहीं पहनना चाहतीं, तो सेमी फॉर्मल टॉप-पैंट-स्कर्ट के साथ एथनिक जैकेट पहनें। एथनिक जैकेट हैंडलूम फैब्रिक में ब्लॉक प्रिंटिंग या एम्ब्रॉयबडरी में आती है। इसे ट्राई करेंगे तो यकीन मानें यह भी आप पर फबेगा और आप अलग नजर आएंगी।

आउटर लुक्स पर फोकस

मेकअप में न्यूट्रल मेकअप और सिंगल स्टेटमेंट ज्वेलरी पहनें। ब्राइट कलर्स के आउटफिट के साथ मेकअप लाइट रखें। हेयर स्टाइल में फूलों का प्रयोग करें और बालों को खुला रखें। मैनेजेबल लुक के लिए बालों को एक दिन के लिए स्ट्रेट करवाएं।

12वीं के बाद नौकरी : ब्लड बैंक तकनीशियन में करें ट्राई...

• बालकिशन यादव

मेडिकल और क्लीनिकल लैब टेक्नोलॉजी के फील्ड में व्यापक श्रेणी में ब्लड बैंक टेक्नोलॉजी आती है। ब्लड बैंक तकनीशियन, आमतौर पर फ्लेबोटोमिस्ट के रूप में प्रशिक्षित किए जाते हैं और यह ब्लड को इकठ्ठा करने और लेबलिंग करने का काम करते हैं। ब्लड बैंक तकनीशियन आमतौर पर मेडिकल प्रयोगशालाओं और ब्लड बैंक्स में काम करते हैं। ये डोनर से ब्लड कलेक्ट करके स्टोर भी करते हैं। इसके अलावा ब्लड का टाइप, और कलेक्ट किया ब्लड सुरक्षित है कि नहीं, ब्लड में स्वस्थ अणुओं के स्तर का भी प्रशिक्षण करते हैं। ब्लड बैंक तकनीशियन का कोर्स नेशनल स्किल डेवलपमेंट कारपोरेशन के तहत आता है और इस कोर्स को करके आप एक अच्छा भविष्य तो बना ही सकते हैं साथ ही प्रधानमंत्री के मिशन कौशल भारत, कुशल भारत में भी साथ दे सकेंगे।

नेचर ऑफ़ वर्क

ब्लड बैंक तकनीशियन की ज्यादातर गतिविधियां कार्यालय आधारित होती हैं। वह ब्लड बैंक्स और प्रयोगशालाओं में ही काम करते हैं। डोनर से ब्लड लेकर उसकी बारीकी से रिसर्च करना, उस ब्लड का टाइप पता करने और खासकर वह ब्लड कितना सुरक्षित है यह देखना, आपातकालीन समय के लिए उस ब्लड को स्टोर करने तक का काम ब्लड तकनीशियन का ही होता है। इसके अलावा हॉस्पिटल्स की लैब में पेशेंट्स के ब्लड की जांच करना और उससे संबंधी जानकारियों को इकठ्ठा करना ही ब्लड बैंक तकनीशियन का काम होता है। इन सभी कार्य के साथ-साथ तकनीशियन ब्लड का रिकॉर्ड भी तैयार करता है। जो व्यक्ति इस फील्ड में अपने करिअर को आगे बढ़ाना चाहते हैं उनमें स्वतंत्र रूप से काम करने की क्षमता होनी आवश्यक है और साथ ही उनमे एक अच्छा विश्लेषणात्मक कौशल भी होना चाहिये।

कोर्स, योग्यता एवं अवसर

इच्छुक व्यक्ति का किसी भी संकाय वा किसी भी मान्यताप्राप्त बोर्ड से 12वीं पास होना अनिवार्य है। इन कोर्स के दौरान अभ्यर्थियों को प्रैक्टिकल ट्रेनिंग में खासा ध्यान रखा जाता है, जिसमें उन्हें तरह-तरह के ब्लड सैंपल्स की जांच करना सिखाया जाता है और इसके अलावा ब्लड की हर एक जरूरी तत्व को समझाया जाता है। साथ ही कोर्स के दौरान आपातकालीन स्थिति या किसी भी तरह की आपदा की स्थिति में किस तरह से निपटा जाए और कैसे उस स्थिति में काबू पाया जाए वह भी सिखाया जाता है। इस फील्ड में आप एसएससी के द्वारा भी परीक्षा देकर किसी भी सरकारी पद के लिए आवेदन कर सकते है। इस कोर्स में डिप्लोमा लेने के बाद हर राज्य में सरकारी व गैर सरकारी विभाग में नौकरी के कई नए अवसर खुल जाएंगे। इसके अलावा अभ्यर्थी प्राइवेट हॉस्पिटल्स या प्राइवेट लैब में भी काम करके खासा पैसा कम सकता है। वर्तमान समय की अगर बात की जाए तो मेडिकल लैब की मार्केट में भरमार है और बड़ी-बड़ी कंपनियां जैसे डॉ पैथ लैब और रैनबैक्सी की तो हर एक शहर में लैब है। इसमें ब्लड बैंक डिपार्टमेंट में ऐसे लोगों की अच्छी डिमांड है। इसके अलावा सरकारी अस्पतालों के ब्लड बैंक्स में भी नौकरी मिलने की संभावना बनी रहती है। डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कोर्स करने के बाद आप बतौर तकनीशियन किसी भी ब्लड बैंक में काम कर सकते हैं। और अनुभव के आधार पर आप रिसर्च करके ब्लड बैंक स्पेशलिस्ट भी बन सकते हैं। इन्हें शुरुआत में 10 से 15 हजार तक वेतन मिलता है। बाद में तजुर्बे के आधार पर उनके वेतन में इजाफा होता चला जाता है। साथ ही खुद का काम शुरू करने एवं प्राइवेट लैब में जाने का ऑप्शन बना रहता है।

प्रमुख संस्थान

दिल्ली पैरामेडिकल एंड मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट, नयी दिल्ली
महर्षि मार्कंडेश्वर यूनिवर्सिटी, अम्बाला, हरियाणा
शिवालिक इंस्टीट्यूट ऑफ पैरामेडिकल टेक्नोलॉजी, चंडीगढ़
इंडियन मेडिकल इंस्टीट्यूट ऑफ नर्सिंग, जालंधर, पंजाब

वित्त सलाहकार बन सच करें भविष्य के सपने

• बालकिशन यादव

वित्तीय मामलों में ज्यादातर आंकड़ों का खेल होता है। इसलिए एक अच्छा फाइनेंशियल एडवाइजर बनने के लिए जरूरी है कि आपको फाइनेंस की भाषा की अच्छी समझ हो। एक अच्छा फाइनेंशियल एडवाइजर वह होता है जो अपने ग्राहकों को अच्छी सर्विस, वित्तीय राय और सही गाइड कर सके। ये कई तरह की सर्विस देते हैं, जिनमें शामिल हैं-इन्वेस्टमेंट मैनेजमेंट, इनकम टैक्स प्रीप्रेशन और इस्टेट प्लानिंग। फाइनेंशियल एडवाइजर को फाइनेंशियल प्लानर भी कहा जाता है। फाइनेंस के सेक्टर में हो रहे विकास के कारण आज इस क्षेत्र में करिअर की काफी बेहतर संभावनाएं बनी हैं, ऐसा कहना है टीकेडब्ल्यूएस इंस्टीट्यूट ऑफ बैंकिंग एंड फाइनेंस के डायरेक्टर अमित गोयल का।

फाइनेंशियल एडवाइजर का काम

अपने ग्राहकों की वित्तीय स्थिति को सुधारने के लिए उपयोगी सलाह देने का काम फाइनेंशियल एडवाइज़र करते हैं। इनका काम अपने ग्राहकों को निवेश, बीमा, बचत योजनाओं, कर्ज आदि के बारे में सही सलाह देना होता है। साथ ही यह भी सुनिश्चित करना होता है कि ग्राहकों को ज्यादा से ज्यादा मुनाफा और कम से कम नुकसान हो।

योग्यता

फाइनेंस सेक्टर में करिअर बनाने के लिए आप कैट एग्जाम के जरिए भारत के किसी भी अच्छे कॉलेज में एडमिशन

ले सकते हैं। इस सेक्टर में उच्च शिक्षा के लिए किसी भी स्ट्रीम में बैचलर डिग्री का होना जरूरी है। वैसे, पहले केवल कॉमर्स के छात्र ही इस क्षेत्र में भविष्य बनाते थे, लेकिन इसके बढ़ते क्षेत्र को देखते हुए बीएससी (मैथ-बायो), बीए, बीबीए और बीई के छात्र भी एडमिशन ले सकते हैं। इस क्षेत्र में करिअर बनाने के लिए आप चाहें तो एमबीए इन फाइनेंस, एमएस इन फाइनेंस, मास्टर डिग्री इन फाइनेंशियल इंजीनियरिंग, पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन बैंकिंग एंड फाइनेंस, एडवांस डिप्लोमा इन बैंकिंग एंड फाइनेंस, मास्टर्स इन कमोडिटी एक्सचेंज आदि जैसे कोर्स कर सकते हैं।

नौकरी के अवसर

फाइनेंशियल एडवाइजर किसी कंपनी में अकाउंटेंट, ऑडिटर, इकोनॉमिस्ट, इंश्योरेंस सेल्स एजेंट, इंश्योरेंस अंडरराइटर, लोन ऑफिसर, पर्सनल फाइनेंशियल एडवाइज़र, टैक्स इंस्पेक्टर, रेवेन्यु एजेंट आदि के तौर पर काम कर सकते हैं। फाइनेंस में ग्रेजुएशन करने के बाद आप किसी बिजनेस अखबार, पत्रिका आदि में संवाददाता और वित्तीय विश्लेषक के रूप में भी काम कर सकते हैं। बैंक, इंश्योरेंस और ट्रेडिंग कंपनियां अपने वित्तीय उत्पादों मसलन-कर्ज, इंश्योरेंस, शेयर, ब्रांड्स और म्यूचुअल फंड को बेचने के लिए फाइनेंशियल एडवाइजर्स को नियुक्त करती है। विदेशों में भी फाइनेंशियल एडवाइजर्स की मांग काफी ज्यादा है। प्रोफेशनल चाहें, तो इंटरनेशनल फाइनेंसिंग कंपनी, लैंडिंग एंड बॉरोइंग, मल्टी करेंसी ट्रेडिंग आदि फाइनेंशियल कंपनियों में नौकरी की तलाश कर सकते हैं।

सैलरी वॉच

फाइनेंशियल एडवाइजर के तौर पर करिअर की शुरुआत करने पर ज्यादातर कंपनियां सैलरी के साथ-साथ कमीशन भी देती हैं। वैसे, शुरुआती दौर में सैलरी 20 हजार से 30 हजार रुपये प्रति माह हो सकती है। अनुभवी प्रोफेशनल्स की सैलरी 1 लाख से 2 लाख रुपये प्रति माह तक हो सकती है।

प्रमुख संस्थान

डिपार्टमेंट ऑफ फाइनेंशियल स्टडीज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली।
टीकेडब्लूएस इंस्टीट्यूट ऑफ बैंकिंग एंड फाइनेंस, नयी दिल्ली।
द इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड फाइनेंशियल एनालिस्ट ऑफ इंडिया, हैदराबाद, लखनऊ, कोलकाता, चेन्नई और पुणे।
इंस्टीट्यूट ऑफ फाइनेंशियल मैनेजमेंट एंड रिसर्च, चेन्नई
जेवियर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, भुवनेश्वर

सजावट करें ऐसी कि घर लगे बड़ा-बड़ा

अगर आपके घर में भी जगह की कमी है तो परेशान मत होइये। थोड़ी सी कोशिश से जहां आपका सामान सही फिट हो जाएगा वहीं घर भी बड़ा दिखेगा। यूं तो हमेशा ही अपने घर के डेकोरेशन पर ध्यान दिया जाता है, लेकिन ज्यादातर लोग त्योहारों के मौके पर ही ऐसा करते हैं। आप हमेशा घर की डेकोरेशन और समान को करीने से लगाने पर जोर देते रहें, इससे जहां नयापन आपको सुकून देगा, वहीं मेहमानों को भी घर अच्छा लगेगा। अगर आप अपने घर के सामान की सेटिंग सही से नहीं करते हैं तो भी आपकी काफी सारी जगह का नुकसान हो जाता है। इसलिए आज के समय आपको इस बात को ध्यान में रखने की आवश्यकता है कि सामान सेट कैसे करें। तो आइये सामान सेट करने के कुछ टिप्स पर बात हो जाये।

बुक शेल्फ से करें कमरा डिवाइड

अनेक फ्लैट या छोटे घर में काफी कम कमरे होते हैं और खाली जगह अधिक होती है। एक या दो कमरे ही उनमें ज्यादातर देखने को मिलते हैं। इस खाली जगह का प्रयोग आप दो अलग-अलग कमरों को विभाजित करने के लिए कर सकते हैं। विभाजन के लिए आप बुक शेल्फ का प्रयोग करें और कमरे की एक साइड को हॉल के रूप में भी प्रयोग कर सकते हैं।

सोफा कम बेड ले आएं

अगर आपके घर में जगह की कमी है तो आपको इस प्रकार के फर्नीचर का प्रयोग करना चाहिए। अगर आपके घर मेहमान आदि आ जाते हैं तो आप इसे उनके लिए बेड बनाने के काम ला सकते हैं और दिन में आप इसे एक सोफा के रूप में काम में ले सकते हैं जिससे जगह भी काफी सारी बच जाती है। अगर आपके घर स्टूडियो आदि है तो वहां यह बेड बहुत अच्छा काम देगा।

दीवार की सजावट करें

अगर आप बुक शेल्फ से विभाजित किए गए कमरे को अधिक आकर्षक बनाना चाहते हैं और कम जगह को ही बहुत अच्छा लुक देना चाहते हैं तो दीवारों को भूल कर भी नजरअंदाज न करें। दीवारों पर अगर आप पेंटिंग आदि चिपका देते हैं या फिर कोई अच्छा बैक ड्रॉप तैयार कर देते हैं तो काफी अच्छा लुक आता है। इससे आपके कमरे का स्पेस भी थोड़ा खुला खुला दिखता है।

घर के हर कोने का प्रयोग करें

अगर आप अपने छोटे-मोटे सामान के लिए जगह नहीं ढूंढ़ पा रहे हैं तो घर के कोने तलाशें। ये स्थान हम इग्नोर कर देते हैं, लेकिन यह बहुत काम आने वाली जगह होती है। इस जगह में आप फूलों के वास, कुर्सी इत्यादि रख सकते हैं। अगर आप कपड़े आदि को स्टोर करने की जगह ढूंढ़ रहे हैं तो आप को काफी सारा ऐसा फर्नीचर लेकर आना चाहिए जिसके अंदर आप को स्टोरेज का स्थान भी मिले। जैसे अगर आप बेड ले रहे हैं तो थोड़ा ऊंचा लें ताकि उसमें काफी सारा सामान आ सके। अगर आपके घर में हॉल में बहुत कम जगह है और आप डाइनिंग टेबल वहां पर नहीं रख सकते हैं तो आप एक ही बेंच जैसा स्टूल ले कर आ सकते हैं जिस का प्रयोग आप सभी खाना खाने या टीवी देखने के लिए कर सकते हैं। यह आप के लिए एक सोफा का भी काम करेगा। इस प्रकार के निवेश ही छोटे घरों में काफी लाभदायक रहते हैं और किफायती भी माने जाते हैं।

मनीप्लांट

प्यारी सी देखभाल... हरियाली सदाबहार

अपने घर के खुले कक्ष, बरामदे, बालकनी, बगीचे को सुंदर बनाने के लिए लोग अंदर और बाहर कई तरह के पेड़-पौधे लगाते हैं। पिछले तीन दशक से घर के बाहर या भीतर साफ हवा के लिए कुछ पेड़ों को लगाना बहुत फायदेमंद बताया गया है। सिर्फ साफ हवा ही नहीं बेल और पौधे मन की बैचेनी को दूर कर दिलो-दिमाग में सुकून और वैचारिक समृद्धि तक लाते हैं। इस लिहाज़ से मनी प्लांट एक पसंदीदा बेलदार पौधा है क्योंकि ये घर के किसी भी हिस्से में आराम से लग जाता है।

आप में से भी ज्यादातर लोग ऐसे होंगे जिनके घर में मनी प्लांट किसी न किसी रूप में अवश्य हरियाली बिखेर रहा होगा। कई लोग मनी प्लांट को बोतल में लगाकर घर में रख देते हैं। कुछ लोग तो पुराने बल्बों में भी मनी प्लांट को लगाकर सजा देते हैं। कई घरों में यह गमलों की शोभा बना दिखता है तो कहीं-कहीं जमीन पर ही शान से फैल रहा होता है। यह पौधा हरियाली में जितना अच्छा लगता है, उतना ही अच्छा यह फायदेमंद भी है।

हमारे घरों में कारपेट, गलीचे, डोर मैट, फर्नीचर आदि में बहुत से ऐसे कण होते हैं जो घर के अंदर भी हवा को प्रदूषित करते हैं। मनी प्लांट के एक-दो पौधे भी हों तो यह हवा को प्योरिफाई करने का काम करते हैं। यानी शुद्ध हवा आपको दिलाते हैं। मनी प्लांट यूं तो एक ही नाम से जाना जाता है, लेकिन असल में इसकी वैरायटी बहुत सारी होती हैं। कोई गहरे हरे रंग का तो कोई बहुत ही हल्के रंग का होता है। किसी में छोटे पत्ते होते हैं तो किसी में काफी बड़े पत्ते होते हैं। लेकिन सबसे अच्छी बात है कि आप मनी प्लांट को मिट्टी और पानी, दोनों में ही उगा सकते हैं। यह पौधा जितना फायदेमंद है उतना ही अच्छा है लगने में। यानी कि आप कहीं भी इसे लगा सकते हैं और इसकी देखभाल के लिए बहुत ज्यादा मशक्कत की जरूरत नहीं होती। बागवानी विशेषज्ञों के अनुसार, मनी प्लांट का पौधा जहां रखो वहां कुछ बातों पर गौर करना ही चाहिए। दरअसल मनीप्लांट बेल है ना कि पौधा। इसे बढ़ने के लिए सहारे की ज़रूरत होती है। इसलिए इसे थोड़ा बढ़ने के बाद किसी डोरी की सहायता से जरूर बांध दें। इसके तने को किसी लकड़ी या प्लास्टिक के खंबे के साथ बांध दें तो यह जल्दी बढ़ेगा।

पानी में लगाएं मनीप्लांट

मनीप्लांट को किसी बोतल में लगाना ज्यादा बेहतर होता है। जब उसकी जड़ें निकल आएंगी तब उसे किसी गमले में लगा दिया जाए। इससे वे जल्दी उगेंगे।

पानी की सही मात्रा का ध्यान रखें

ऐसा नहीं है कि मनीप्लांट को हरा बनाए रखने के लिए आप इसमें हर वक्त पानी डालते रहें। इसमें ज्यादा पानी नहीं डालना चाहिये। इन्हें उगने के लिये ज्यादा पानी की आवश्यकता नहीं होती। हमेशा मौसम के हिसाब से पानी डालें।

हल्की धूप में रखें

मनीप्लांट को धूप बहुत पसंद है लेकिन ज्यादा तेज धूप इसे नुकसान पहुंचा सकती है। आप उसे खुली खिड़की पर रखेंगे तो पाएंगे कि वह सूरज की ही ओर ग्रो कर रहा होगा। इसलिये मनीप्लांट को रोज़ तो नहीं पर फिर भी एक-एक दिन छोड़ कर धूप दिखाएं।

खाद भी डालें

जब आप मनीप्लांट को पानी से निकाल कर मिट्टी के गमले में लगा दें तो इसमें आपको खाद भी डालनी चाहिए। इसमें किसी भी प्रकार की खाद प्रयोग कर सकते हैं। प्लांट की सूखी पत्तियां और बेलों को काट कर उनकी ग्रोथ को बढ़ा सकते हैं।

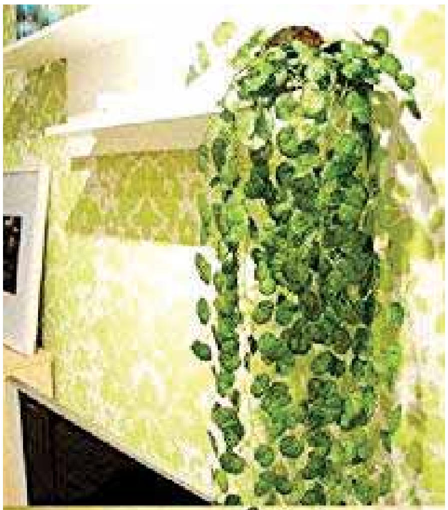

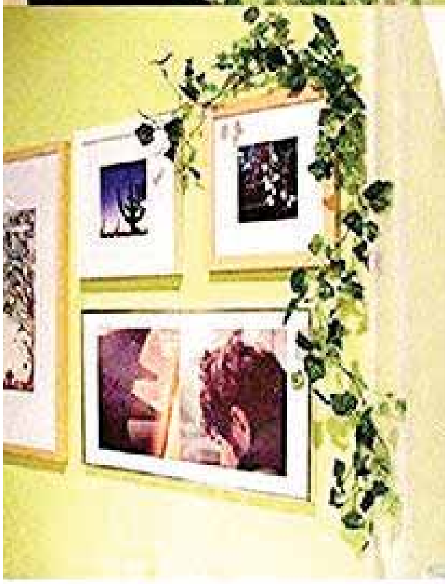

सावधानियां

मनी प्लांट को अधिक धूप में न रखें। इसे घर के अंदर या छायादार आंगन में भी रखा जा सकता है। अगर बगीचा नहीं है तो इसे हमेशा पानी में रखना और इसे बढ़ते देखना बेहतर होता है, लेकिन इस पानी को हर सप्ताह बदल देना चाहिए। ज़मीन पर लगा है तो इसकी बेलों को नहीं फैलाना चाहिए। उन बेलों को ऊपर जाने दीजिये, आप महसूस करेंगे कि सुंदरता बढ़ जाएगी। अच्छा होगा कि मनीप्लांट घर की किसी ऐसी दिशा में हो जहां हवा और हल्की रोशनी आ रही हो हफ्ते या दो हफ्ते में एक बार प्लांट की मिट्टी को चेक करते रहें। मिट्टी में अगर पानी की मात्रा ज़्यादा लग रही हो, तो उसमें पानी की मात्रा कम डालें या इसके थोड़ा सूखने का इंतज़ार करें। ध्यान दें कि मिट्टी पूरी तरह सूखे नहीं। हमेशा हल्की नमी वाली खाद इस पौधे के लिए बेहतर होती है। इसका सबसे अच्छा तरीका है कि पॉट के नीचे एक होल कर दें, ताकि अतिरिक्त पानी निकल जाए। यह पौधा हमेशा हल्की नमी में ज्यादा अच्छे से खिलता है। यह कटिंग से भी बहुत अच्छा लग जाता है।

सर्वाइकल से पार पाने को नियमित व्यायाम जरूरी

• रितु ढिल्लों

गर्दन में दर्द, अकड़न, कंधों में दर्द, हाथ-पांव में सूनापन और हाथ-पैरों में कमजोरी महसूस होना, शारीरिक संतुलन गड़बड़ाना, यह सर्वाइकल के लक्षण हैं। सर्वाइकल की परेशानी आमतौर पर गलत पॉजीशन में बैठने और सोने से होती है। लगातार गलत पॉजीशन के कारण रीढ़ की हड्डी के गर्दन वाले हिस्से में सूजन से शुरू होने वाली यह तकलीफ खासकर कंप्यूटर पर काम करने वालों को ज्यादा होती है। अब कंप्यूटर से कहीं ज्यादा यह परेशानी मोबाइल के अधिक प्रयोग से हो रही है। बदलते मौसम में सभी तरह के दर्द परेशान करने लगते हैं लेकिन सर्वाइकल की परेशानी काफी बढ़ जाती है। कोविड के चलते वर्क फ्रॉम होम के दौरान लोगों को सर्वाइकल ने ज्यादा परेशान किया। घर में बिस्तर पर बैठे लैपटॉप या मोबाइल पर काम करने से हमारा पॉश्चर ज्यादा खराब हो गया है। बच्चे तो ऑनलाइन क्लास के चलते घंटों स्क्रीन के सामने रहने के

बाद रही सही कसर मोबाइल पर गेम खेलकर पूरी कर देते हैं, ऐसे में सर्वाइकल की परेशानी उन्हें भी हो रही है। ध्यान रहे जिन लोगों का काम बैठे रहना ज्यादा है उन्हें बदलते मौसम में अपने आप पर ध्यान देना ज्यादा जरूरी है।

नियमित व्यायाम

डॉक्टरी सलाह के बाद फिजियोथेरेपी कराना फायदेमंद रहता है। यदि दिक्कत शुरूआती चरण में हैं तो चिकित्सक खुद ही व्यायाम की सलाह देते हैं और कौन सा व्यायाम कैसे और कितनी देर करना है, यह भी बताते हैं।

घरेलू उपाय

गर्म दूध में थोड़ी हल्दी डालकर पीएं। हल्दी में एंटी ऑक्सीडेंट और इनफ्लेमेट्री गुण पाए जाते हैं।
अदरक भी दर्द निवारक का काम करता है। अदरक का इस्तेमाल आप चाय, दूध या फिर दाल सब्जी में भी कर सकते हैं। लहसुन एक बहुत ही अच्छा एंटी ऑक्सीडेंट है। रोजाना सुबह खाली पेट लहसुन की दो कलियां खाने से काफी फायदा मिलता है। नमक का पानी दर्द निवारक का काम करता है। शरीर के दर्द वाले हिस्से में गर्म पानी में नमक डालकर उससे सिकाई करें।

खेलने से दूर होगी समस्या

शारीरिक व्यायाम और आउटडोर खेलों में कमी के कारण भी बच्चों को यह समस्या होने लगी है। इस संबंध में जानकारों का कहना है इन सब परेशानियों से बचना है तो सबसे पहले संतुलित आहार लें, जिसमें बसा कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन और खनिज सही अनुपात में हों।

पॉश्चर का रखें ख्याल

कंप्यूटर पर काम करते समय या फिर मोबाइल का प्रयोग करते समय अपने शरीर के पॉश्चर का ध्यान रखें। बैठते समय रीढ़ की हड्डी सीधी रहनी चाहिए। लगातार गर्दन झुकाकर घंटों काम करने से रीढ़ की हड्डी के ऊपरी भाग पर जोर पड़ता है और यही सर्वाइकल का कारण बनता है। हर आधे घंटे में एक अपनी सीट से उठकर थोड़ा टहल लें।

क्या कहते हैं डॉक्टर

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के डाक्टर केएम नाधिर कहते हैं कि गर्दन की हड्डी सबसे ज्यादा इस्तेमाल होती है। यह भी ध्यान रखना होगा कि रीढ़ का गर्दन वाला हिस्सा थोड़ा कमजोर भी होता है। इसलिए थोड़ी सावधानी की जरूरत होती है। नियमित रूप से व्यायाम न करने से मांशपेशियां कमजोर हो जाती हैं। खानपान का भी ध्यान रखना जरूरी है। गर्दन के दर्द की अनदेखी न करें। हड्डी रोग विशेषज्ञ से सलाह लें।

हल्के तकिये का इस्तेमाल

पुरानी कहावत है, 'चेंज ऑफ वर्क इज रेस्ट,' इस कहावत को अमल में लाएंगे तो शरीर पर काम का प्रेशर कम होगा। रात में सोते समय मोटा तकिया लगाने से बचें। हल्के तकिए का इस्तेमाल करते हुए गर्दन के नीचे पूरी सपोर्ट मिलती रहती है। इसके लिए आप तकिए के बजाय किसी चादर या तौलिये का इस्तेमाल कर सकते हैं। कई बार कैल्शियम और विटामिन-डी की कमी भी इस तरह की परेशानियों का कारण बन जाती है। इसलिए 40 वर्ष की उम्र के बाद नियमित रूप से जांच कराते रहें। रोज़ाना आधा घंटा धूप में बैठें। धूप शरीर के लिए बहुत जरूरी है। इसलिए हर किसी को कुछ देर धूप में रहना ही चाहिए।

...जब सुबह-सुबह चेहरे पर दिखे सूजन

• कुमार गौरव अजीतेन्दु

सुबह-सुबह उठते ही कुछ लोगों को अपने चेहरे पर सूजन दिखाई देती है। यह सूजन दो से तीन घंटे तक बनी रहती है जिसकी वजह से कई बार चेहरा भी खराब दिखता है। चेहरे पर सूजन आना शरीर के अंदर पल रहे किसी रोग का संकेत भी हो सकता है। कबीरधाम, छत्तीसगढ़ में जिला नोडल चिकित्सा अधिकारी डॉ शशांक शर्मा बताते हैं कि इस परेशानी की कई वजहें हो सकती हैं।

किडनी की समस्या

किडनी मनुष्य के शरीर से टॉक्सिन को बाहर निकालती है। यदि शरीर की गंदगी बाहर नहीं निकल पाती है तो ये टॉक्सिन शरीर में ही इक्ट्ठे हो जाते हैं और पूरी रात शरीर में ही रहते हैं। इन टॉक्सिन की वजह से ही सुबह 1 से 2 घंटे तक चेहरे पर भारी सूजन दिखाई दे सकती है।

मीठा या नमकीन भोजन

खान-पान लोगों के स्वास्थ्य पर सीधा प्रभाव डालता है। यदि आप रात को खाने में ज्यादा मीठा या नमक का सेवन करते हैं तो आपके चेहरे के टिशू पानी को जमा कर लेते हैं जिसकी वजह से सुबह-सुबह चेहरा सूजा हुआ दिख सकता है।

हार्मोनल चेंज एवं एनीमिया

महिलाओं में पीरियड्स के दौरान शरीर में प्रोजेस्टेरोन हार्मोन बढ़ जाता है जिसकी वजह से पीएमएस के लक्षणों के साथ ही चेहरा फूला हुआ दिखाई देता है। पीरियड के दौरान ब्लोटिंग होने से भी चेहरे में सूजन हो सकती है। इसके अलावा चेहरे की सूजन का मेडिकल टर्म में एक बड़ा कारण एनीमिया भी माना गया है। एनिमिक लोगों को सुबह आंखों और आसपास के हिस्से में सूजन का सामना करना पड़ सकता है। इसके अलावा दांतों की कोई दिक्कत, साइनस की समस्या भी चेहरे पर सूजन का कारण बन सकती है।

क्या करें उपचार?

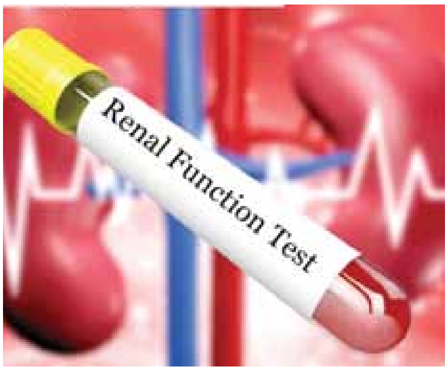

कबीरधाम, छत्तीसगढ़ में नोडल चिकित्सा अधिकारी डॉ शशांक शर्मा के मुताबिक सबसे पहले आ रही सूजन के सही कारण का पता लगाएं। किडनी का टेस्ट करा लें और पानी भरपूर मात्रा में पिएं। हीमोग्लोबिन टेस्ट भी करा लेना चाहिए जिससे कि यदि एनिमिया की दिक्कत होगी तो पकड़ में आ जाएगी। अपनी डाइट में फाइबर का सेवन करें। पपीता खाना भी बहुत फायदेमंद होता है। पपीता पेट और आंतों को स्वस्थ रखने में मदद करता है। पपीते के सेवन से शरीर पतला रहता है, साथ ही यह विटामिन सी, बीटा-कैरोटीन और एंटीऑक्सिडेंट युक्त होता है, जो त्वचा में पानी को जमने से रोकता है। अपने भोजन में ऐसी चीजों का सेवन बढ़ा दें, जो शरीर में हीमोग्लोबिन की कमी को पूरा करती हैं। जैसे, हरी सब्जियां, अनार, टमाटर, चुकंदर और लाल शिमला मिर्च। दिक्कत बढ़ती हुई लगे तो डॉक्टर से संपर्क करें।

...ताकि सर्दियों में भी मुस्कुराते रहे आपके गुलाब के पौधे

• रजनी अरोड़ा

पौधा लगाते समय रखें ध्यान

नर्सरी से पौधा लेते समय ध्यान रखें कि प्लास्टिक बैग के छेद से जड़ें बाहर न निकल रही हों। घर पर लाकर कम से कम 4-5 दिन बाद ही गमले में लगाएं। प्लास्टिक के बजाय सीमेंट या मिट्टी के 8-10 इंच का गमला लें। गुलाब के लिए मिटटी धूप में सुखाकर इस तरह मिलाएं- गोबर की खाद, वर्मी कम्पोस्ट, बजरी रेत, रेत, पत्तों की खाद, मिटटी, नीम खली, आयरन डस्ट, कोको पीट। कोशिश करें प्लास्टिक बैग में आए पौधे को निकालकर बाल्टी में पानी में भिगो दें ताकि उस पर लगी लाल मिट्टी हट जाए। क्योकि यह मिट्टी पौधे की जड़ों को फैलने नही देती और पौधे का विकास ठीक तरह नहीं हो पाता। सिर्फ जड़ के साथ पौधे को गमले में लगाएं। ऊपर से पानी दें। नए लगाए पौधों को एक सप्ताह तक सीधी धूप में न रखें और रोजाना पत्तों पर शॉवरिंग जरूर करें।

रेगुलर करें प्रूनिंग

सबसे जरूरी है देसी गुलाब की हार्ड प्रूनिंग और अंग्रेजी गुलाब की सॉफ्ट। यानी फूल आने के बाद पौधे पर लगे रह जाते हैं और सूख जाते हैं। इन फूलों को कैंची या कटर की मदद से फूल की डंडी से थोडा नीचे नोड एरिया से काट दें। थोडी-सी हल्दी में पानी मिलाकर बना पेस्ट या रुटीन हार्मोन कटिंग वाली जगह पर लगाएं। इससे पौधे में डाई बैक नामक बीमारी नहीं लगेगी यानी कटिंग की गई डंडी नहीं सूखेगी। कटिंग वाली जगह से शाखाएं निकलेंगी और ज्यादा फूल आएंगे।

स्पाइडर जाले से बचाएं

पत्तियों पर स्पाइडर जाले बना लेते हैं जिसकी वजह से वो खराब हो जाती है और पौधा भी खराब हो जाता है। इससे बचने के लिए पत्तों को काट देना चाहिए ताकि पौधा खराब न हो। इसके लिए एक चम्मच कीटनाशक या नीम ऑयल को पानी में मिलाकर पौधे पर सप्ताह में एक बार स्प्रे करें। इसके साथ ही फंगस लगने से पौधे की पत्तियों में काले रंग के स्पॉट्स पड़ जाते हैं या पत्तियां पीली पड़ जाती हैं। जिससे पौधा खराब हो जाता है। फंगस से बचाने के लिए मिट्टी में हल्दी पाउडर डाल कर हल्की-सी गुड़ाई कर देनी चाहिए। गुड़ाई करके ऊपर की थोड़ी मिट्टी निकाल दें और उसे 1-2 दिन के लिए धूप लगने दें। या फिर एक लिटर पानी में तकरीबन 10 ग्राम हल्दी पाउडर मिलाकर पौधे पर स्प्रे भी कर सकते हैं।

कीड़ों से बचाएं

गुलाब के पत्तों और कलियों पर काले रंग के छोटे-छोटे चिपचिपे कीड़े लग जाते हैं जो कलियां खिलने नहीं देते। इन कीड़ों को हटाने के लिए हर 15 दिन में लिक्विड सोप को 1 लिटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें। इसमें नीम का तेल भी मिला सकते हैं। पौधे में कई डैड शूट बन जाती हैं जिनमें ऊपर से कोई नयी शाखा विकसित नही होती। उसके ऊपर सिर्फ पत्तियां होती हैं। ऐसी डैड शूट की प्रूनिंग करके हल्दी का पेस्ट लगाना चाहिए। थोड़े समय बाद उनमें से नयी शाखाएं निकल आती हैं और पौधा घना हो जाता है और फूल ज्यादा आते हैं। ध्यान रखें कि अक्सर पौधे में छोटी-पतली शाखाएं निकलती रहती हैं जिन्हें काटकर निकाल देना चाहिए। इनसे पौधे की बढ़त रुक सकती है। यह भी ध्यान रखें कि गुलाब का पौधा हैवी-फीडर है यानी फूल ज्यादा पाने के लिए फर्टिलाइजर डालने की ज्यादा जरूरत होती है। सर्दियों में गुलाब के पौधे में अच्छी तरह डीकम्पोज्ड गोबर खाद डालना बेस्ट है। यह खाद पौधे को न्यूट्रीशन के साथ ऊष्मा भी प्रदान करेगी। खाद डालने से पहले मिट्टी की 1-2 इंच गुड़ाई जरूर कर लें। जड़ के आसपास से थोड़ी मिट्टी निकाल लें। बोन मील, नीम खली, मस्टर्ड केक और पोटाश मिलाकर खाद डालें। मिट्टी में अच्छी तरह मिलाएं और पानी डालें। 10-12 दिन बाद वर्मी कम्पोस्ट, बनाना पील फर्टिलाइजर देना फायदेमंद हैं। प्याज के छिलके का पानी भी डाल सकते हैं।

धूप में रखें

पौधे की अच्छी बढ़त और ज्यादा फूल पाने के लिए पौधे को 4-5 घंटे धूप में रखना बहुत जरूरी है। सप्ताह में एक बार गुड़ाई जरूर करें। उसमें लगी घास या गिरी हुई पत्तियों को बराबर निकालते रहें। इनसे मिट्टी में फंगस लग सकती है और पौधे की ग्रोथ पर असर पड़ता है। सर्दियों में पौधे को पानी तभी दें जब ऊपर की मिट्टी पूरी तरह सूख जाए। आमतौर पर 3 दिन बाद ही पानी दें।

सर्दियों में गुलाब का फूल उस कदर नहीं खिल पाता, जैसी रंगत उसमें होती है। पौधे की ठीक तरह से देखभाल न करने से उसमें कई बीमारियां भी लग जाती हैं। इससे पौधे की ग्रोथ अच्छी नहीं हो पाती और मनचाहे फूल नहीं आ पाते। जरूरी है कि इस बदलते मौसम में कुछ ध्यान रखें। आइये जानते हैं कि सर्दियों में क्या देखभाल हो कि गुलाब खिला-खिला सा हो।

ठिठुरती त्वचा भी बोले, निखर-निखर गयी

• निधि गोयल

सर्दी से बचने के हम-आप तमाम जतन तो करते हैं, लेकिन कई बार त्वचा की तरफ से उदासीन रहते हैं। आलम यह होता है कि कुछ ही समय बाद त्वचा हमें अजीब अहसास कराने लगती है। इसलिए सर्दियों में त्वचा की तरफ विशेष ध्यान देने की जरूरत है। जिससे मानो त्वचा कह उठे-निखर-निखर गयी, संवर-संवर गयी, खिला गुलाब की तरह मेरा बदन। असल में सर्दियां शुरू होते ही सबसे ज्यादा असर स्किन पर ही पड़ता है। इस मौसम में स्किन पहले की तरह नर्म और चमकदार के बजाय रूखी और बेजान नजर आने लगती है। ऐसे में आप कुछ भी मेकअप करती हैं वह उतना अट्रैक्टिव नजर नहीं आता। ब्यूटीशियन बबीता बत्रा कहती हैं कि सर्दियों में चेहरे पर सिर्फ ड्राइनेस महसूस होती है। इसलिए जरूरी है कि हम सर्दियों में अपनी स्किन का खास ख्याल रखें। अपने रुटीन में स्किन केयर को भी आवश्यक समझ लें। सर्दियों में त्वचा की विशेष देखभाल किस तरह से करें, आइये जानते हैं।

सोने से पहले चेहरा साफ करें

हमेशा ध्यान रखें कि सोने से पहले चेहरा अच्छी तरह से साफ हो जाये। क्योंकि पूरे दिन की गदंगी फेस पर जमा होती है। साथ ही याद रहे कि चेहरे को कभी भी रगड़ कर नहीं धोना चाहिए। साथ ही स्किन को देखते हुए फेस वॉश का इस्तेमाल करें। सर्दियों में बहुत ज्यादा ड्राई करने वाले फेस वॉश से बचें। इसके अलावा माइश्चराइज करना भी जरूरी है। आजकल के मौसम में आपने देखा होगा कि चेहरा धोते ही स्किन काफी ड्राई हो जाती है। ऐसे में चेहरे के साथ पूरे शरीर पर मॉइश्चराइजर का इस्तेमाल करें। इससे त्वचा में नमी आएगी और त्वचा दमकने लगेगी।

मॉइश्चराइजर के साथ क्रीम, लोशन या नारियल तेल का प्रयोग भी कर सकती हैं। साथ ही सनस्क्रीन की सहायता से त्वचा को बचाएं। क्योंकि त्वचा पर सनस्क्रीन की एक लेयर बन जाती है। जो सूरज की किरणों से बचाव करती है। गर्मियों मे तो सनस्क्रीन की जरूरत पड़ती है, लेकिन सर्दियों में भी इसकी जरूरत होती है। असल में हम सारे दिन धूप में बैठे रहते है। इससे त्वचा पर असर पड़ता है। सनस्क्रीन लगाएंगे तो त्वचा पर प्रतिकूल असर नहीं पड़ेगा। इसके साथ ही यह ध्यान भी रखें कि सर्दियों में हम सबसे ज्यादा गलती यही करते हैं कि हम पानी बहुत कम पीते हैं। इसका असर हमारी त्वचा पर दिखता है। पानी कम पीने से भी आपकी त्वचा रूखी हो सकती है। इसलिए भरपूर मात्रा में पानी पीएं ताकि आपकी त्वचा हाइड्रेट रहे। सर्दी के मौसम में होंठ भी फटने लगते हैं। इसके लिए एक अच्छे लिप बाम या फिर देसी घी का इस्तेमाल करें।

नींबू और शहद का फेस पैक

एक बाउल में नींबू का रस और शहद मिलाएं। अब इस मिश्रण को रुई से चेहरे पर लगाएं। 10 मिनट इसे चेहरे पर लगा रहने दें और फिर पानी से धो लें।

घरेलू नुस्खे

सर्दियों में दमकदार त्वचा के लिए कुछ घरेलू नुस्खों को भी आजमाया जा सकता है। जैसे पपीते का छिलका। पपीते के छिलके को अच्छे से मसल लें, ताकि इसमें गांठ न पड़े। अब इसमें दो चम्मच शहद मिला लें। फिर इस पेस्ट को अपने चेहरे और शरीर की अन्य रूखी त्वचा पर लगाएं। पैक को थोड़ा सूखने दें और फिर धो लें। ये पैक त्वचा को नर्म और मुलायम बनाए रखता है।

ग्लिसरीन

सबसे पहले अपने चेहरे को धोकर हल्का-सा पोछ लें। अब रुई को ग्लिसरीन में डुबाकर अपने चेहरे पर लगाएं। ध्यान रहे कि ये आपके आंखों और मुंह में न जाए। इसे रात को सोने से पहले भी लगा सकते हैं। फिर अगली सुबह इसे धो लें। इसके अलावा नारियल तेल को अपनी रूखी त्वचा पर लगाकर छोड़ दें। अगर त्वचा तैलीय है, तो इसे किसी फेस पैक में मिलाकर लगाया जा सकता है।

कच्चा दूध और शहद

एक बाउल में दूध और शहद मिला लें। इस मिश्रण को रुई की मदद से चेहरे पर लगाएं। लगभग 15-20 मिनट के बाद चेहरे को ठंडे पानी से धो लें।

सर्दी का हॉट लुक

• दीप्ति अंगरीश

सर्दी के दस्तक देते ही आप सबसे पहले वार्डरोब में फेरबदल करते हैं। वैसे हर मौसम का अलग मजा होता है। मौसम के हिसाब से ही हम कपड़ों का चुनाव करते हैं पर कभी-कभी सर्दी के भारी-भरकम कपड़े बोर करने लगते हैं। ऐसे में अगर विंटर में भी समर वियर से मोह कर रहे हैं तो तुछ खास टिप्स भी अपनाएं। जानते हैं समर वार्डरोब को विंटर वार्डरोब में तबदील करने के कुछ तरीके।

स्लीवलेस कुर्ती व टी शर्ट

आप गर्मी वाली स्लीवलेस कुर्ती व टी शर्ट सर्दी में पहन सकते हैं। इसके लिए लेयरिंग टिप अपनाएं। इसके नीचे टर्टलनेक का गर्म टॉप और ऊपर पहनें स्लीवलेस कुर्ती व टी शर्ट। यह टर्टलनेक आपको गर्माहट देगा और बाहर से देखने में बहुत सुंदर लगेगा। साथ ही विंटर वियर में समर वियर का मोह कायम रहेगा।

कॉटन वियर को स्वेटशर्ट का साथ

यदि आपके पास टर्टलनेक का वॉर्म टॉप, ट्यूनिक या कुर्ती नहीं है, तो मन नहीं मसोसिए। स्वेटशर्ट इसकी कुछ-कुछ भरपाई कर पाएगी। इस पर अपर वियर पहनें और उसके ऊपर रंग-बिरंगी स्वेटशर्ट। लोअर में जींस, जेगिंग, वार्म प्लाज़ो। दिखने में यह लुक आपको कूल दिखाएगा।

गर्मी वाली स्कर्ट्स

स्कर्ट्स से ओवरऑल लुक बदल जाती है, पर ठिठुरन वाले मौसम में इसे पहनना समझदारी नहीं है। पर स्मार्ट हैक्स के जरिए इसे सर्दी में पहनना संभव है। आप जिस भी वेरायटी की स्कर्ट पहनते हैं उसे इस मौसम में टाइट फिटिंग की लेगिंग , स्टॉकिंग्स या हाई लेंथ बूट के साथ पहनें। इस लुक को सुंदर बनाएं जैकेट और स्टोल से।

रंगों को पहनें

अमूमन विंटर वार्डरोब का मतलब होता है ब्लैक, ब्लू, ब्राउन और महरून कलर। ये रंग अच्छे लगते हैं, पर इनके लगातार इस्तेमाल से लुक बेरौनक लगती है। नतीजतन कॉन्फिडेंस डगमगाता है। इसका बेस्ट प्रयोग है गर्मी वाले रंग-बिरंगे कपड़ों को पहनना। इन्हें पहनिए सर्दी वाले तरीके से।

सैंडल्स भी रखें शू रैक में

गर्मी वाले सैंडल्स को हॉट-हॉट स्टाइल से पहनें। इसे स्टाइलिश लुक देंगी कुशन सॉक्स, थिक सॉक्स, प्लश स्लिपर सॉक्स, फ्लीस सॉक्स आदि।

ऑफ शोल्डर और क्रॉप टॉप

ये टॉप आपके पसंदीदा हैं, पर सर्दी में इन्हें पहनना टफ है। स्टाइलिंग हैक से यह संभव है। क्रॉप टॉप को बॉडी टाइट फिटिंग पुलोवर के साथ टीम अप करें। पुलोवर स्किन कलर जैसा हो या क्रॉप टॉप के रंग से कंट्रास्टिंग हो। इसे टाइट कार्डिगन, ब्लेज़र, ट्रेंच कोट, जैकेट्स, स्टोल, पोंचू व शॉल स्वेटर से टीमअप करें।

फ्यूजन को भूले नहीं

सर्दी में भी साड़ी पहनना पसंद करती हैं, तो ट्विस्ट अपनाएं। फ्यूजन को भूले नहीं। वार्म ब्लाउज, नी सॉक्स पहनें। आजकल गर्म साड़ियां भी मिलती हैं। साड़ी के साथ वेस्ट लेंथ का कोट पहनें। पल्ला आगे की तरफ रखें।

प्लाज़ो पैंट भी पहनें

वैसे तो वार्म प्लाजो भी बाज़ार में उपलब्ध हैं। पर आप गर्मी वाले प्लाज़ो सर्दी में पहन सकते हैं। इसे पहनने का स्टाइल अलग है। इसे टाइट फिट ब्लैक या ग्रे कलर की जैकेट और एंकल लेंथ बूट्स के साथ पहनें। ठंड ज्यादा लगती है, तो नी सॉक्स भी पहनें।

मैक्सी या स्लीप ड्रेस

हर मौसम में मैक्सी या स्लीप ड्रेस अच्छी लगती है। इनकी लंबाई एंकल तक होने से टांगों में ठंड कम लगती है। इस मौसम में भी इन्हें पहनिए। फिर चाहे फैब्रिक समर वाला क्यों न हो। इसे गर्माहट दें फैंसी व वूलन श्रग, जैकेट, लॉन्ग कॉर्डिगन और लॉन्ग बूट से।

डेनिम ड्रेस और कुर्ती

इस मौसम में आप पसंदीदा समर वियर ड्रेसेज, जैसे- डेनिम ड्रेस और कुर्ती पहनना चाहते हैं, तो इसे विंटर वियर से टीमअप करें। इसके लिए जैकेट, स्वेटशर्ट, ब्लेज़र, ट्रेंच कोट के साथ पहन सकते हैं।

फ्लैशबैक

हिंदी फीचर फिल्म 'महल'

• शारा

अशोक कुमार, उनके भाइयों तथा मधुबाला के फिल्मी एवं निजी जीवन के बारे में फ्लैशबैक के पाठक बहुत कुछ पढ़ चुके हैं। आज बात करते हैं स्वर सम्राज्ञी लता मंगेशकर से जुड़े एक छोटे से किस्से की। क्योंकि उसका सीधा संबंध आज की आलोच्य फिल्म 'महल' से है। लता मंगेशकर, उनके पिता, भाई-बहनों के बारे में बहुत कुछ पाठक जानते हैं। यह भी जानते हैं कि लता ने शुरू में बहुत संघर्ष किया। बड़ी बहन होने के नाते उन पर परिवार की परवरिश का जिम्मा आ गया था क्योंकि पिताजी का निधन हो गया था। उनके संघर्ष के समय ही फिल्म महल आई और उसके गीत सुपरहिट हुए। सबसे ज्यादा प्रसिद्ध हुआ, 'आएगा, आएगा, आएगा आने वाला...।' इसकी धुन बनाई थी खेमचंद प्रकाश ने। लेकिन धुन और सुर के तालमेल को लेकर निर्माता-निर्देशकों की राय जुदा थी। इस फिल्म के दो निर्माता थे, एक स्वयं अशोक कुमार और दूसरे थे सावक वाचा। वाचा साहब को धुन पसंद नहीं आई जबकि अशोक कुमार को यह ठीक लगी। असल में सावक वाचा चाहते थे कि गीत इस तरह से गाया जाये कि दूर से आवाज आते-आते पास आती हुई लगे। इसी तरह से संगीत भी बजे। यह फिल्म आजादी से महज दो साल बाद रिलीज हुई थी। सभी जानते हैं कि उन दिनों रिकॉर्डिंग की तकनीक बहुत विकसित नहीं थी। रीटेक भी मुश्किल होता था। बताया जाता है कि कुछ देर चर्चा के बाद आम राय बनी कि माइक को रिकॉर्डिंग रूम के बीचोंबीच रखा जाए और लता एक कोने से गीत को गाते हुए आएंगी। इसी तरह साज भी पहले धीमे-धीमे बजेंगे फिर तेज हो उठेंगे। यह प्रयोग सफल रहा। गाना सुपरहिट रहा। लेकिन जब फिल्म रिलीज हुई तो गीत के रिकार्ड में गायिका के तौर पर 'कामिनी' नाम छपा। बता दें कि कामिनी नाम इस फिल्म की नायिका का था जिसे अभिनीत किया था मधुबाला ने। बताया जाता है कि जब यह गीत हर जगह बजने लगा तो आकाशवाणी के पास श्रोताओं के ढेरों पत्र पहुंचे, यह जानने के लिए कि आखिरकार इस गीत को गाया किसने है। तब गीत रिकॉर्डिंग कंपनी एचएमवी को रेडियो पर यह बताना पड़ा कि इस गीत को लता मंगेशकर ने गाया है। इसके बाद तो लता ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा और आगे चलकर उन्होंने एक से बढ़कर एक गीत गाए। भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' के अलावा उन्होंने अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार जीते। आगे चलकर तो अनेक गीत इसलिए भी बेहतरीन लगने लगे क्योंकि उन्हें लता ने गाया होता था। लता पर तो बहुत लंबी चर्चा हो सकती है, होती भी हैं। किताबें लिखी जा सकती हैं। लता के अलावा इस फिल्म में दो और गायिकाओं के नाम जुड़ते हैं, जिन्हें शायद आज के पाठक कम ही जानते हों। वे दो नाम हैं राजकुमारी दुबे और जोहराबाई अंबालावाली। इस फिल्म में इन दोनों गायिकाओं की भी आवाज है। इस फिल्म के कर्णप्रिय गीतों और फिल्म के बेहतरीन निर्देशन के साथ मधुबाला एवं अशोक कुमार के साथ ही अन्य कलाकारों के शानदार अभिनय से फिल्म हिट रही। यह फिल्म 1949 में रिलीज हुई थी। उस वक्त एक तरफ कवि प्रदीप के गीतों का दौर था तो दूसरी ओर देशभक्ति और विभाजन के दंश जैसी कहानियों से तैयार फिल्मों का। ऐसे में आई फिल्म 'महल।' इसे भारतीय सिनेमा की पहली हॉरर मूवी कहा जाता है। इस फिल्म का निर्देशन कमाल आमरोही ने किया था। यही फिल्म थी जिसके बाद अदाकारा मधुबाला देखते-देखते सुपरस्टार बन गईं।

फिल्म की कहानी शुरू होती है एक शानदार महल से। असल में चारों ओर च र्चा है कि इस महल में प्रेत आत्माओं का प्रकोप है। लेकिन, इन सब बातों में यकीन न करने वाले वकील हरि शंकर (अशोक कुमार) महल को खरीद लेते हैं और वहां शिफ्ट हो जाते हैं। महल का माली हरि शंकर को बताता है कि 40 साल पहले इस महल का पुराना मालिक अपनी प्रेमिका कामिनी के साथ रहता था। एक तूफानी रात में किसी हादसे में उस मालिक की मौत हो जाती है। लेकिन उसने अपनी प्रेमिका से कहा था कि उसका प्रेम कभी विफल नहीं हो सकता और वह फिर जन्म लेकर आएगा। कुछ दिनों बाद कामिनी की भी मौत हो जाती है। माली द्वारा बताई गई इस कहानी को सुनने के बाद हरि शंकर कमरे में जाता है तो हवा के झौंके से एक तस्वीर गिरती है। तस्वीर देखकर वह हैरान रह जाता है क्योंकि उसकी शक्ल हूबहू वकील हरि शंकर जैसी ही है। तभी उसे मधुर स्वर में गाती एक महिला की आवाज सुनाई देती है। वह देखता है कि आवाज किसी कमरे से आ रही है। हरि शंकर वहां जाता है तो महिला वहां से चली जाती है। अगले दिन महल का यह नया मालिक यानी हरि शंकर अपने मित्र से इस घटना को शेयर करता है। दोनों बात कर ही रहे होते हैं कि महिला फिर गुनगुनाती हुई दिखाई देती है। वह गाते-गाते छत पर जाती है। दोनों उसका पीछा करते हैं, लेकिन वह पानी में कूद जाती है। असल में वहां कोई पानी होता ही नहीं। फिल्म के इस मोड़ तक आते-आते दर्शक इसे हॉरर मूवी मानते हैं और फिल्मांकन भी इसी अंदाज में बहुत शानदार हुआ है। आएगा, आएगा, आएगा आने वाला... गीत इसी अंदाज में नेपथ्य में चलता रहता है। कहानी यूं ही आगे बढ़ती है। भटकी हुई आत्मा की तरह आने वाली वह महिला हरि शंकर पर शादी का दबाव डालती है। वह कहती है कि वह माली की बेटी से शादी कर ले और खुद उसकी आत्मा उसमें समा जाएगी। इधर, इस सारे प्रकरण से ध्यान हटाने के लिए हरि शंकर के पिता उसका विवाह रंजना (विजयलक्ष्मी) से कर देते हैं। शंकर कामिनी को भूलने के लिए अपनी पत्नी रंजना के साथ दूर जाने का फैसला करता है। लेकिन अदृश्य सी रहने वाली कामिनी के प्रति उसका मोह कम नहीं होता। दो साल बाद, एक दिन रंजना को पता चलता है कि हर रात उसका पति किसी कामिनी से मिलने जाता है। एक रात रंजना जहर पी लेती है और मरने से पहले पुलिस में हरि शंकर के खिलाफ बयान दे जाती है। मामला कोर्ट में जाता है। कहानी नया मोड़ लेती है। आखिर कौन है कामिनी। क्या सचमुच वह कोई प्रेत आत्मा है या फिर कहानी में कोई अन्य ट्विस्ट है। फिल्म देखेंगे तो आपको कुछ-कुछ याद आएगा। क्योंकि ऐसी ही थीम पर थोड़ा बदलाव के साथ बॉलीवुड में अन्य फिल्में भी बन चुकी हैं।

केदारनाथ फिल्म के 3 साल पूरे

सारा अली खान ने सुशांत सिंह राजपूत को किया याद, लिखा ये भावुक नोट

केदारनाथ हादसे पर बनी फिल्म 'केदारनाथ' ने हाल ही में अपने 3 साल पूरे कर लिए है। इस मौके पर बॉलीवुड अभिनेत्री सारा अली खान ने अपनी पहली फिल्म में उनके सह-कलाकार रहे दिवंगत अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत को याद किया। फिल्म से जुड़ी अपनी यादें और अभिनेता को याद करते हुए सारा ने इंस्टाग्राम पर फिल्म का एक वीडियो शेयर किया। इस वीडियो को शेयर करते हुए अभिनेत्री ने एक भावुक नोट भी लिखा। फिल्म में सुशांत ने मंसूर का किरदार निभाया था। उन्होंने वीडियो पोस्ट करते हुए लिखा कि वह आज मंसूर को मिस कर रही हैं। साथ ही फिल्म की सफलता का श्रेय उन्हें देते हुए बताया कि यह उनके लिए हमेशा खास रहेगा। अंत में सारा ने फिल्म के निर्देशक और निर्माताओं को धन्यवाद भी दिया।

अपने पोस्ट को शेयर करते हुए सारा ने लिखा, '3 साल पहले मेरा सबसे बड़ा सपना सच हुआ। मैं एक अभिनेत्री बन गई और मेरी पहली और सबसे खास फिल्म रिलीज हुई। मुझे नहीं पता कि मैं कभी यह समझा पाऊंगी कि केदारनाथ मेरे लिए कितनी मायने रखती है- वो जगह, वो फिल्म, यादें, सब। लेकिन आज मैं वास्तव में अपने मंसूर को याद कर रही हूं।'

उन्होंने आगे लिखा, 'सुशांत के अटूट समर्थन, निस्वार्थ मदद, निरंतर मार्गदर्शन और दयालु सलाह के कारण ही मुक्कू आपके दिल तक पहुंचने में सक्षम थी। केदारनाथ से एंड्रोमेडा तक। आपको हमेशा याद करूंगी सुशांत। मुझ पर विश्वास करने के लिए रॉनी स्क्रूवाला, अभिषेक कपूर का धन्यवाद।

इससे पहले फिल्म के निर्माता अभिषेक कपूर ने भी फिल्म के तीन साल पूरे होने एक पोस्ट शेयर किया। उन्होंने अपने पोस्ट के जरिए फिल्म की पूरी कास्ट और सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया। वर्कफ्रंट की बात करें तो सारा जल्द ही फिल्म 'अतरंगी रे' में नजर आने वाली हैं। इस फिल्म में उनके साथ बॉलीवुड अभिनेता अक्षय कुमार और धनुष भी मुख्य भूमिका निभाते नजर आएंगे। यह फिल्म 24 दिसंबर को डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर स्ट्रीम की जाएगी।

अगले साल 20 मई को रिलीज होगी रानी मुखर्जी की फिल्म

यह एक फीचर फिल्म है, जिसे अगले साल 20 मई को रिलीज किया जाएगा। इस बारे में एम्मे एंटरटेनमेंट ने अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडल पर एक पोस्ट शेयर कर जानकारी दी।

बॉलीवुड की मशहूर अदाकारा रानी मखर्जी की आने वाली फिल्म मिसेज चटर्जी वर्सेज नॉर्वे की रिलीज डेट सामने आ चुकी है। यह एक फीचर फिल्म है, जिसे अगले साल यानी 2022 में 20 मई को रिलीज किया जाएगा। इस बारे में एम्मे एंटरटेनमेंट ने अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडल पर एक पोस्ट शेयर कर जानकारी दी। फिल्म मिसेज चटर्जी वर्सेज नॉर्वे एक सच्ची घटना पर आधारित है। इस घटना ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बच्चों और मानवाधिकरों को हिलाकर रख दिया है। खास बात यह है कि कोरोना काल में इस फिल्म के पूरे अंतरराष्ट्रीय शेड्यूल को बायो बबल में शूट किया गया था। साथ ही एस्टोनिया और भारत के कुछ हिस्सों में फिल्म को बड़े पैमाने पर शूट किया गया है। इस बारे में जानकारी देते हुए एम्मे एंटरटेनमेंट ने अपने ट्विटर पोस्ट पर लिखा, 'अपने सामने आने वाली सभी बाधाओं से लड़कर इस मां को अपने बच्चे के लिए मजबूत होना चाहिए। एक सच्ची कहानी से प्रेरित रानी मुखर्जी स्टारर मिसेज चटर्जी वर्सेज नॉर्वे शुक्रवार 20 मई, 2022 में सिनेमाघरों में रिलीज होगी।' वर्कफ्रंट की बात करें तो रानी मुखर्जी ने 3 साल के लंबे अंतराल के बाद हाल ही में रिलीज हुई फिल्म 'बंटी और बबली 2' से वापसी की थी। हालांकि, यह फिल्म दर्शकों पर कोई खास असर नहीं दिखा पाई। ऐसे में अब यह फिल्म रानी के एक्टिंग करियर के लिए काफी अहम मानी जा रही है।

मा. शिवराजसिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

मा. नरोत्तम मिश्रा
गृह मंत्री, मध्यप्रदेश

मा. भूपेंद्र सिंह
नगर विकास मंत्री, मध्यप्रदेश

विलौआ नगरपरिषद समस्त विलौआ नगर वासियों को दीपावली की शुभकामनाएं देते हुए यह अपील करती है...

1. स्वस्थ रहने के लिए स्वच्छता का ध्यान रखे साथ ही कचड़ा नगर परिषद विलौआ की कचड़ा लेने आने बाली गाड़ी मैं डाले।
2. डेंगू बीमारी डेंगू मच्छरों के काटने से होती है इसलिए डेंगू विमारी से बचने के लिए , आस पास गदंगी ना फैलाये, और ना आस पास गंदे पानी को एकत्रित होने दे। क्योकि मच्छरों पनपने का ऐसे स्थान बहुत उचित होते है ।
3. कोरोनॉ से बचने के लिए वैक्सीन अवश्य लगवाए जिन्होंने प्रथम डोज लगवा लिया है बो दूसरा डोज अवश्य लगवाये , जिनको प्रथम डोज नही लगा है बो अपने आधार कार्ड को लेकर अस्पताल और बैक्सीनेशन शिविर मैं जाकर रजिस्ट्रेशन कराए और तुरंत वैक्सीन लगवाये। जिससे आप भी सुरक्षित रहे साथ मैं माता पिता और परिवार को सुरक्षित रखे।
4. विलौआ नगर परिषद हमेशा आपकी सेवा मैं तत्यपर्य है आप भी नगर परिषद का सहयोग करे जिससे विलौआ नगर परिषद का विकास हो सके।
5. पेड़ पौधों को अवश्य लगाए।
6.करों, नलों के विल का भुगतान अवश्य करे ।

विश्राम सिंह बघेल
प्रशासक एवं नायब तहसीलदार विलौआ

कौशलेंद्र विक्रम सिंह, कलेक्टर ग्वालियर

पीयूष श्रीवास्तव
सीएमओ पीछोर नगर परिषद

मा. शिवराजसिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

मा. नरोत्तम मिश्रा
गृह मंत्री, मध्यप्रदेश

मा. भूपेंद्र सिंह
नगर विकास मंत्री, मध्यप्रदेश

प्रशासक प्रदीप शर्मा (एसडीएम)
डबरा नगर पालिका एवं डबरा

कौशलेंद्र विक्रम सिंह
कलेक्टर, ग्वालियर

महेश पुरोहित
सीएमओ डबरा नगर पालिका

डबरा नगर पालिका समस्त डबरा नगर वासियों को दीपावली की शुभकामनाएं देते हुए यह अपील करती है...

1. स्वस्थ रहने के लिए स्वच्छता का ध्यान रखे साथ ही कचड़ा नगर परिषद की कचरा लेने आने बाली गाड़ी में डाले।

2. डेंगू बीमारी डेंगू मच्छरों के काटने से होती है इसलिए डेंगू विमारी से बचने के लिए , आस पास गदंगी ना फैलाये, और ना आस पास गंदे पानी को एकत्रित होने दे। क्योकि मच्छरों पनपने का ऐसे स्थान बहुत उचित होते है ।

3. कोरोना से बचने के लिए वैक्सीन अवश्य लगवाए जिन्होंने प्रथम डोज लगवा लिया है वो दूसरा डोज अवश्य लगवाये, जिनको प्रथम डोज नही लगा है वो अपने आधार कार्ड को लेकर अस्पताल और वैक्सीनेशन शिविर मैं जाकर रजिस्ट्रेशन कराए और तुरंत वैक्सीन लगवाये। जिससे आप भी सुरक्षित रहे साथ मैं माता पिता और परिवार को सुरक्षित रखे।

4. पिछोर नगर परिषद हमेशा आपकी सेवा मैं तत्यपर्य है आप भी नगर परिषद का सहयोग करे जिससे पीछोर नगर परिषद का विकाश हो सके।

5. पेड़ पौधों को अवश्य लगाएं।

6. करों, नलों के विल का भुगतान अवश्य करें ।